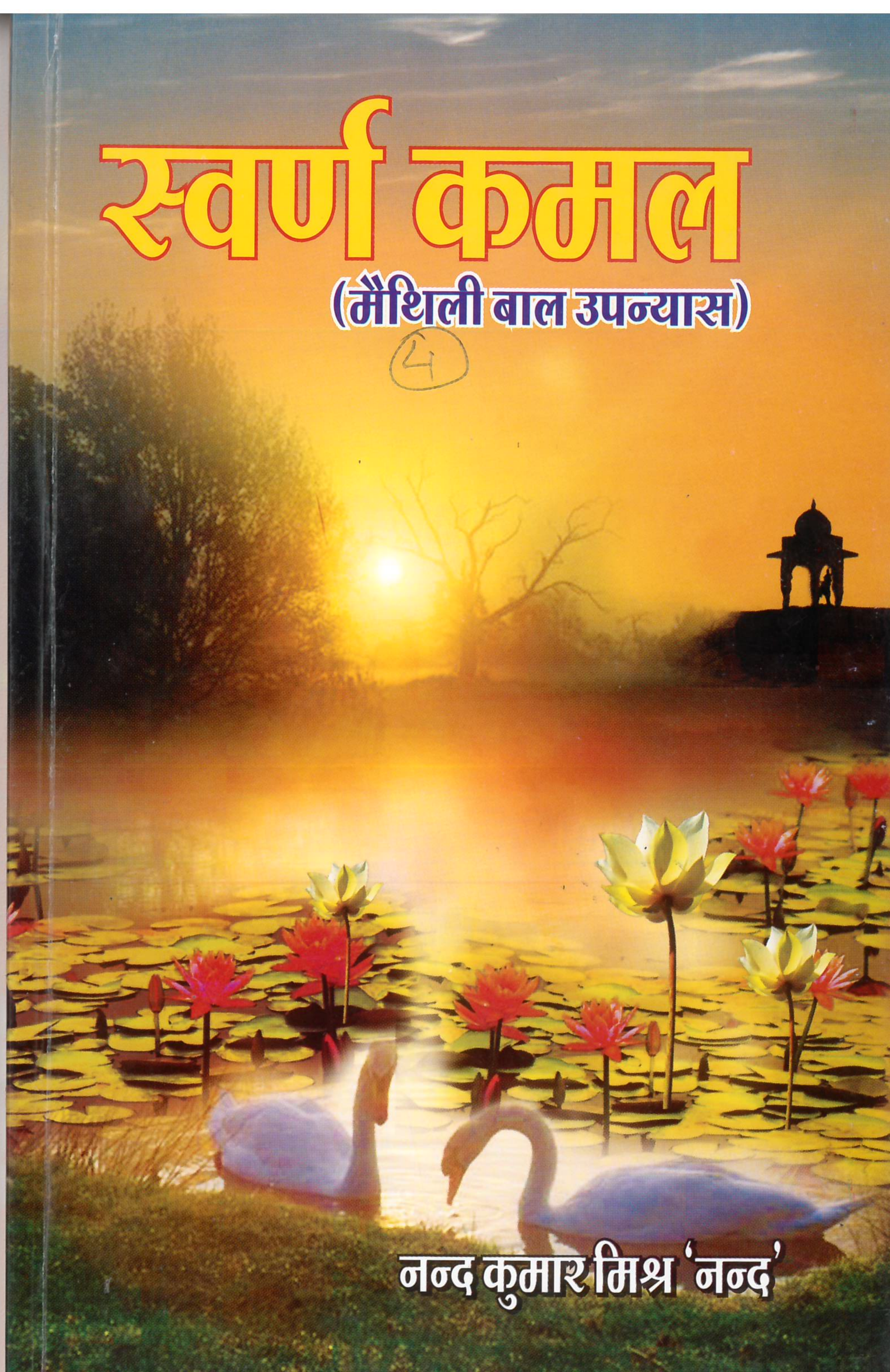

स्वर्ण कमल
(मैथिली बाल उपन्यास)
नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

स्वर्ण-कमल

(मैथिली बाल उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

प्रकाशक

गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उफरदाहा

(दरभंगा)

मो.-8986261756

SWARN KAMAL : A Novel for Children in Maithili by **Sri Nand Kumar Mishra 'Nand'**, Gosauni Baidyanath Smriti Manch, Uphardaha, Darbhanga, 2019, **₹ 150/-**

प्रकाशक : **गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच**
उफरदाहा, जिला– दरभंगा
पिन– 847233 (बिहार)

प्रकाशन वर्ष : 2019

पुस्तक प्राप्ति स्थान : विद्यार्थी पुस्तक भंडार
सकरी, दरभंगा

सहयोग राशि : **₹ 150.00 (एक सय पचास टाका) मात्र**

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

समर्पण



पूज्यवर पिताजी **स्व. बैद्यनाथ मिश्र**
एवं
पूजनीया माताजी **स्व. गोसाउनि देवीक**
चरण कमलमे
सादर

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

मैथिली बाल उपन्यास : स्वर्ण-कमल

मैथिलीमे बाल उपन्यास लेखन-प्रकाशनक संख्या एखनो धरि आङुरे पर गनबा योग्य अछि। स्वभावतः एहि विधाक संवर्द्धन दिस लेखक लोकनिक ध्यान जायब आवश्यक छनि। श्री नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' रचित 'स्वर्ण-कमल' एहि दिशामे एक गोट निष्कलुष प्रयास अछि जाहिमे लोक कथात्मक शैलीमे एक गोट राजकुमारक प्रति चलैत पारिवारिक षड्यंत्रक विरुद्ध ओकर अभियान आ साहस ओ वीरताक बलेँ ओहि षड्यंत्रकेँ विफल करबाक कथा अनुगुम्फित भेल अछि। सरल-सहज भाषा-शैली, औत्सुक्य ओ जिज्ञासा निर्वहण, नेतृत्वक विकास, सामाजिक ओ नैतिक मूल्यक स्थापना, मनोरंजकता आदि गुणसँ ओत-प्रोत ई बाल-उपन्यास आधुनिक मैथिली साहित्यमे 'श्री नन्द'जीक अमूल्य ओ उल्लेखनीय योगदान थिकनि।

मैथिलीमे प्रथम बाल उपन्यास लेखनक श्रेय जाइत छनि सव्यसाची अभिधाने प्रख्यात स्वनामधन्य वरिष्ठ साहित्यकार डा. रामदेव झाकेँ जनिका द्वारा पूर्व शताब्दीक छठम दशकक अवसान होइत-होइत एक गोट सुनियोजित दीर्घ बाल कथाक रचना 'इजोती रानी' शीर्षसँ भेल। सुनियोजित एहि हेतुएँ जे एहि बालकथाक रचना खास कऽ बाल-पाठकक लेल कयल गेल छल आ लेखक सम्पूर्ण कथाकेँ संयुक्ताक्षरसँ रहित बनौने छलाह। हिनक ई दीर्घ कथा 'रोचक बाल कथा'क रूपमे 1965 इ.क बटुक-विशेषांकमे प्रकाशित भेल तथा 1967 मे एकर पुस्तकाकार संस्करण सेहो बहरायल। दीर्घ बाल कथाक हिनक ई अद्भुत प्रयोग क्रमशः मैथिलीक प्रथम बाल-उपन्यासक रूपमे प्रख्यात भेल। मैथिली बाल उपन्यासक इतिहास एही 'इजोती रानी'सँ प्रारम्भ होइत अछि, तेँ कहल जा सकैछ जे मैथिलीमे बाल उपन्यासक प्रयोग स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कालक अभिनव प्रयोग थिक।

'इजोती रानी'क कथा लोक कथात्मक अछि जकर मुख्य नायिका इजोती रानी एकटा एहन दिव्य कन्याक रूपमे चित्रित भेलीह अछि जनिका शरीरसँ ततेक ने इजोत बहराइत छलनि जे ताहीसँ बारह योजन धरि प्रकाशित भऽ जाइत छलैक ।

कथानायक थिकाह एक गोट रुसना राजकुमार जे बात-बातमे रूसि रहैत छथि । एहि रुसना राजकुमारक स्वभाव पर एक दिन कटाक्ष करैत हिनक भाउजि हुनका कहि दैत छथिन जे जँ एहन मानवला छी तँ इजोती रानीसँ विवाह कऽ ने लिअऽ । राजकुमार लगले इजोती रानीक खोजमे विदा भऽ जाइत छथि आ अन्ततः हुनक अन्वेषण कऽ हुनका संग विवाह करबामे सफल होइत छथि । एहि अन्वेषणक क्रममे हुनका विभिन्न प्रकारक परिवेशक समक्ष होअऽ पड़ैत छनि जे उपन्यासक मुख्य वर्ण्य थिक । मातृभाषाक उन्नयनकेँ दृष्टिपथ पर राखि संयुक्ताक्षर रहित रोचक बालकथाक निर्माण कऽ बाल पाठकक मनोमस्तिष्कमे अपन मातृभाषाक प्रति प्रतिबद्धता स्थिर करब लेखकक महत्त्वपूर्ण उद्‌देश्य छनि ।

इजोती रानीक बाद 'साहसी चिन्टू' नामक बाल उपन्यास 1974 ई. मे 'मिथिला मिहिर'मे धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित भेल छल । एकर रचयिता छलीह श्रीमती गायत्री किरण । ई उपन्यास जासूसी प्रकृतिक अछि । एहिमे कथानायक अछि चिन्टू नामक साहसी बालक । यद्यपि चिन्टू बेसी पढ़ल-लिखल नहि अछि तथापि ओकरामे साहसिक कार्य सम्पादित करबाक बेस ऊहि छैक । ओ डाक्टर ललबानी, कैप्टन जगवीर, सेठ मूंगाराय ओ हुनक तीन गोट नोकरक संग नेपाल तराइक क्षेत्र गुमलाक जंगलमे पन्द्रह करोड़क हीरा, मोती, सोना एवं टाका-पैसाक खोजमे ट्रक पर सवार भऽ दरभंगासँ विदा होइत अछि । जयनगर जाय ओ भाड़ा पर पन्द्रह गोट मजदूर सेहो संग लऽ लैत अछि । गुमलाक भयानक जंगलमे पहुँचलाक बाद ओ खजानाक खोज शुरू करैत अछि आ चिह्नित स्थल पर पहुँचि खाधि कौड़ैत अछि । एही क्रममे ओकरा ज्ञात होइत छैक जे मजदूर सभ डकैत गिरोहक थिक जकर सरदार जंग बहादुर जंगलमे रहि कऽ डकैती करैत छल । आपसी फूटक कारणेँ जंगबहादुर नामदेवक गिरोहसँ फराक भऽ गेल रहैत अछि ।

एही नामदेवसँ चिन्टूकेँ खजानाक स्थलक पता चलैत छैक । खजानाक पता लगला पर विभिन्न डकैत दल ओकरा लुटबाक हेतु परस्पर युद्ध करऽ लगैत अछि । जंगलक जीवा-जन्तु आतंकित भऽ उठैत अछि । नामदेवक जादूसँ नर-कंकाल सभ जंगलमे नृत्य करऽ लगैत अछि जाहिसँ भयक वातावरण बनैत छैक । अन्ततः चिन्टू अपन जासूसी विद्या ओ युद्ध-कौशलसँ खजाना हथिअयबामे सफल होइत अछि । आपस आबि कऽ ओ सभटा धन जिलाधिकारी लग जमा कऽ दैत अछि । जिलाधिकारी ओकर वीरता पर प्रसन्न भऽ ओकरा विद्याध्ययनक हेतु छात्रवृत्ति देबाक घोषणा करैत छथि ।

एहि तरहेँ एहि बाल-उपन्यासमे नायक बालकमे असीम धैर्य ओ साहसक चित्रणपूर्वक लेखक ओकरामे केहनो परिस्थितिमे नेतृत्व करबाक क्षमताक निदर्शन प्रस्तुत कऽ नेना लोकनिक नेतृत्व क्षमताकेँ प्रेरित करबामे सफल भेलाह अछि ।

एहि उपन्यासमे स्थानीयताक वर्णन सभ अत्यन्त उत्कृष्ट अछि । गाम-घर, बाध-बोन, जंगल-झाड़, खेत-पथार, नदी-पोखरि आदिक वर्णन आह्लादक ओ बाल-मनक हेतु आकर्षक अछि । उपन्यासकार सामाजिक जीवनक विविध समस्या सभ यथा चोरी-डकैती, आतंक, लूट-पाट, अनाचार-अत्याचार, तंत्र-मंत्र, भूत-प्रेत आदिसँ बाल मनकेँ परिचित करयबाक चेष्टा कयलनि अछि तथा दृढ़ संकल्प-शक्तिसँ तकर निवारणक उत्साह सृजित कयलनि अछि ।

अवश्ये ई बाल-उपन्यास पुस्तकाकार नहि भऽ सकल अछि जकर कारणेँ सामान्य पाठकक हेतु ई अनधीते रहि गेल अछि । पात्राधिक्य ओ घटना सभक ओझराहटिक कारणे एहि उपन्यासक रसास्वादन नेना-भुटकाक हेतु कठिन कहल जा सकैत अछि ।

मैथिली बाल-उपन्यासक रूपमे जे अग्रिम कृति प्रख्यात भेल से थिक डा. व्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म' रचित 'भारतीक बिलाड़ि' उपन्यास । ईहो उपन्यास 1978 ई. क 'मिथिला मिहिर'मे धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित भेल छल । पछाति 2005 मे एकर पुस्तकाकार संस्करण सेहो बहरायल जकर सम्पादकद्वय थिकाह क्रमशः डा. प्रेम शंकर सिंह ओ डा. प्रमोद कुमार

पाण्डेय । डा. प्रेमशंकर सिंह प्रतिपाद्य विषयक गांभीर्यक आधार पर एकरा बाल उपन्यासक रूपमे स्वीकार करबासँ असहमति व्यक्त कयने छथि ।

तथापि मैथिलीक आलोचक ओ इतिहासकार लोकनि 'भारतीक बिलाड़ि'केँ बाल-उपन्यासेक रूपमे परिगणित कयलनि अछि । प्रसिद्ध इतिहासकार डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' एहि उपन्यासक प्रसंग कहने छथि जे ''भारतीक बिलाड़ि प्राय: मैथिलीक प्रथम उल्लेखनीय बाल उपन्यास थिक, जाहिमे मणिपद्म एहन कल्पनापूर्ण कथालोकक सृष्टि कयलैन्हि अछि जे सरिपहुँ मनोरंजक भेल अछि । छोटका बाबूक वैज्ञानिक आविष्कारक फलस्वरूप भारतीक बिलाड़ि उर्द्धव चेतना-सम्पन्न भए मनुष्य जकाँ बाजय लगैछ । पाछाँ बाबू मिथिला-मोरंग-सीमाक्षेत्र मे जाए ओहि बिलाड़िक सहायतासँ नरभक्षी कनही बाघिन ओ पोसल हिंसक गोहिक वध तथा हत्यारा मनुक्खक दमन करैत अछि । एहि प्रक्रियामे रानी सुगन्धमयी ओ हुनक नुकायल खजानाक भेद खुजैत अछि एवं अनेक चमत्कारपूर्ण रहस्यक उद्घाटन होइत अछि । पाछाँ ओहि बिलाड़िकेँ संग लए बाबू काठमाण्डू होइत जापान धरिक यात्रा कए अनेक चमत्कारपूर्ण अनुभव प्राप्त करैत छथि । भारतीक बिलाड़ि मंगल ग्रह धरिक यात्रा कए अबैत अछि एवं अन्तमे सार्वभौमिक विश्वविद्यालयक कुलपति बनाओल जाइत अछि । एहि प्रकारेँ ज्ञान-विज्ञान, तन्त्र-मन्त्र, इतिहास-भूगोल, जासूसी-तिलस्मी आदि अनेक रहस्य-रोमांचपूर्ण सामग्रीक रोचक सन्निवेश कए मणिपद्म भारतीक बिलाड़िक रचना कयने छथि, जकरा बाल साहित्यक दृष्टिएँ मैथिलीमे अपूर्व कहल जाए सकैत अछि ।''

डा. बाल गोविन्द झा 'व्यथित' अपन इतिहास ग्रन्थमे डा. श्रीशक मतक समर्थन करैत 'भारतीक बिलाड़ि'केँ मनोरंजनसँ सराबोर, रोचक सामग्रीसँ परिपूर्ण श्रेष्ठ बाल उपन्यासक संज्ञा प्रदान कयने छथि । डा. दमन कुमार झा सेहो एकरा बाल उपन्यासेक श्रेणीमे परिगणित कयने छथि ।

डा. देवकान्त झा भारतीक बिलाड़िक प्रसंग अभिमत व्यक्त करैत कहने छथि जे ''Bharati ka Bilari is Manipdma's first child novel. Chhotaka Babu is a child who makes scientific

innovations and experiments with a pussy cat blessed with human speech. The playful boy takes many adventures assisted by he gifted cat, creates miracles and unravels mysteries. He travels widely and makes an aerial survey of mars. At long last the spirited child is appointed as the vice-chancellor of a cosmopolitan University. Thus the novel is a fine experiment with the energy and aptitude of a child. It is a good ramance in the annals of child literature in Maithili."

एतावता ई सिद्ध अछि जे मणिपद्मजीक 'भारतीक बिलाड़ि' मैथिलीक श्रेष्ठ बाल-उपन्यास थिक जे किशोर वर्गक कल्पनाशील मस्तिष्ककेँ ध्यानमे राखि लिखल गेल अछि । ई उपन्यास भाषाक सरलता ओ सहजता, पात्रानुकूल भाषा-प्रयोग, प्रभावोत्पादकता, औत्सुक्य, रोचकता, घटनाक चमत्कार, वैज्ञानिकताक संग आध्यात्मिक पुट आदिक कारणे सर्वथा आकर्षक अछि ।

वर्त्तमान दशकसँ पूर्व धरि मैथिलीक मौलिक बाल उपन्यास मध्य उपरिलिखित तीने गोट बाल उपन्यास प्रकाशमे आयल छल आ मैथिलीक ई विधा उपेक्षिते जकाँ रहल । ओना समय-समय पर किछु बाल-उपन्यास आन भाषासँ अनूदित भऽ प्रकाशित भेटैत अछि यथा बटुकमे 1975 मे प्रकाशित 'मंगल ग्रहक राजकन्या', प्रो. सुरेश्वर झा द्वारा अनूदित दुइ गोट बाल उपन्यास क्रमश: 'अन्तरिक्षमे विस्फोट' ओ 'जंगलमे एक राति', सियाराम झा 'सरस' द्वारा बंगलासँ अनूदित बाल उपन्यास 'चन्नाक पहाड़' तथा प्रो. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' द्वारा रवीन्द्रनाथक बाल साहित्य मध्य अनूदित बाल उपन्यास -'राजर्षि'क अंश ।

मुदा आब एहि विधाक संवर्द्धनक दिशामे मैथिलीक रचनाकार लोकनिक ध्यान गेलनि अछि । वर्त्तमान दशकमे प्रकाशित चारि गोट मौलिक बाल उपन्यास एखन धरि हमरा दृष्टिपथ पर आयल अछि क्रमश: स्वनामधन्य डॉ. रामदेव झाक कृति 'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' (2013), डॉ. अमलेन्दु शेखर पाठकक कृति 'लालगाछी' (2014), डॉ. अजीत मिश्रक कृति 'जेहने करनी तेहने भरनी' (2015) आ डॉ. चन्द्रमणि झाक कृति 'गुलरी' (2018) । प्रस्तुत बाल उपन्यास 'स्वर्ण

कमल' सम्प्रति प्रकाशन पथ पर अछि । प्रसन्नताक विषय ई थिक जे पूर्व कथित चारू उपन्यासमे सँ प्रथम दुइ साहित्य अकादमीक बाल पुरस्कार प्रदानपूर्वक सम्मानित कयल जा चुकल अछि आ मैथिलीक एहि विधाक गौरव-ग्रन्थक रूपमे स्थापित भऽ चुकल अछि ।

'हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी' रतनपुरक राजकुमार शत्रुजितक अभियान-कथा थिक जे समस्त औपन्यासिक तत्वसँ संबलित रहितहुँ ततेक सरल-सहज ओ रोचक रूपेँ प्रस्तुत भेल अछि जे नहि केवल बाल-मनहिकेँ आकर्षित करबामे सक्षम अछि अपितु सभ वर्गक पाठककेँ सहजहिँ एकटा भव्य कल्पनालोकक विचरण करयबामे समर्थ सिद्ध अछि ।

उपन्यासक नायक अछि तँ अत्यन्त टिरुसाह मुदा संगहि बेस उदार ओ उत्साही प्रकृति सेहो अछि । ओ जाहि बातक ईर धऽ लैत अछि तकरा पूर्ण करबाक हेतु सर्वथा दत्तचित्त भऽ जाइत अछि । बाल सुलभ चंचलताक कारणे ओ अपन भाउजिसँ निरन्तर अड़ारि ठनने रहैत अछि जाहि पर कुपित भऽ कऽ ओकर माता ओकरा फुलकेसरि कुमरि सन कन्यासँ विवाह कऽ लेबाक चुनौती दऽ दैत छथिन आ ओ ओहि कुमरिक खोजमे विदा भऽ जाइत अछि । राजकुमारक फुलकेसरि कुमरिक अन्वेषण ओ ओकरा संग विवाह कऽ अपन राजधानी घुमि अयबा धरिक कथाकेँ अत्यन्त विस्तारक संग एहि उपन्यासमे अनुगुम्फित कयल गेल अछि ।

एहि उपन्यासक अधिकांश पात्र लोकजगतक आदर्श पात्र सभ अछि जे राजकुमारक अभियानमे सहायक होइत अछि । रस्तामे ओकरा एक गोट कानूनिसँ भेट होइत छैक जे निर्लोभ रहि ओकर सहायता करैत छैक । तहिना जादूगर, महाजन, केसरपुर राजक बुढ़िया आदि सेहो राजकुमार सहायक होइत छैक आ ओ फुलकेसरि कुमरिक राजधानी पहुँचि जाइत अछि । ओकरा ज्ञात होइत छैक जे ई राजकुमारी कुरूप एवं अपाहिज छैक । तथापि राजकुमार ओकरासँ विवाह करबाक हेतु तत्पर भऽ जाइत अछि । फुलकेसरि कुमरिक पिता विवाहसँ पूर्व हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी अनबाक शर्त्त रखैत छथिन । सातटा नदी, सातटा जंगल आ सातटा पहाड़केँ पार कऽ अन्ततः राजकुमार हँसनी पान आ बजन्ता सुपारी अनबामे सफल भऽ जाइत अछि जकर प्रयोगसँ

फुलकेसरि कुमरि अत्यन्त सौन्दर्यवती राजकुमारीमे परिणत भऽ जाइत छथि आ हुनक विवाह राजकुमारक संग होइत छनि । एही क्रममे राजकुमार कानूनिक बेटा ओ बुढ़ियाक पोताक उद्धार कऽ लैत अछि आ फुलकेसरि कुमरिक पितासँ आधा राज सेहो प्राप्त कऽ लैत अछि । मुदा ओ ई राज ओही ठामक प्रजाकेँ समर्पित कऽ अपन औदार्यक परिचय दैत अछि । अभियान पथक अनुभवसँ राजकुमारकेँ व्यावहारिक ज्ञान होइत छैक आ ओ अपन इराह स्वभावकेँ छोड़ि संयत भऽ जाइत अछि आ पुलकेसरि कुमरिक संग अपन राज प्रत्यागत भऽ अपन भाउजिसँ क्षमायाचना करैत अछि । कथाक सुखद अन्त होइत छैक ।

वर्णनात्मकता प्रधान एहि उपन्यासमे समंजित घटना-शृंखला, रहस्य, रोमांच ओ औत्सुक्य आदिक अत्यन्त चारुतापूर्ण निर्वाह भेल अछि जाहिसँ बाल मनक हेतु अत्यन्त आकर्षक अछि । नेना लोकनिमे साहस, धैर्य, इमानदारी, दयालुता, परोपकारिता आदि गुणक प्रति आकर्षण उत्पन्न कराय ऊच्च कोटिक मानवीयताक शिक्षण एकर अन्यतम उद्देश्य अछि । लोक शैलीक प्रयोग एकर कथानकक सहजता-सरलता ओ रमणीयताक नियामक अछि ।

'लालगाछी' बाल उपन्यासमे घटनाक्रम एक गोट भुताहि गाछीक परितः आघूर्णित होइत अछि आ एहि रचनाक माध्यमे लेखकक मूल उद्देश्य थिकनि धिया-पुताक मनसँ भूत-प्रेतक अवधारणाकेँ समाप्त करब । लोकजगतमे व्याप्त भूत-प्रेतक प्रति जे एकटा अन्धविश्वास पसरल अछि, तकर उच्छेद कय नेनालोकनिकेँ निडर आ साहसी बनबाक शिक्षा प्रदान करबामे ई उपन्यास सर्वथा सफल भेल अछि । गाम-घरक बोली-वाणीक प्रयोग एहि उपन्यासक वैशिष्ट्य थिक । मिथिलाक दर्शनीय स्थल, गौरवपूर्ण इतिहास, सामाजिक समरसता तथा राष्ट्रभक्तिसँ परिचय कराय लेखक एहि उपन्यासक माध्यमे लोकशिक्षणक सुष्ठु प्रयोग कयलनि अछि । एहि क्रममे अयाची ओ शंकरक कथा, खुदनेश्वरधामक कथा, सीताक अवतरणक कथा, विद्यापतिक अवसानक कथा, राणा प्रताप, भगत सिंह, खुदीराम बोस, चन्द्रशेखर आजाद आदिक चर्चाक संगहि राष्ट्रभक्ति गीत सभसँ ई उपन्यास संपुटित अछि । पशु-पक्षी ओ गाछ-बिरीछक महत्त्वक वर्णन द्वारा नेनालोकनिकेँ पर्यावरण संरक्षणक प्रति सेहो सचेत

करबाक संकेत एहि उपन्यासमे भेटैत अछि ।

लालगाछी एक गोट आमक गाछी थिक जे एकछाहे सिनुरिया आमक गाछसँ भरल-पुरल अछि आ ग्रामीण लोकनि आमक मासमे ओकर ओगरबाही करैत छथि तथ वर्ष भरि ओ विभिन्न गतिविधिक केन्द्र बनल रहैत अछि । मुदा किछु दिनक बाद ई अफवाह उड़ा देल जाइत छैक जे ओहि गाछीमे भूत-प्रेत, बाघ, चीता, भालु आदिक वास भऽ गेलैक अछि । फलस्वरूप लोक ओहि गाछी दऽ कऽ नहि केवल अबरजात छोड़ि दैत अछि अपितु ओकरा भुताहि मानि ओकरासँ फराके रहऽ चाहैत अछि । एहने समय अमोल नामक एक गोट साहसी बालकक पदार्पण गाममे होइत छैक । ओ गाछीमे अपन बालमण्डलीक संग जाय ओहि ठामक गतिविधि सभक सूक्ष्म पर्यवेक्षण करैत अछि आ एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत अछि जे गाछीमे भूत-प्रेत ओ जंगली जानवर सभक वासक कथा फूसि थिक आ गाछी कोनो अपराधी गिरोहक केन्द्र बनि गेल अछि जे भूत-प्रेत ओ जंगली जानवरक वेश धऽ लोकके डेरबैत अछि तथा लालगाछीके कोनो अवैध व्यापारक केन्द्रक रूपमे विकसित कऽ चुकल अछि । अन्ततः अमोल आ ओकर बालमण्डली मादक द्रव्यक व्यापारी अपराधी सभके पकड़यबामे सफल होइत अछि आ प्रशासन दिससँ अमोलक नाम वीर बालकक रूपमे केन्द्र सरकारके अनुशंसित कयल जाइत छैक । स्वतंत्रता दिवसक अवसर पर अमोलके वीरता सम्मान प्रदान कऽ प्रोत्साहित कयल जाइत छैक । वस्तुतः नेना लोकनिमे तर्क-शक्ति ओ नेतृत्व क्षमताक विकासक तानी-भरनीसँ ओत-प्रोत ई बाल-उपन्यास नेना लोकनिक ज्ञानवर्द्धनक संगहि मनोरंजनक दृष्टिञे उत्कृष्ट कोटिक अछि ।

'जेहने करनी तेहने भरनी' बाल उपन्यासमे एकटा कठपुतरीक क्रिया-कलापक माध्यमे अत्यन्त रोचक कथाक उपस्थापन भेल अछि जे बाल-मनमे निरन्तर औत्सुक्य तँ उत्पन्न करितहिँ अछि, बेस मनोरंजको अछि । लोककथाक सरणि पर रचित एकर वस्तु-विन्यास रहस्य, रोमांच ओ संघर्षसँ भरल अछि तथा पाठकके बन्हने रखबाक क्षमता रखैत अछि । एहिमे मिथिलाक कतोक लोक सांस्कृतिक तत्त्व सहजहिँ अवक्षेपित भेल अछि । लोकोक्ति प्रयोग ओ सरल-सहज भाषा एकर अन्यतम विशिष्टता अछि। बात उपन्यासक क्षेत्रमे लेखकक ई काज सराहनीय कहल जा सकैछ ।

एहि उपन्यासमे धनुष नामक बड़ही अर्थाभावमे भूखसँ पीड़ित अछि । ओकरामे कर्म-निष्ठाक जागरण होइत छैक । ओ एकटा कठपुतरीक निर्माण करैत अछि । कठपुतरी मनुष्यक भाषामे बाजऽ लगैत छैक । ओ एकरा भूत-प्रेतक प्रकोप मानि झाड़-फूकमे लागि जाइत अछि । कठपुतरी ओकर अन्धविश्वासक प्रतिकार करैत छैक । अपन निर्माताक प्रति आत्यन्तिक दरेगसँ सम्पन्न कठपुतरी ओकर व्यावसायिक जीवनक अंग बनि ओकर सहायता करय चाहैत छैक । ओ पढ़ऽ चाहैत अछि आ ऊच्च शिक्षा प्राप्त कऽ पीड़ित मानवताक सेवा करऽ चाहैत अछि। संयोगसँ ओकरा स्कूल जयबाक अवसर भेटि जाइत छैक । स्कूलमे ओ अपन स्मरण-शक्ति ओ विद्यानुराग कारणे सभक सम्मानक पात्र बनि जाइत अछि । खेल-कूदमे से पारंगत होयबाक कारणे ओकरा सर्वश्रेष्ठ खेलाड़िक पुरस्कार प्राप्त होइत छैक । मुदा किछु नेना सभ ओकरासँ ईर्ष्या करऽ लगैत छैक आ ओकर पीटय चाहैत छैक । कठपुतरी एकटा नेना पर तेना प्रहार करैत अछि जे ओकरा कान्हसँ खून बहय लगैत छैक । डरेँ ओ पड़ा जाइत अछि । जाहि गाममे ओ पड़ा कऽ जाइत अछि ततऽ भयक कारणे ओ झूठ बाजि दैत अछि जाहिसँ ओकर कान सूप सन भऽ जाइत छैक । ओकर झूठ पकड़ल जाइत छैक आ ओ सत्य बजबाक हेतु विवश भऽ जाइत अछि । अन्ततः ओ कठपुतरी यज्ञक माध्यमे पूर्ण मानवमे रूपान्तरित भऽ जाइत अछि आ प्रतिज्ञा करैत अछि जे 'आजुक बाद हम सम्पूर्ण समाजक संग पुरबाक सप्पत खाइत छी, आजुक बाद हमरासँ ककरो अहित नहि होयत, से दृढ़तापूर्वक कहैत छी ।' एहि तरहेँ लेखक कठपुतरीक माध्यमे नेना सभके कर्त्तव्यक प्रति निष्ठा, अन्धविश्वास प्रति जुगुप्सा, माता-पिताक प्रति अविचल स्नेह, अनुशासनक प्रति प्रतिबद्धता, ऊच्च शिक्षाक हेतु निरन्तर प्रयास, असत्य संभाषणसँ दूर रहबाक इच्छाशक्ति, नेतृत्वक गुणक विकासक अभिलाषाक संगहि मानव मात्रक हितचिन्तनक दिशा बोधक शिक्षण प्रदान करबाक उद्देश्यमे सफल भेलाह अछि ।

'गुलरी' उपन्यास लोकजीवनक यथार्थ पर आधारित अछि । एहिमे कतहु रहस्य, रोमांच ओ अस्वाभाविक घटनावलीक चित्रण नहि भेल अछि । उपन्यासकार अत्यन्त सुनियोजित कथाक माध्यमे नेना लोकनिकेँ ज्ञान-विज्ञानक विविध शाखासँ परिचय करबैत चलैत छथि । स्वभावत: एहिमे लोकरंजकताक अपेक्षा लोकशिक्षणक प्रधानता अछि ।

एहि उपन्यासक कथानायिका गुलरी नामक एक गोट अत्यन्त अनुशासित बालिका थिकीह जनिका घर-परिवार ओ समाजसँ सहजहिँ ज्ञान-विज्ञानक शिक्षा प्राप्त होइत चल जाइत छनि । उदाहरणक हेतु हुनक बाबा हुनका अध्ययनक आवश्यकता बुझबैत कहैत छथिन- 'दुर बताहि ! पढ़नाइ बहुत आवश्यक छैक । मूर्ख लोक आँखि रहैत आन्हर होइत अछि । आगूमे ज्ञान-विज्ञान-शास्त्रक पोथी पसरल रहैत अछि, किन्तु अनपढ़ पढ़ि नहि पबैत अछि । करिया अक्षर भैंस बरोबरि । मोन लगा कऽ पढ़ू । पढ़ि-लिखि कऽ नाम करू ।'

उपन्यासमे नेनाकेँ जे किछु सदुपदेश किंवा ज्ञान देल गेलैक अछि से सोझ-सोझ वक्तव्यक द्वारा, अप्रत्यक्ष कथन द्वारा नहि । एही क्रममे कखनो गुलरीकेँ गणितक ज्ञान कराओल जाइत छैक तँ कखनो खगोल विद्याक कखनो जलक महत्तासँ परिचित कराओल जाइत छैक तँ कखनो जीवनमे खेल-कूदक महत्त्वसँ अवगत कराओल जाइत छैक । क्रमश: गुलरी वन एवं पर्यावरण संरक्षणक शिक्षा पबैत अछि, स्वतंत्रता दिवस ओ देशभक्तिक परिचय पबैत अछि । ओकरा त्याग, तपस्या परोपकारक भावना, स्वच्छता, मद्य-निषेध, संक्रामक रोग, पर्यटनक महत्त्व, मौलिक अधिकार आदिसँ परिचय कराओल जाइत छैक । ज्ञानवर्द्धक शैलीक प्रयोग द्वारा नेनालोकनिकेँ शिक्षित करब एहि उपन्यासक मूल उद्देश्य अछि जाहिमे लेखक सफल भेलाह अछि । खेलक महत्त्वक धूसँ लेखक नेनालोकनिकेँ अनेक युगीन राष्ट्रीय-अन्त:राष्ट्रीय मानवीय समस्या सभसँ अवगत करओलनि अछि जे एकर अन्यतम विशिष्टता थिक ।

प्रस्तुत उपन्यास **स्वर्ण-कमल** लोककथात्मक शैलीक अनुसरण करैत अछि । ई अत्यन्त विचित्र सत्य थिक जे लोककथाकेँ महिले

लोकनि मौखिक शब्दावलीक माध्यमे एक पुस्तसँ दोसर पुस्त धरि काण्ठान्तरित करैत रहलीह अछि तथा एकरा सभक पृष्ठभूमि अघटनीय घटना पर आधारित रहल अछि । तीव्र मानवीय संवेदना ओ भावुकतासँ ओत-प्रोत एहन कथा सभ लोकजगतक मनोरंजन तँ करितहिँ अछि, नैतिक शिक्षा सेहो प्रदान करैत अछि । कल्पनाक उड़ान ओ आकर्षक वातावरण निर्माण एहन कथाक विशिष्टता होइत छैक ।

स्वर्ण-कमलमे बाबी परिवारक श्रेष्ठतम महिलाक रूपमे उपस्थित होइत छथि आ नेना लोकनिकेँ सुतबा काल कथा कहल करैत छथि । हुनका द्वारा कथा सुनि नेना लोकनिक मनोरंजन तँ होइतहि छनि संगहि हुनका लोकनिकेँ जीवन-जगतक व्यावहारिक ज्ञान सेहो प्राप्त होइत छनि आ नैतिक शिक्षा सेहो भेटैत छनि । उपन्यासक अन्तमे राहुलक ई कथ्य जे ' लोककेँ संतोष करबाक चाही, लोभ नहि । आइ लोभेक कारण रानी नयनावतीक दुर्दशा भेलनि । बहादुर आ साहसी लोकक कीर्त्ति राजकुमार सुजीत जकाँ चारू दिश पसरिए जाइत छैक ।' नेना लोकनिकेँ नैतिक शिक्षासँ संबलित करैत अछि आ उपन्यासकार एहि उद्‌देश्यकेँ समक्ष राखि कथाक तानी-भरनी बुनलनि अछि ।

एहि उपन्यासक मुख्य पात्र छथि राजकुमार सुजीत जे सुमेरुगढ़क राजा रणवीर सिंहक बड़की रानी सुनंदाक पुत्र छथि आ विलक्षण प्रतिभाक स्वामी छथि । रणवीर सिंहक छोटकी रानी नयनावतीकेँ सुजीत सोहाइत नहि छथिन । ओ षड्यंत्र कऽ कऽ राजकुमारकेँ महलसँ दूर एकटा जंगलक खाधिमे खसबा दैत छथिन । संयोगसँ राजकुमार अपन पिताक मित्र राजा सर सुल्तानक ओतय पहुँचि जाइत छथि आ हुनक शरणापन्न भऽ रहय लगैत छथि । मुदा जखन रानी नयनावतीक चर सभकेँ सर सुल्तान राजकुमार सुजीतकेँ पकड़बाक हेतु प्रयत्न करैत देखैत छथि तँ हुनक जानक रक्षा करबाक हेतु हुनका अपन महलसँ बाहर जाय देबाक अनुमति दऽ दैत छथिन । राजकुमार गुप्त रूपसँ आगू बढ़ैत छथि । जंगलमे हुनका एकटा महात्मासँ भेट होइत छनि आ ज्ञात होइत छनि जे हुनका मारबाक प्रयास कयनिहारि हुनक सतमाय नयनावती छथिन जे

हुनक पिताकेँ कारागारमे बन्द करबा देने छथिन आ अपना भायसँ राज्य संचालन करा रहल छथि । राजकुमार महात्माक आदेशसँ अपन पिताक उद्धार करबाक हेतु स्वर्ण-कमल तोड़ि मा काली पर चढ़यबाक हेतु उद्यत होइत छथि । अनेक प्रकार कष्ट सहि ओ अपन अभियानमे सफल होइत छथि । स्वर्णकमल पाबि काली हुनका एकटा कवच दऽ अभय प्रदान करैत छथिन । तत:पर ओ कल्लू नामक राक्षसक वध करैत छथि आ ओकर किलामे बन्द नारी सभक उद्धार करैत छथि । एही बीच रानी नयनावतीक सेनापति हुनक दुनू पुत्रीक संग बलात्कार कऽ दैत अछि, मुदा ओ ओकर किछु बिगड़ि नहि पबैत छथिन । अन्तत: राजकुमार सुजीत सर-सुल्तानक सहायतासँ अपन माता-पिताक उद्धार करैत छथि आ सर-सुल्तानक बेटी जावेदासँ विवाह कऽ सुखमय जीवन व्यतीत करऽ लगैत छथि । एहि तरहेँ ई उपन्यास रहस्य, रोमांच ओ विविध घटनाकश्रृंखलासँ आबद्ध एक गोट लोकरंजक ओ लोकशिक्षणपरक उपन्यास थिक जे बाल मनमे साहस, धैर्य ओ शौर्यादिगुणक विकासमे सहायक अछि तथा ईहो शिक्षा प्रदान करैत अछि जे नीकक फल नीके होइत छैक आ अधलाह कयनिहारकेँ अधलाहे फल भेटैत छैक । साम्प्रदायिक समरसताक स्थापनाक प्रति लेखकीय दृष्टि एकर अन्यतम विशिष्टता थिक ।

श्रीनन्द कुमार मिश्रजी मैथिलीक एकान्त साधकक रूपमे निरन्तर रचनाशील रहैत गीत, कथा, कविता, उपन्यास, शब्द-चित्र आदिसँ मैथिलीक भंडारकेँ भरैत रहल छथि । प्रस्तुत बाल उपन्यास हिनक नवम कृति थिकनि । अन्यान्ये कृति जकाँ हिनक एहू कृतिकेँ विद्वत् समाजक आदर भेटतनि, से अपेक्षा कयल जा सकैत अछि । हिनक नैसर्गिक सारस्वत-साधना अनवरत मैथिली साहित्य भंडारक सम्पोषण करैत रहय ताहि हेतु जगदम्बासँ प्रार्थना करैत छियनि ।

—योगानन्द झा

कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001
मो०- 09334493330

मंगलमय नूतन संवत्सर 2076
दिनांक 06.01.2019

लेखकीय

प्राचीनकालमे बच्चाकेँ निर्भय आ साहसी बनयबाक लेल दादी-नानी कतेको रंगक खिस्सा-पिहानी सुनबैत छलीह जाहिसँ बच्चाक स्मरणशक्ति बढ़ैत छलैक आ ज्ञानक वृद्धि सेहो होइत छलैक । प्राय: ई खिस्सा-पिहानी रातिमे भोजनोपरान्त सुतबाक बेरमे होइत छलैक । ओहिसँ बच्चाकेँ बढ़ियाँ नींन होइत छलैक । बच्चाकेँ बाल्यकालहिसँ जाहि रंगमे रंगबैक अर्थात् जेहन संस्कार देबैक, ओ तेहन साँचामे ढलि जायत । एकटा प्रशासनिक अधिकारीक बालकमे प्रशासन कार्यक गुण आसानीसँ आबि जाइत छैक । एहनो देखल गेलैक अछि जे अधिकांश पुलिस विभागक लोकक धिया-पूता गारि पढ़बामे निपुण भऽ जाइत अछि । एही उद्देश्यसँ बच्चाकेँ नीतिपरक खिस्सा-पिहानी सुनायब आवश्यक छल होयतैक । भक्त प्रह्लाद राक्षस कुलमे जन्म लेलन्हि । हुनका स्वभावमे राक्षसी प्रवृत्ति होयबाक चाही मुदा ओ भगवानक अनन्य भक्त भेलाह, कारण हुनक गर्भावस्थामे कयाधूकेँ जे हुनकर माय छलथिन्ह, कतेको तरहक पुराणक श्रवण कराओल गेल छलन्हि । वीर अभिमन्यु चक्रव्यूह भेदनक विधि गर्भहिमे सिखने छलाह । सातम द्वारक कथासँ पूर्व हुनकर जन्म भ' गेलन्हि आ तेँ ओ सातम द्वार तोड़ब नहि सीखि पओलन्हि ।

लोहासँ तलवारक निर्माण होइत अछि जाहिसँ असंख्य शत्रुक संहार कयल जाइछ, मुदा ई कम लोक जनैत छथि जे तलवार बनबासँ पूर्व लोहाकेँ कतेको प्रक्रियासँ तपाओल जाइत अछि, जाहिसँ ओकर गुण निखरैत छैक ।

पूर्वमे शिक्षाक लेल गुरुकुल छलैक जाहिठाम सब बच्चा एके संग शिक्षा ग्रहण करैत छलाह, एके संग भिक्षाटन करैत छलाह । ओहिमे पैघ घरक नेना वा गरीबक लेल अलग व्यवस्था नहि छलैक । पंछी प्रसवसँ पूर्व अपना खोंताक निर्माण करैत अछि । ओ बच्चाक पालन-पोषण तावते धरि करैत अछि जाधरि ओ उड़ाँत नहि भ' जाइत छैक । ओ शुरू मे ओकर भोजनक प्रबंध करैत अछि मुदा जखन ओ उड़ाँत भ' जाइत छैक, तखन बुढ़िया पक्षी ने ओकरा भोजन दैत छैक आ ने रहबाक लेल खोंता । ओकरा स्वयं एकर जोगाड़ कर' पड़ैत छैक । एकटा विद्वान आ सक्षम मनुक्खक लेल पूर्व संचित धनक कोनो आवश्यकता नहि छैक । ओ अपना सामर्थसँ सब अर्जित क' लैत अछि । एही परिप्रेक्ष्यमे एकटा खिस्सा ल' क' उपस्थित छी, **'स्वर्ण-कमल'** ।

एहि पोथीमे पात्र स्थान ओ घटनाक्रम पूर्ण रूपसँ काल्पनिक अछि । कदाचित् जँ किनकहुसँ ओकर मेल खाइत हो, तँ एहि लेल क्षमाप्रार्थी छी ।

एहि पोथीक प्रकाशनक लेल हम सर्वप्रथम आभारी छियैन्हि साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीसँ सम्मानित डॉ. योगानन्द झा, पूर्व लेखापाल, बिहार राज्य विद्युत बोर्डक जिनकर रचनात्मक सहयोग हमरा सतत भेटैत रहल अछि आ आशा करैत छी जे आगुओ भेटैत रहत । पुन: डॉ. भुवन भूषण, देना बैंक, मधुबनीकेँ धन्यवाद दैत छियैन्हि जे समय-समय पर हमर उत्साहवर्द्धन करैत रहलाह अछि । हम धन्यवाद दैत छियैन्हि गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच, उफरदाहाक सब सदस्यकेँ जिनकासँ हम प्रेरित आ उत्साहित होइत रहलहुँ अछि ।

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

जानकी नवमी

दिनांक 13.05.2019

स्वर्ण-कमल

1.

आइ प्रफुल्ल आदि नेना सभक मन बड़ प्रफुल्लित छलनि । जल्दी-जल्दी भोरे उठि अपन नित्य क्रिया सभसँ निवृत्त भ' स्कूल जयबाक लेल तैयार भेलाह । काल्हि राति बाबी एकटा अद्‌भुत खिस्सा सुनयबाक लेल वचन देने छलथिन्ह, से कोनो कीमत पर ओहि अवसर के नहि गमाब' चाहैत छलाह । ओना बाबी नित्य सुतबासँ पहिने कोनो ने कोनो खिस्सा-पिहानी अवश्य सुनबैत छलथिन्ह, मुदा काल्हि 'एहूसँ सुन्नर आ रोचक खिस्सा सुनायब', बाबी बाजलि छलथिन्ह; ताहि ल' क' हुनका सभक मन विशेष हलचलायल छलन्हि । जतेक नेना बाबीक ओहि गोष्ठीमे छलथिन्ह, सब बेसब्रीसँ ओहि क्षणक बाट जोहि रहल छलाह ।

प्रफुल्लक बाबी विधवा छलथिन्ह आ वयस करीब अस्सी वर्षक छलन्हि । धिया-पूता, पोता-पोती आ नाति-नातिनसँ भरल-पुरल आश्रम । आश्रमक सदस्यक संख्या गोट साठिक आस-पास । संयुक्त परिवार होइतहुँ कतहु कोनो विभेद नहि । सभ एक सूत्रमे पिराओल । तकर सम्पूर्ण श्रेय बाबीकेँ जाइत छलन्हि । एक तरहेँ बुझू तँ परिवारमे हुनकर हिटलरशाही चलैत छलन्हि । जकरा जे आदेश दितथिन, से सभ मानैत छलथिन । ओना बाबी बड़ सज्जन आ सुहृदया छलीह । मुँहसँ कखनहुँ आ ककरो लेल कटु वचनक प्रयोग नहि करैत छलीह, मुदा अनुशासनक मामिलामे एकदम कठोर आ सैह सम्पूर्ण आश्रमकेँ एक सूत्रमे बान्हिक' रखने छल । कोनहु सदस्यक द्वारा अनुशासन भंग भेने ओ उपवासमे चल

जाइत छलीह आ तावत् नहि मानैत छलीह यावत् ओ सदस्य बाबीसँ क्षमा याचना नहि क' लैत छल, ओकर पुनरावृत्ति नहि करबाक आश्वासन नहि द' दैत छल । ओ सभक ख्याल रखैत छलीह । ककरा कोन वस्तुक प्रयोजन छैक, के दु:खिताह अछि, ककरा दवाइक जरूरति छैक आ ककरा पथ्य-पानिक । ई प्राय: अन्य संयुक्त परिवारमे देख'मे नहि अबैत अछि । इएह दोष कोनहु संयुक्त परिवारक विघटनक कारण बनैत अछि ।

एक दिनक गप्प अछि । प्रफुल्लक पितिऔत रमण कनेक कमजोर जकाँ बुझयलाह । डाकदर हुनका एक सप्ताह दूधक संग कोनो दवाइक सेवनक लेल सलाह देलथिन्ह । हुनकर उपचार शुरू भ' गेलन्हि । हुनका सोझाँ दूधक गिलास देखि क' प्रफुल्लक दोसर पितिआइन कनेक भनभनेलीह । बाबी हुनका एतेक ने फज्झति कयलथिन जकर वर्णन नहि हो । जखन अहाँक बच्चा दु:खित छल आ ओकरा एक मास धरि दूधक संग दवाइक सेवन कराओल गेलैक, तखन तँ केओ किछु नहि बाजल । अहाँकेँ आइ किएक अखड़ि रहल अछि ? पुन: ओहि पितिअइनकेँ दोबारा किछु बजबाक हिम्मत नहि भेलनि । ऊपरसँ कका सेहो काकीयेकेँ दमसौलथिन्ह । ओहो लोकनि बाबीक खिलाफ किछु सुनबाक लेल तैयार नहि छलाह । बाबी अड़ोस-पड़ोसक लेल बड़ व्युत्पन्नि छलीह । हुनका व्यवहारिक ज्ञान बड़ बेसी छलन्हि । तेँ हुनक विशेष समय अनके आँगनमे बीतैत छलन्हि ।

बाबी पातर-छितर आ नाम छलीह । अवस्थाक कारणेँ डाँड़ किछु झुकि गेल छलन्हि मुदा माथक केश एकदम सघन आ कारी-कारी छलन्हि । ओना तँ ओ श्याम वर्णक छलीह मुदा मुँहक पानि एकदम चमकैत छलन्हि । धूआ-कब्जा एकदम सक्कत । ओ सबटा व्रत जेना कि रवि, एकादशी, सोमवारी, चौठ, चतुर्दशी नियमत: करैत छलीह । वर्षमे एक मास कार्तिकमे सिमरिया जा' क' गंगा-सेवन करैत छलीह । हुनक बनाओल भोजन एतेक रुचिगर होइत छलन्हि जकर वर्णन करब कठिन अछि । ओना तँ गाममे भनसाघरक भार पुतौहु सब पर छलन्हि, मुदा सिमरियामे एक मास ओ स्वयं अपना हाथसँ भोजन बनबैत छलीह । लोक सभकेँ जे स्वाद बाबीक हाथक बनाओल भोजनमे भेटैत छलनि से प्राय:

दोसरामे नहि । एकादशीक उपरान्त द्वादशीक' ब्राह्मण भोजनक निमित्त ओ स्वयं भोजन बनबैत छलीह ।

लोक सब बजैत अछि जे प्रतीक्षाक घड़ी बड़ पैघ होइत छैक । से आइ बच्चो सभक किछु एहने स्थिति छलैक । दिन बीतिये नहि रहल छलैक । सभक मनमे एकेटा गप्प छलैक जे साँझ कखन पड़त । जखन साँझ पड़ल तँ सब बच्चा अपन-अपन किताब ल' क' पढ़बाक लेल बैसि गेल, मुदा किताबमे ककरो मन लगिते नहि छलैक । सभक ध्यान ओही खिस्सा पर छलैक, जे आइ राति बाबी सुनाब'बला छलथिन ।

भोजनक समय भेलैक । सब बच्चा खा-पीबिक' अपन-अपन जगह पकड़ि लेलक । कुल मिलाक' करीब बारह-तेरह गोटे बाबी लग सुतैत छलाह । तकर कारण छलैक जे बिना खिस्सा सुनने ककरो निन्न नहि अबैत छलैक आ ताहि लेल सबसँ उपयुक्त पात्र बाबीये छलीह । बाबी भोजन कयलाक उत्तर ओछाइन ध' लैत छलीह जखन कि प्रफुल्लक माँ-काकी सबकेँ बर्त्तन-बासन सेहो कर' पड़ैत छलन्हि । सभक ओछाइन ओसारा पर तीनटा चौकीकेँ गेँटिक' कयल गेल छलैक । प्राय: सब केओ खिस्सा सुनिते-सुनिते सूति रहैत छल । बाबीकेँ विलम्ब देखि सब बच्चा बाबी-बाबी शोर करब शुरू क' देलक । अन्तत: बाबी सेहो अपन ओछाइन पर आबि गेलीह ।

"तोरा लोकनिकेँ की सुनबाक छह", बाबी पुछने छलथिन ।

"हमरा सभकेँ ओएह खिस्सा सुनाउ, जे काल्हि बाजलि छलहुँ ।" सब बच्चा एक स्वरमे बाजि उठल ।

"ठीक छै ! तोँ सभ बीचमे किछु नहि बजिह' । जखन खिस्सा पूर्ण भ' जयतैक, तखन बेरा-बेरी जकरा जे जिज्ञासा होयतह, से पूछि लीहऽ" बाबी कहलथिन्ह ।

बाबी बुझैत छलीह जे कनेक कालक बाद तँ सभ सूतिये रहत, तखन जिज्ञासा कोना करत । खिस्साक बीचमे टोका-टोकी भेने निन्नो नहि होइत छैक आ खिस्साक मूल रूप विस्मृत भ' जाइत छैक ।

बाबी खिस्सा शुरू कयलनि–

राणा रणवीर सिंह सुमेरुगढ़क राजा छलाह । ओ बहुत न्यायप्रिय, प्रजापालक आ धर्मात्मा छलाह । हुनका दूटा रानी छलथिन्ह । बड़की रानीक नाम सुनंदा आ छोटकी नयनावती छलन्हि । सुनंदा बहुत शान्त स्वभावक छलीह । ओ दान–पुण्य, व्रत, पूजा–पाठमे अधिक समय व्यतीत करैत छलीह । ओ ककरो कष्टमे नहि देखि सकैत छलीह । ओ ककरो कष्टसँ तुरंत द्रवित भ' जाइत छलीह आ ओकर यथासाध्य मदति सेहो करैत छलीह । ओ ककरो दुःखमे देखि स्वयं विचलित भ' जाइत छलीह, जेना ओ दुःख दोसराक नहि प्रत्युत् हुनक अपने होमए । रानी नयनावती ठीक ओकर विपरीत छलीह । हुनका ककरो सतयबामे अति आनन्दक अनुभव होइत छलन्हि । राजकुमार सुजीत रानी सुनंदाक बालक छलाह । सुजीत बड़ चंचल स्वभावक छलाह, संगहि विलक्षण प्रतिभाक स्वामी सेहो । हुनकर स्वभाव आ व्यवहार ककरो मनकेँ मोहि लैत छलैक । प्रजावर्ग सेहो राजकुमार सुजीतसँ विशेष प्रेम करैत छलन्हि । राजकुमार सुजीत सेहो सभक लेल सम भावसँ प्रस्तुत रहैत छलाह, उँच–नीच, छोट–पैघक भेद नहि रखैत छलाह । इएह तँ एकटा आदर्श राजाक गुण अछि । ओ नित्य पाठशाला जाइत छलाह, गुरुजनक आदर करैत छलाह, सभ विद्यार्थीक संग सेहो सम भाव रखैत छलाह । हुनक शिष्टताक उदाहरण गुरुजन अन्यो शिष्य सभकेँ दैत छलथिन्ह ।

एक दिन राजदरबारमे एकटा सभाक आयोजन कयल गेल । दरबारमे कतेको पंडित, दरबारी आ मंत्री आदि कोनो विषयपर तर्क–वितर्क क' रहल छलाह । केओ गोटे अनायास प्रश्न क' देलथिन्ह, ''सभसँ भारी की होइत छैक ?''

सम्पूर्ण दरबार स्तब्ध रहि गेल । सभ दरबारी सोचमे पड़ि गेलाह । की भ' सकैत छैक सबसँ भारी ? सभ वस्तु तँ हमरा लोकनि देखनहुँ नहि छी । तखन ई निर्णय कोना लेल जायत । राजकुमार सुजीत ओहि सभामे पिताक संग उपस्थित छलाह । हुनक अवस्था एखन मात्र पाँच वर्षक छलन्हि । ओ ठाढ़ होइत बजलाह, "जँ अनुमति प्रदान करी, तँ हम एकर उत्तर देम' चाहैत छी ।"

सब केओ एक स्वरमे बाजि उठलाह, "हँ... हँ... किएक नहि अवश्य...अवश्य...।

राजकुमार सुजीत बजलाह, "पाप सब किछुसँ भारी होइत छैक ।''

सम्पूर्ण दरबार थोपड़ीक आवाज आ वाह... वाह... सँ गनगना उठल । राणा साहेब सेहो सुजीतक विलक्षण जवाबसँ हर्षित भेलाह । रानी सुनंदा अपना बालकक बुद्धिमत्ता पर गर्व महसूस कयलनि, मुदा एहि घटनाक दृश्यावलोकनसँ रानी नयनाबती झूर–झमान भ' गेलीह । ओ भितरे–भीतर राजकुमार सुजीतसँ ईर्ष्या करैत छलीह । सुजीत हुनका फुटलीओ आँखिये नहि सोहाइत छलन्हि । ओ बुझैत छलीह जे राजकुमार सुजीत सुमेरुगढ़क उत्तराधिकारी छथि । एक ने एक दिन ओएह एहि ठामक राजा बनताह । तखन हमर मनमानी नहि चलत ।

यद्यपि राणा साहेब रानी सुनंदासँ बेसी रानी नयनेवतीकेँ मानैत छलथिन्ह, मुदा जखन राजकुमारक सवाल अबैत छलैक, तँ पलड़ा राजकुमारेक भारी भ' जाइत छलन्हि जे रानी नयनावतीकेँ नीक नहि लगैत छलन्हि । रानी नयनावतीकेँ मात्र दुइटा बालिका छलथिन्ह– कमला आ विमला । ओ दुनू बहिन ने बेसी सुन्नरिये छलीह आ ने नीक स्वभावेक । सम्भवतः माइयेक अनुरूप छलीह । अकारण ककरो गारि–फज्झति द' दैत छलीह, ककरोसँ झगड़ा क' लैत छलीह । हुनका दुनू बहिनसँ घर आ बाहरक केओ गोटे प्रसन्न नहि रहैत छलाह । कतेको बेर तँ राणा साहेबकेँ स्वयं हुनका दुनूक व्यवहार नीक नहि लगन्हि मुदा ओ नयनावतीक ततेक वशीभूत छलाह, जे चाहिओ क' किछु नहि बजैत छलाह ।

एक बेरक गप्प अछि । कमला आ विमला दुनू बहिन किछु बाजलि छलीह । ओहि ठाम नयनावती आ राणा साहेब दुनू गोटे छलाह । राणा साहेबकेँ ओकर व्यवहार नीक नहि लगलन्हि । ओ नयनावतीसँ कहलथिन्ह, "बेटी एतेक अमर्यादित रहए से उचित नहि । दोसराक घर जायत तँ की संदेश ल' क' जायत ।'' ताहिपर रानी नयनावती बाजलि छलीह, ''एकरा उच्छृंखलता नहि कहिऔक । ई तँ दुलार–मलारक कारणे

छिड़िया रहल अछि । राजाक पुत्री छियैक, कोनो जन-बनिहारिणीक थोड़े ।" तेँ राणा साहेब दखल देब बन्न क' देलथिन्ह ।

रानी नयनावती सदैव राज हथिअयबाक फिराकमे रहैत छलीह । तेँ राजकुमार सुजीतकेँ अपना बाटसँ हटयबाक लेल सतत प्रयत्नशील रहैत छलीह । नयनावती राजकुमार सुजीतकेँ सबसँ बेसी मानबाक नाटक करैत छलीह । ओ हुनका खूब आग्रहपूर्वक भोजन करबैत छलीह । बिना राजकुमारकेँ खुऔने अपनहुँ नहि खाइत छलीह । देखाबटीमे ओतेक प्रेम अपनहुँ बेटीसँ नहि करैत छलीह आ सुजीतकेँ सबसँ बेसी स्नेह दैत छलीह । हुनकर सभटा गप्प मानैत छलीह । हुनका लेल ककरोसँ लड़ि सकैत छलीह मुदा, केवल दोसराकेँ देखयबाक लेल । ओ जतबे ऊपर-ऊपर देखाबा करैत छलीह, ओतबे भितरे-भितर ईर्ष्या करैत छलीह । ओ राजक सेनापति शमशेर सिंहकेँ मिलाक' रखने छलीह, जाहिसँ प्रहरी सभ सेहो हुनका अधीन छलन्हि । ओएह दुनू मंत्रणा क' आगूक रणनीति तय करैत छलीह । राणा साहेब एहि षड्यंत्रसँ एकदम अनभिज्ञ छलाह । ओ अपन राज-काजमे लागल रहैत छलाह ।

सुमेरुगढ़ राजक सीमा चारू कातसँ जंगलसँ घेरायल छलैक जे लगभग सत्तरि कोसक छलैक । ओहि ठामक मुख्य धंधा खेती-बाड़ी छलैक । प्रजा अमन-चैनसँ अपन जीवन निर्वाह क' रहल छलैक । राणा साहेब सेहो प्रजाकेँ पूर्ण स्वतंत्र कयने रहथि । जकरा जखन आवश्यकता होइक ओ दरबारमे आबि अपन व्यथा व्यक्त क' सकैत छल । राजा सभक दुःख-तकलीफ बुझैत छलाह । जंगलमे कतेको प्रकारक हिंसक वन्य पशु रहैत छलैक जे सभ समय-समय पर खतरा उत्पन्न करैत छलैक । राणा साहेब बीच-बीचमे शिकारक बहन्ने जंगलक भ्रमण सेहो करैत छलाह आ अपन राजक सीमाक देखरेख सेहो ।

एक दिन राणा साहेबकेँ पता लगलन्हि जे जंगलक एकटा हाथीक झुंड किसानक फसिलकेँ तहस-नहस क' दैत छनि । ओ किछु विश्वस्त प्रहरीक संग शिकार पर गेलाह । एकर खबरि रानी नयनावतीकेँ सेहो छलन्हि । ओ अपना षड्यंत्रमे लागि गेलीह । ओहि दलमे सेनानायक

शमशेरक नाम सेहो छलन्हि मुदा ओ अस्वस्थताक बहन्ना बनाक' रहि गेलाह । राणा साहेबकेँ शिकार पर गेला मात्र दू दिन भेल छलन्हि । अनायास एक दिन भोरे-भोर हल्ला भेल जे राजकुमार सुजीत अपना कक्षमे नहि छथि । चारू दिस तक्काहेरी शुरू भ' गेल । सबसँ बेसी रानी नयनावती छटपटा रहल छलीह । गप्प जंगलक आगि जकाँ सौंसे पसरि गेलैक । सभटा प्रहरी, नागरिक सभसँ पूछल जा रहल छलैक । जे सुनैत छल से हक्का-बक्का रहि जाइत छल । रानी नयनावती तँ पागल जकाँ कर' लगलीह । तुरंत आदेश दैत छलीह जे सुरक्षाकर्मीकेँ गोली मारि देल जाय, तँ तुरंते ओकरा जहल पठयबाक गप्प करैत छलीह । सेनानायक शमशेर सिंह सेहो अपन दुखिताह सन बगय बनौने पहुँचि गेलाह आ सभकेँ शांत्वना देलथिन्ह । एही बहन्ने जतेक प्रहरी राजकुमारक शुभ चिंतक छलन्हि, सबकेँ जहलमे बन्न क' देल गेलैक । मुदा एहिमे प्रहरीक की दोष ? रातिमे ओहि कक्षमे केवल सेनानायक शमशेर सिंह गेल छलाह आ ओहो किछु क्षणक बाद खाली हाथ आपस आयल छलाह । कोनो प्रहरीकेँ कोनो निर्देशो नहि देल गेल छलैक । शमशेर सिंहकेँ राजकुमारक कक्षमे जायब षड्यंत्रेक एकटा हिस्सा छलैक मुदा ओ सेनानायक छलाह, हुनका पर अविश्वास के करैत ? तेँ कतहु शंकाक गुंजाइश नहि छलैक । बिना तथ्यक सेनानायक पर आरोप लगायब सेहो अनुचित छलैक ।

अश्वशालासँ राजकुमारक घोड़ा सेहो गायब छलन्हि । तेँ किछु लोकक अनुमान छलैक जे राजकुमार शिकार पर गेल होयताह, मुदा राजकुमार शिकार खेलयबाक लेल एकसरे वा बिना ककरो कहने तँ नहि जा सकैत छलाह । हुनक सहपाठी लोकनि तँ एही ठाम छलाह आ हुनको सभकेँ किछु बुझल नहि छलन्हि । राजकुमार सुजीत महलसँ बाहर कोना भेलाह, ई रहस्य बनिक' रहि गेल । जखन राणा साहेबकेँ एकर खबरि भेटलन्हि, तँ ओ अपन सिपाही सभक संग जंगलमे तक्काहेरी करब शुरू कयलन्हि । हुनका लग जे सिपाही सभ छलन्हि, ओकर अलावे सुमेरुगढ़सँ एक हजार सिपाही आर मँगा लेलन्हि । करीब एक मास धरि सब केओ समूचा जंगलके छानि लेलनि मुदा परिणाम किछु नहि बहरायल । सभ

केओ थाकि-हारि क' आपस आबि रहल छलाह । अनायास ककरो राजकुमारक घोड़ा पर दृष्टि पड़लन्हि । ओ घोड़ा राजकुमारक वियोगमे हुँकरि रहल छलैक आ ओकर आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल छलैक । कोनो कोनो जानवरो अपना मालिकक एहन भक्त भ' जाइत अछि, जे ओकरा लेल किछु क' सकैत अछि आ खास क' घोड़ाक लेल तँ एहन कतेको उदाहरण अछि, जेना कि महाराणा प्रतापक घोड़ा, अमर सिंह राठौरक घोड़ा आदि । ओहो घोड़ा राजकुमार सुजीतक लेल तड़पि रहल छल । ने ओ घास खाइत छल आ ने जल पिबैत छल । शमशेर सिंहकेँ घोड़ा देखलासँ आभास भेलैक जे राजकुमार सुजीत कतहु एही सभ ठाम भ' सकैत छथि, मुदा ओ एहि गप्पकेँ प्रकट नहि कयलक । ओ जल्दी सँ राणा साहेबकेँ ओहि ठामसँ हटाब' चाहैत छल । ओ झूठ-मूठक राणा साहेबकेँ विश्वास दिअयबामे सफल भ' गेल जे राजकुमार सुजीत आब जीवित नहि छथि । भ' सकैत अछि जे कोनो वन्य पशुक आहार बनि गेल होथि । तेँ हुनक घोड़ा सेहो अपन वेदना प्रकट क' रहल छल । घोड़ा छोड़ब ओही षड्यंत्रक एकटा कड़ी छलैक ।

राजकुमारकेँ तँ महलसँ गायब कयल गेल छल आ घोड़ा अश्वशालामे छलैक । राजकुमार आ घोड़ाकेँ भेट कत' मुदा शमशेर सिंह ई गप्प बुझैत छलैक जे राजकुमार जत' होयताह, घोड़ा ओहि ठाम पहुँचबे करत । जानवरमे सुंघि क' ककरो अनुसरण करबाक विशेष गुण छैक । ई गुण सबसँ बेसी कूकुरमे पाओल जाइत छैक । घोड़ाक स्थिति देखि राणा साहेब सेहो अपन धैर्य छोड़ि देलन्हि । ओ बेहोश भ' क' धरतीपर खसि पड़लाह । कतेक प्रयासक बाद हुनका होशमे आनल गेल आ सभ केओ सुमेरुगढ़ आपस अयलाह । ओहि ठाम शमशेर सिंह आ दसटा हुनक विश्वस्त सिपाही मात्र रहि गेल । शमशेर सिंह किछु सिपाही आ गुप्तचरकेँ ओहि ठाम छोड़ि देलक आ ओकरा सभकेँ आदेश देलकैक जे कोनो स्थितिमे राजकुमार सुजीतक प्राण नहि बाँचक चाही । जँ राजकुमार जीवित रहि जायत, तँ तोरा सभक प्राण संकटमे आबि जयतौक ।

राणा साहेब सुमेरुगढ़ आपस आबि गेलाह । एहि ठाम रानी

सुनंदाक स्थिति सेहो दयनीय छलन्हि । ओ खाट पकड़ि लेने छलीह । अन्न-जल सब किछु त्यागि देने छलीह । रहि-रहिक' चित्कार मारैत छलीह । प्रजामे सेहो बड़ उदासी छलैक । जे राजा वा राजकुमार प्रजाक मनमे बसल रहतैक, ओकर अभाव तँ ककरो खटकतैक । प्रजाक दुःखक कारण वर्त्तमानसँ बेसी भविष्यक चिन्ता छलैक । राजकुमार सुजीतक नहि रहने राज-काज रानी नयनावतीक हाथमे चल जयतनि तखन जे किछु होयतैक, प्रजावर्ग सएह सोचिक' सशंकित छल ।

मृतकक आत्माक शान्तिक लेल जे क्रिया-कर्मक विधान बनल अछि, ओकर प्रतिपादन तँ कोनो ने कोनो तरहेँ करब आवश्यके छलैक । राणा साहेबक आदेश पर पंडित लोकनि बजाओल गेलाह । राजकुमार सुजीतक श्राद्धक इन्तजाम होम' लागल । अनायास एकटा पंडितजी जे सबसँ वृद्ध आ अनुभवी छलाह, बजलाह, “श्रीमान् ! जँ.अन्यथा नहि ली, तँ हम किछु बाज' चाहैत छी । ई कार्य हमरा उचित नहि बुझा रहल अछि ।”

राणा साहेब बजलाह, “से किएक ?”

पंडितजी कहलथिन्ह– “हम एहि विषयमे अपनेसँ एकान्तमे गप्प कर' चाहैत छी । विषय बड़ गम्भीर अछि ।”

राणा साहेब आ पंडितजी दुनू गोटे एकटा कोठलीमे चल गेलाह आ पंडितजी गप्प शुरू कयलन्हि, “ई गप्प गोपनीय राखब आवश्यक अछि । श्राद्ध तँ मृतकक होइत छैक । जिबैत लोकक कतहु श्राद्ध भेलैक अछि ?”

राणा साहेब पुछलथिन्ह, “हम अपनेक अभिप्राय नहि बुझल । कनेक विस्तारसँ कहल जाय ।”

पंडितजी बजलाह– “आइ धरि हमर ज्योतिष विद्या फेल नहि भेल अछि । ई कहि रहल अछि जे राजकुमार सुजीत एखन जीवित छथि ।”

राणा साहेबक खुशीक ठेकान नहि रहलनि । ओ पुछि बैसलथिन्ह, “जँ ओ जीवित छथि, तँ कत' छथि, कोन स्थितिमे छथि आ कहिआ धरि अओताह ?”

पंडितजी बजलाह, ''एतेक अधीर जुनि होउ आ ने बेशी चिंता करू । ओ बड़ संकटमे छथि । ओना कर्मयोगीक लेल एकरा संकट नहि कहि परीक्षाक घड़ी कहि सकैत छी । तखन हमरा-अहाँक भाषामे एकरा संकट कहल जयतैक । हुनका मारबाक बहुत प्रयास कयल गेलनि, मुदा विधाता किछु आर चाहैत छलाह । एखन ओ उत्तर दिशामे छथि । ओ दुश्मनसँ घेरायल अवश्य छथि, मुदा दुश्मनक पकड़सँ बहुत दूर छथि । हुनका किछु अद्‌भुत कार्य करबाक छन्हि, जे ओ गुप्त रूपेँ वा अपरिचित भ' क' करताह । ओ बारह वर्षसँ पहिने नहि अओताह मुदा अओताह अवश्य ।"

राणा साहेब पुछलथिन्ह, "हुनका तँ सभ केओ बड़ मानैत छन्हि । हुनक दुश्मन के भ' सकैत अछि ?"

पंडितजी बजलाह, "हुनका ककरोसँ दुश्मनी नहि छलन्हि, से बात अहाँ ने बुझैत छियैक । अहाँ सोझ लोक छी, सबपर विश्वास करैत छी । तेँ अहाँकेँ बुझबामे नहि आबि रहल अछि । पैघ लोकक बहुत दुश्मन होइत छैक । ओ राज्यक भावी राजा छथि । जनिका हुनक राजा बनब पसिन्न नहि होयतन्हि, ओ तँ कुचक्र रचिये ने सकैत अछि । ओ कोन रूपमे अहाँक संग शत्रुता करत, कहब कठिन अछि ।"

राणा साहेब पुनः पुछलथिन्ह, "आखिर ओ अछि के ?"

पंडितजी बजलाह, "ओ के अछि आ कत' केर अछि, से तँ नहि कहि सकैत छी मुदा एतेक गप्प अवश्य अछि जे ओ केओ नजदीकीये लोक अछि । एहिसँ बेसी नहि कहि सकैत छी आने एकरा लेल हमर विद्या आदेश दैत अछि । एहिसँ विधि-विधानमे दखलंदाजी होयत, जे उचित नहि । यद्यपि हुनक प्राण पर संकट छन्हि, मुदा ओ जीवित रहताह, से हमर ज्योतिष विज्ञान कहैत अछि आ से अकाट्य अछि ।"

राणा साहेब पुछलथिन्ह, ''तखन हमरा सभकेँ की करबाक चाही ?''

पंडितजी बजलाह, "ओना तँ अपने लोकनिकेँ किछु करबाक प्रयोजन नहि अछि । जकर विधाते रक्षक छथि, ओकर केओ की बिगाड़ि सकैत अछि । तखन सांत्वनाक लेल आ दुश्मनक ध्यान भटकयबाक लेल

एक सय आठ पंडितसँ संकल्प करा क' महामृत्युंजय जाप करा सकैत छी । एहिसँ राज सेहो उन्नतिशील होयत आ राजकुमारक संकट सेहो कम भ' जयतन्हि ।" हुनका पर जे ग्रह दशा चलि रहल छन्हि सेहो शान्त भ' सकैत अछि ।"

राणा साहेब पुछलथिन्ह, "ओ शत्रु बाहरी थिक वा आंतरिक ?"

पंडितजी बजलाह, "ई पता लगायब तँ अपनेक कार्य अछि । हमरा सभकेँ एहि झंझटमे नहि फसाउ । अपने एहि ठामक राजा थिकहुँ । अपने किछु क' सकैत छी । जेना डिबिया दूर-दूर धरि अपन रोशनी छिड़िअबैत अछि मुदा ओकर चारू भाग अन्हारे पसरल रहैत छैक, तहिना राजा-महाराजा बाहरी दुश्मनसँ तँ वीरतापूर्वक लड़ि लैत छथि, मुदा आंतरिक दुश्मनकेँ परखियो नहि पबैत छथि । हमरा सभक काज मात्र इशारा करब अछि, एहिसँ बेसी किछु नहि । अपनेकेँ विदित होयत जे राजकुमार पर एहिसँ पूर्व दू बेर महलक भीतर आक्रमण भ' चुकल छलन्हि । एक बेर साँपसँ कटाओल गेल छलाह आ दोसर बेर भोजनमे विष देल गेल छलनि । सम्हरबाक लेल एतेक बहुत भेलैक । हमरा बुझने ओ शत्रु भीतरिये अछि आ महलमे ओकर आन-जान छैक, मुदा एहि विषयपर हमरा सभक माथ खपायब उचित नहि ।"

राणा साहेब पुछलथिन्ह, "ई तँ कोनो संयोगो भ' सकैत छैक । साँप तँ ककरो काटि सकैत छैक ?"

पंडितजी बजलाह, "हँ, साँपक काटब तँ संयोग भ' सकैत छैक मुदा भोजन मे विष.... ई तँ संयोग नहि भ' सकैत छैक । तेँ ई दुनू कार्य पूर्व योजनाक अनुसारे कयल गेल होयतैक ।''

रणवीर सिंह पुनः पुछलथिन्ह, "एखन ओ कत' छथि, से नहि कहि सकैत छी ?"

पंडितजी बजलाह, "देखू, श्रीमान् ! हम तँ ई बात बुझि रहल छी, जे एखन ओ कोन दिशामे छथि आ ताही आधार पर हुनक कुशलताक विषयमे अपनेकेँ कहल अछि, मुदा कत' छथि एकरा स्पष्ट करबाक लेल

हम सक्षम नहि छी । ई ने हमरा अधिकारमे अछि आ ने हमर विद्या एकर अनुमति दैत अछि । विधान तोड़बाक अधिकार केवल देवाधिदेव महादेवेटाकेँ छन्हि, दोसर किनको नहि । एकरा स्पष्ट कयने अपनहुँ सभपर आ राजकुमारो पर खतरा बढ़ि सकैत छनि । दुश्मन आर सक्रिय भ' जायत आ हुनक पछोड़ ध' लेत । एखन तँ अपन-आन सब अन्हरियामे तीर छोड़ि रहल छी ।"

एतेक कहैत बाबी देखलन्हि जे सब केओ सूति रहल अछि । मात्र प्रफुल्लटा जागल अछि । ओकरो हाफी पर हाफी आबि रहल छलैक । बाबी बजलीह, "प्रफुल्ल ! आब सूति रहू । शेष खिस्सा काल्हि होयतैक ।"

2.

दोसर रातिक खिस्सा शुरू होयबासँ पूर्व सभ बच्चा बाजल, "बाबी ! हम तँ पूरा खिस्सा नहि सुनि सकलहुँ. । हमरा सभकेँ पुनः ओएह खिस्सा सुनाउ ।"

बाबी बजलीह, "अहाँ नहि सुनलहुँ, तँ एहिमे ककर दोष ?"

कमला बाजलि, "दोष तँ हमरे सभक अछि ।"

बाबी बजलीह, "तखन ओही खिस्साकेँ आगू बढ़बैत छी । अहाँ सभ ध्यानसँ सुनू ।''

राजकुमार सुजीत जखन होशमे अयलाह, तँ अपनाकेँ एकटा घनघोर जंगलक खाधिमे पओलनि । ओहि ठाम दूर-दूर धरि केओ नहि छलैक । ओ कतेको बेर हल्लो कयने रहथि । राजकुमारकेँ बड़ आश्चर्य भेलनि जे ओ तँ अपना महलमे सूतल छलाह, एहि ठाम कोना पहुँचि गेलाह । हुनक माथ सेहो भारी लागि रहल छलन्हि । ओ सोचलन्हि जे ई अवश्य कोनो दुश्मनक किरदानी भ' सकैत अछि, मुदा महलक भीतर एहन के भ' सकैत अछि ? ओहि खाधिसँ बहरायब बड़ कठिन छलनि । ओ खाधि करीब बीस फीट गहींर छलैक । बुझल जाय तँ एक तरहेँ ओ इनारे छलैक । ओहिमे ने हाथसँ पकड़बाक योग्य किछु छलैक आ ने पयर धरबाक कोनो जगह । राजकुमार खूब ध्यानसँ चारू कात देख' लगलाह ।

अनायास हुनक ध्यान खाधिक उपरका बड़क गाछ पर पड़लन्हि । ओ बड़क गाछ बहुत पुरान छलैक आ ओकर सीर चारू भाग लटकल छलैक । ओकर किछु अंश ओहि खाधिमे सेहो लटकल छलैक मुदा तकरा पकड़ब आसान नहि छलैक । राजकुमार कूदि क' ओकरा पकड़बाक प्रयास कर' लगलाह । ओ अपना प्रयासमे विफल रहलाह आ हारि-थाकि क' बैसि रहलाह ।

पुनः राजकुमारक दृष्टि एकटा चुट्टीक हेंज पर पड़ल । चुट्टी सभ ओहि दीवार पर बेर-बेर चढ़ैत छल आ खसि पड़ैत छल मुदा ओ सभ चढ़ब नहि छोड़ैत छल । राजकुमार पुनः नव जोशक संग कूदि-कूदि क' ओहि सिरकेँ पकड़बाक चेष्टा कर' लगलाह । अन्ततः ओ ओकरा पकड़बामे सफल भ' गेलाह । ओ धीरे-धीरे ओहि सीरक सहारासँ खाधिक ऊपर आबि गेलाह । ओ बहुत प्रसन्न भेलाह, मुदा हुनका भूख आ प्यास सता रहल छलनि । तेँ ओ भोजन आ जलक आशामे आगू बढ़ि गेलाह । हुनका स्वयं नहि बुझल छलन्हि जे ओ कत' जा रहल छथि । किछु दूर गेलाक बाद मुर्छित भ' खसि पड़लाह । जखन होश अयलनि तँ आभास भेलन्हि जे हुनका दूटा सिपाही पकड़िक' ल' जा रहल छन्हि । ओ सिपाही रामगढ़क राजा सर सुल्तानक छलैक । जाहि ठाम राजकुमार अचेत भेल छलाह ओ स्थान रामगढ़ राजक छलैक । तेँ हिनकासँ पूछा-पाछी करबाक लेल सिपाही सभ पकड़ि लेलकनि, मुदा हिनकासँ ओकरा सभकेँ किछुओ जानकारी नहि भेटलैक । ओ सभ बहुत चेष्टा कयलक मुदा राजकुमार ओकरा सभकेँ किछु नहि कहलथिन्ह । कोनो अपरिचितकेँ अपन परिचय नहि देबाक चाही, इएह तँ राजनीति कहैत छैक । राजकुमार तकर निर्वाह कयलनि । ओ सिपाही सब राजकुमारकेँ पकड़िक' सर सुल्तानकेँ सूचित कयलक, "श्रीमान् ! पड़ोसी राजक एकटा युवक सीमा पार करैत पकड़ायल अछि । सम्भवतः ओ कोनो जासूस बुझना जाइत अछि ।''

सर-सुल्तान आदेश देलथिन्ह जे एखन ओकरा कारागारमे पठा दिऔक । काल्हि दरबारमे उपस्थित करब । ओ सभ ओहि राजकुमारकेँ कारागारमे बन्न क' देलक आ भोरक प्रतीक्षा कर' लागल ।

एम्हर सुल्तानकेँ खुदबुदी लागि गेलन्हि । ओ युवक के भ' सकैत अछि ? हुनका विदित छलनि जे सुमेरुगढ़ राज परिवारमे एखन भयंकर षड्यंत्र चलि रहल छैक । राजकुमार सुजीत महलसँ गायब छथि । हुनक गुप्तचर पल-पल केर खबरि द' रहल छलन्हि । सब राजमे पड़ोसी राज्यक गुप्तचर छद्‌म भेषमे रहिते अछि । से रामगढ़क गुप्तचर सेहो सुमेरुगढ़मे छलैक आ सुमेरुगढ़क गुप्तचर सेहो रामगढ़मे भ' सकैत छलैक । गुप्तचर सभ आन राजक गतिविधिसँ अपना राजाकेँ अवगत करबैत रहैत अछि ।

सर-सुल्तान पूर्वहिसँ सुमेरुगढ़क छोटकी रानी नयनावतीक स्वभाव सँ परिचित छलाह । राणा रणवीर सिंह आ सर-सुल्तान दुनू खूब नीक दोस्त रहथि । कोनहु काजमे दुनू एक-दोसराक मदति खुलि क' करैत छलाह । जखन राणा साहेबक विवाह रानी नयनावतीसँ भेलनि, तखन दुनूक सम्बन्धमे दराड़ि आबि गेलनि । दुनू गोटेमे.मनमोटाओ भ' गेलनि । तथापि केओ अपन दोस्तक अवनति नहि देखि सकैत अछि । तेँ सर-सुल्तान नहि चाहैत छलाह जे रणवीर सिंह सन मनस्वी राजाक विवाह नयनावतीसँ वा राजा सुजान सिंहक परिवारमे होइन्ह ।

राजा सुजान सिंह एक नम्बरक जुआरी, शराबी आ चरित्रहीन लोक छल । ओना तँ जुआ आ शराब राजमहलक शान आ शृंगारे मानल जाइत रहलैक अछि । अधिकांश राजा एकर उपयोग करिते छथि । बेसी काल एकर उपभोग दू मायनेमे होइत छैक । पहिल तँ अय्यासीक हेतु आ दोसर राज-काजक थकान मेटयबाक हेतु । मुदा ओहिमे डुबने आइ धरि ककरो कल्याण नहि भेलैक अछि । जखन जुआक प्रतिफल धर्मराज युधिष्ठिरोकेँ भोग' पड़लन्हि, तँ दोसराक की गति भ' सकैत छैक ।

नयनावतीक पिताजी राजा सुजान सिंह सबटा हदकेँ पार क' गेल छलाह । जूआ आ शराबक लेल ओ कोनो स्तर धरि जा सकैत छलाह । तेँ सुल्तान रणबीर सिंहकेँ नयनावतीक संग विवाहसँ मना कयने छलथिन्ह मुदा राणा साहेबपर एहि मनाहीक कोनो प्रभाव नहि पड़ल छलन्हि । सर-सुल्तान एही गुन-धुनमे मगन छलाह । जखन हुनका प्रहरीक संदेशक ध्यान भेलन्हि, तँ सोचलनि कदाचित् ओ राजकुमार

सुजीते तँ नहि छथि । सुल्तान तुरंत कारागारमे पहुँचलाह आ ओहि युवकसँ गप्प-शप्प कयलनि ।

ओना राजकुमार सुजीतकेँ सुल्तान चिन्हैत छलाह । ओ कतेको बेर अपन पिताजीक संग रामगढ़ आयल छलाह । ओहि समयमे राजकुमारक वयस पाँच-छओ वर्षक छल होयतन्हि । तेँ हुनक पहिल चेहरा आ आबक चेहराक मिलान कठिन छलैक । एखन ओ कतेक दिनक भुक्खल-पिआसल छलाह । केश-दाढ़ी सेहो बढ़ल छलन्हि । एहेन स्थितिमे तँ अपनोकेँ लोक नहि चीन्हैत आ दोसरकेँ कत'सँ चीन्हि सकैत । तेँ राजकुमारकेँ देखि सुल्तान सेहो भ्रमित भ' गेल छलाह । पहिने तँ ओ युवक अपन परिचय गुप्त रखबाक बहुत प्रयास कयलक मुदा सुल्तानक बहुत आग्रह पर बाजल, "हम सुमेरुगढ़क राजकुमार सुजीत थिकहुँ । हमरा संग किछु षड्यंत्र रचल जा रहल अछि । हम ओकरे शिकार छी मुदा ओ षड्यंत्रकारी के थीक, एकर जानकारी हमरा एखन धरि नहि अछि । तेँ हम एहि ठाम गुप्तरूपेँ किछु दिन रह' चाहैत छी ।"

सुल्तान बजलाह- "हमरा एहेन आभास भ' रहल छल जे हमर प्रहरी जिनका गुप्तचर बुझि क' पकड़ने छथि, ओ अवश्य सुमेरुगढ़क राजकुमार सुजीत होयताह । तेँ हम अहाँकेँ परिचयक लेल एतेक बाध्य कयलहुँ । अहाँ एहि ठाम पूर्ण सुरक्षित छी । हम सब तरहेँ अहाँक सुरक्षा करब । अहाँ जतेक दिन चाही, एहि ठाम रहि सकैत छी । अहाँक लेल इएह स्थान उपयुक्त अछि । एहि ठाम अहाँक परिचय गुप्त रहत । अहाँक पिता हमर परम मित्र छथि मुदा एखन हुनकहुँसँ ई गप्प गुप्ते राखब उचित अछि । काल्हि अहाँकेँ राजदरबारमे उपस्थित कयल जायत । अहाँसँ पूछ-पाछ कयल जायत, मुदा अहाँ किछु बजबे नहि करब । तकर बाद अहाँकेँ हम पुन: एही ठाम पठा देब आ अहाँकेँ कोनो वस्तुक दिक्कत नहि होमए, एकर विशेष ध्यान राखल जायत । जाधरि स्थिति सामान्य नहि होयत, अहाँकेँ एही रूपमे रहबाक अछि ।''

प्रात:काल ओहि युवककेँ दरबारमे उपस्थित कयल गेलनि आ बहुत तरहेँ पूछ-पाछ कयल गेलनि, मुदा ओ अपन मुँह नहि खोललनि

से तहिना जेना सुल्तान हुनका रातिमे बुझाक' आयल छलाह । तखन सुल्तानक निर्णय भेलनि, "ई या तँ कोनो बताह लोक अछि वा कोनो अन्य प्रदेशक जासूस । जाधरि एकरा विषयमे पूर्ण जानकारी नहि भेटैत अछि, ताधरि एकरा कारागारमे राखल जयबाक चाही । संगहि जासूसीक कारण ई मामिला अति संवेदनशील अछि, तेँ पकड़यबाक घटनाक भनक ककरो नहि लागक चाही । हम स्वयं समय-समय पर एकर जाँच-पड़ताल कयल करब ।'' ओ अपन एकटा विश्वस्त सेवककेँ राजकुमारक सेवामे लगा देलथिन्ह आ हुनक खयबा-पीबाक विशेष इन्तजाम करबा देलथिन्ह ।

सर सुल्तानकेँ मात्र एकटा बालिका छलथिन्ह जिनकर नाम छलन्हि जावेदा । जावेदा अति सुन्नरि आ सुशील छलीह । रंग गोर, देह पातर-छितर, मुँह नाम आ आँखि पैघ-पैघ हरिन सनक, आकर्षक सेहो । जावेदाकेँ शिक्षा-दीक्षा घरहिमे मौलवी साहेबसँ कराओल गेल छलन्हि । तकर कारण पर्दा प्रथा सेहो छल । हुनक अभिरुचि पोथी पढ़बामे विशेष छलनि । खासक' वीर रससँ सम्बन्धित पोथी जेना, अल्हा-उदल, लोरिक, दुलरा-दयाल, राजा सलहेश आदि । ओ वीरक विशेष सम्मान करैत छलीह । ओ तलवारबाजीमे सेहो निपुण छलीह । ई शिक्षा ओ अपना पितासँ पओने छलीह । प्रायः रामगढ़मे सर सुल्तानक द्वारा तलवारबाजी प्रतियोगिताक आयोजन होइतहि रहैत छलैक । एक बेर ओहि आयोजनमे एकटा युवक जे दोसर ठामसँ आयल छल, सेहो प्रतिभागी बनल । ओकर तलवारबाजी अद्‌भुत छलैक । ओकरा लग केओ नहि टिकि सकल । अन्तमे ओकरा छलपूर्वक हराओल गेल ।

ई दृश्य राजकुमारी जावेदा देखि रहल छलीह । ओ ओहि निर्णयक विरोध कयलनि आ अपना तर्कसँ सिद्ध क' देलन्हि जे ओकरा संग कपट भेलैक अछि । सुल्तान हुनका तर्कसँ सहमत भेला आ अपन निर्णय बदलि क' ओही युवकक पक्षमे निर्णय देलन्हि, जकरा विषयमे राजकुमारी तर्क प्रस्तुत कयने छलीह ।

ओना तँ सुमेरुगढ़क राजा-प्रजा सब राजकुमारक लेल चिंतित छलाह मुदा सबसँ बेसी चिंतित छलीह, छोटकी रानी नयनावती । हुनका

गुप्तचरक अनुसारेँ राजकुमारक मृत्युक कोनो प्रमाणे नहि भेटि रहल छलन्हि । राजकुमार कोनो हिंसक प्राणीक आहार बनल रहितथि वा हुनका प्रहरी मारने रहितन्हि, तँ कतहु ने कतहु हड्डीक अवशेष अवश्य भेटल रहैत मुदा से कतहु नहि भेटल । सएह हुनक चिंताक कारण छलन्हि । ओ सबटा पड़ोसी राजमे अपन गुप्तचर आ दूत पठायब शुरू कयलनि । एही क्रममे सेनानायक शमशेर सिंह स्वयं रामगढ़ पहुँचल छलाह । ओ पहिने तँ अपना गुप्तचर सबसँ भेट कयलनि, जकरा पहिनेसँ पठौने छलाह, मुदा किछु जानकारी हाथ नहि लगलन्हि । तखन ओ सुल्तानक दरबारमे अयलाह । सुल्तान पुछलथिन्ह, "अपने के थिकहुँ आ कोन प्रयोजने आयल छी ?"

शमशेर सिंह बजलाह, "श्रीमान् ! हम सुमेरुगढ़ राज्यक सेनानायक शमशेर थिकहुँ । हमरा अपनेक ओहि ठाम स्वयं राणा साहेब पठौने छथि । अपनेकेँ विदित होयत जे किछु दिन पूर्व हमरा राजक राजकुमार सुजीत अचानक राजभवनसँ गायब भ' गेल छथि । कतहु अता-पता नहि छनि । सम्पूर्ण राज शोकाकुल अछि । अपने राणा साहेबक मित्र सेहो छी । तेँ हमरा पता लगेबाक लेल पठौने छथि ।"

सुल्तान आश्चर्यचकित होइत बजलाह, "अपने की बाजि रहल छी ? ई सभ कोना भेलैक ?"

शमशेर सिंह बजलाह, "ई सभ कोना भेलैक से तँ हमरो सभकेँ विदित नहि अछि । महाराज अपने तँ शिकार पर गेल छलाह । हुनका परोक्षहिमे ई घटना घटित भेल । एक दिन भोरे-भोर प्रहरी सूचित कयलक जे राजकुमार सुजीत अपन कक्षमे नहि छथि आ ने हुनक अश्व अश्वशालामे छनि । पहिने तँ सबकेँ भेलैक जे कतहु टहलबाक लेल गेल होयताह मुदा खोजबीनक क्रममे ओकर पुष्टि नहि भेल आ तक्काहेरीक क्रममे हुनक घोड़ा मध्य जंगलमे भेटल, सेहो एकसरे । एही लेल सब ठाम दूत पठाओल गेल अछि आ राणा साहेबक आदेश पर हम स्वयं अपनेक ओहि ठाम आयल छी ।"

सुल्तान कहलथिन्ह, "अपनेकेँ तँ खूब नीक जकाँ जंगलेमे ने तकबाक चाही । सत्तरि कोसक जंगल पार क' कतहु जायब आसान नहि छैक। ऊपरसँ हिंसक प्राणीक सामना करब कतेक दुष्कर छैक ?"

शमशेर सिंह बजलाह, "हमरा लोकनि सम्पूर्ण जंगल छानि लेलहुँ। स्वयं राणा साहेब एक मास धरि जंगलमे डेरा खसौने छलाह, मुदा कतहु किछु नहि भेटलनि। तखन पड़ोसी राज सभमे खोज-पुछारि करबा रहल छी।"

सुल्तान गप्पक क्रममे शमशेर सिंहक मुखाकृतिक अवलोकन गम्भीरतासँ क' रहल छलाह । ओकरा मुँह पर राजकुमारक लेल कोनो परेशानीक भाव नहि बुझा रहल छलैक । ओ गप्पकेँ घुमाक' पुनः पुछलथिन्ह, "की कोनो बाहरी शत्रुक किरदानी तँ नहि ?"

शमशेर सिंह बजलाह, "एहन कोनो लक्षण तँ नहि बुझा रहल अछि । हमरा ओहि ठाम केओ राजपरिवारक विरोधी नहि अछि । सब केओ स्वामीभक्त छथि आ राणा साहेब एवं राजकुमारक लेल अपन प्राणो धरि अर्पित क' सकैत छथि । एहन आशंका अनुचित बुझाइत अछि ।"

सुल्तान बजलाह, "तखन की कोनो आंतरिक कलह ?"

आंतरिक कलह सुनि पहिने तँ शमशेर सिंह चौंकि गेल । सएह भाव देखबाक लेल तँ सुल्तान प्रश्नो कयने छलाह । पुनः संयमित होइत शमशेर सिंह बाजल, "जी नहि, एहेन कोनो गप्प नहि छैक ।"

सुल्तान कहलथिन्ह, "तखन तँ मात्र एकरा संयोगे कहल जा सकैत छैक ।"

शमशेर सिंह बाजल, "जी ! सएह बूझल जाओ ।"

सुल्तान कहलथिन्ह, "राणा साहेब हमर दोस्त छथि । हुनकासँ हमरा पूर्ण सहानुभूति अछि । हमरासँ जँ कोनो आर अपेक्षा हो, तँ कहल जाओ । हमरा ओहि ठाम एखन धरि एहन केओ नहि अभरलाह अछि । जँ राजकुमार अओताह तँ हम अपना संवाहकक माध्यमे हुनका अपन राज कऽ पठा देबन्हि ।

शमशेर सिंह बजलाह, "जी नहि, अपने किएक कष्ट करब । अपने केवल समाद पठा देब । हम आबि क' ल' जयबन्हि ।"

एतेक कहि शमशेर सिंह तँ चलि गेल मुदा सुल्तानक मनक संदेहकेँ पुष्ट क' गेल । सुल्तानकेँ तँ पहिनहिसँ रानी नयनावती पर संदेह छलन्हि । आब सेनानायक शमशेर सिंह सेहो ओहि घेरामे आबि गेल । जाहि राजक सेनानायक बागी भ' जायत वा विद्रोह पर उतरि जायत, ओहि राजक राजा कतेक काल धरि सुरक्षित रहि सकैत अछि ? मुदा शमशेर सिंह ने बागी छल आ ने विद्रोही । ओ तँ भीतरघात क' रहल छल । जे सबसँ घृणित काज भेलैक । तेँ सुल्तान ओहि प्रकरणकेँ गुप्त राखि राजकुमारकेँ पूर्ण सुरक्षा देबाक संकल्प कयलन्हि । आब सुल्तानकेँ पूर्ण विश्वास भ' गेलन्हि जे सुमेरुगढ़मे जे किछु भेलैक, से कोनो कुसंयोग नहि, अपितु पूर्व नियोजित षड्यंत्रक प्रतिफल थिक । राजकुमार सुजीत जँ जीवित छथि तँ केवल प्रभुक कृपासँ । दुश्मन तँ अपना भरि कोनहु प्रयास नहि छोड़लक अछि । ओ कारागारमे जा' क' राजकुमारकेँ सबटा गप्प कहलथिन्ह आ हुनक सुरक्षा आर बढ़ा देल गेलनि ।

पहिने तँ राजकुमारकेँ रानी नयनावतीक कुकृत्य पर विश्वासे नहि भेलनि । ओ बजलाह, "हमरा सबसँ बेसी छोटकीये माँ मानैत छथि । ओ एहन कृत्य कथमपि नहि क' सकैत छथि । जखन सुल्तान हुनका शमशेर सिंहबला वृतान्त सुनौलथिन्ह तखन हुनका विश्वास होम' लगलनि ।

आइ प्रफुल्लक संग कमला सेहो जगले छलीह । ओ पूछि देलकनि, "बाबी ! रानी नयनावती तँ राजकुमारकेँ बड़ मानैत छलीह । तखन ओ एना किएक करितथि ?

बाबी बजलीह, "साम, दाम, दण्ड, भेद, ई चारू राजनीतिक अंग थीक । एकर प्रयोग राजनीतिमे बड़ कुशलतासँ आ कुटिलतासँ कयल जाइत छैक । रानी नयनावती सेहो राजपुत्री छलीह । ओ कूटनीतिमे कुशल छलीह । ओ राजकुमारकेँ ऊपरसँ मानैत छलीह, भीतरसँ नहि । ओ केवल मानबाक नाटक क' रहल छलीह, जाहिसँ हुनका द्वारा कयल गेल कुचक्र

पर ककरो ध्यान नहि जाइक । जाहि ठाम अधिक विश्वास होइत छैक, ओतहि विश्वासघातक सम्भावना होइत छैक । सएह तँ रानी नयनावती क' रहल छलीह ।

प्रफुल्ल पुछलकन्हि, "बाबी ! रानी नयनावती के छलीह । हिनका राजपुत्री किएक कहलियन्हि । हुनक पिता के छलाह ?"

3.

तेसर दिन बाबी रानी नयनावती आ राजा सुजान सिंहक खिस्सा शुरू कयलनि ।

राजा सुजान सिंह टीकमगढ़क राजा छलाह । राजा ओतेक पैघ तँ नहि मुदा तहसील बहुत नीक । राज-काज सेहो नीक जकाँ चलैत छलनि । जखन सुजान सिंहक पिता प्रभुराम सिंह राजा रहथि, तखन टीकमगढ़क स्थिति बड़ नीक रहैक, मुदा सुजान सिंहक गद्दीपर बैसितहि ओकर पतन होयब शुरू भ' गेलैक । तकर प्रमुख कारण छलैक, जूआ, शराब आ कामिनी । ओना राजा-महाराजाक लेल ई सामान्य गप्प भेलैक । प्राय: कोनो राजाक दरबार एहिसँ बाँचल नहि होयत, मुदा 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' । कोनो वस्तुक विशेष सेवन सेहो दु:खदायी होइत छैक । अत्यधिक भोजनो करब स्वास्थ्यक लेल नुकसानदेह होइत अछि । निन्नक दवाइ लोक सुतबाक लेल खाइत अछि, मुदा ओहो बेसी खयलासँ लोक मरिओ सकैत अछि । किछु ओहने स्थिति सुजान सिंहक छलनि । ओ अपन व्यसनक पाछाँ राजकोषकेँ खाली क' देलनि । प्रजापर जबरन टैक्स लगायब शुरू कयलनि । प्रजावर्गमे असंतोष बढ़ि गेलैक । अपन क्षतिपूर्तिक लेल ओ चारू भाग नजरि दौड़ौलन्हि । ओ कोनो राजक कमजोर नसकेँ पकड़ि क' ओहि ठाम घुसबाक ताकमे लागि गेलाह । ओ देखलनि जे सुमेरुगढ़क राजा राणा साहेब बड़ सज्जन आ यशस्वी लोक छथि, मुदा हुनका पुत्र नहि छन्हि । राणा साहेब दोसर विवाहक विषयमे सोचि रहल छलाह आ तकर भनक सुजान सिंहकेँ सेहो छलनि । ओ एहि अवसरकेँ गमाब' नहि चाहैत छलाह । ई तँ बिनु मँगने हुनका मोती भेटि गेलन्हि ।

ओ अपन बेटी नयनावतीक विवाह करा अपन पयर पसारि सकैत छलाह । एहन प्राय: कतेको राजा-महाराजा एक-दोसर राजसँ सीमा-विवाद वा संधिक लेल करैत छलाह ।

राणा रणवीर सिंहक विवाह रानी सुनंदासँ भेल छलन्हि आ तकरा करीब बीस वर्ष भ' गेल छलैक, मुदा एखन धरि ओहिसँ संतानक सुख नहि भेटल छलन्हि । इएह सम्पूर्ण राजमे चिंताक विषय छलैक । एहि लेल कतेको प्रयास कयल गेल छलैक । रानी सुनंदा धर्मपरायणा तँ छलीहे, ओ साधु-संतमे सेहो विशेष विश्वास करैत छलीह । कतेको मुनि-महात्मासँ भेट कयलनि आ हुनका अपन मनक गप्प कहलथिन । सब केओ इएह कहैत छलथिन्ह जे अहाँकेँ खूब सुन्नर आ यशस्वी बालक होयत मुदा कहिआ धरि, से केओ नहि कहैत छलन्हि ।

एक बेर रानी सुनंदा कुम्भ स्नान करबा लेल प्रयागराज गेल छलीह । ओहि ठाम एकटा नागा बाबासँ अपन मोनक व्यथा कहलथिन्ह । ओ नागा बाबा कहलथिन्ह, "अहाँकेँ एकटा पुत्र होयत । ओ खूब प्रतापी आ यशस्वी होयत । ओकरा कारण किछु दिन अहाँकेँ कष्टो होयत । ओ बारह वर्ष धरि गुप्तवासमे रहि किछु अद्‌भुत कार्य करत । तकर बादे ओ आपस आओत आ अहाँ सभक कष्ट दूर करत ।"

पुन: रानी सुनंदा पुछलन्हि, "बाबा ! ई तँ सभक मुँहेँ सुनैत छी, मुदा से कहिया धरि सम्भव होयत ?

नागाजी कहलथिन्ह, ''एकर समय स्पष्ट नहि भ' रहल अछि । एहिमे एखन देरी लागत । सभक धैर्यक सीमा होइत छैक ।

अंतत: राणा साहेब दोसर विवाह करब तय क' लेलन्हि । रानी सुनंदा सेहो ओकर विरोध नहि क' सकलीह । आखिर कतेक दिन धरि केओ इन्तजार करैत । राज-काज चलयबाक लेल उत्तराधिकारी तँ चाहबे करी । सेहो उचिते वयसमे संभव छलैक । अति वृद्ध भेने तँ सेहो सम्भव नहि छल । जखन राणा रणवीर सिंहक विवाह नयनावतीसँ होयब तय भेलनि, तखन एकमात्र सर-सुल्तान एकर बेस विरोध कयने रहथिन । ओ

बुझैत छलथिन जे राजा सुजान सिंह सुमेरुगढ़मे अपन पयर पसारि रहल अछि । सुजान सिंहक पैठ सुमेरुगढ़केँ तँ रसातल पहुँचाइये दैत संगहि ओकर असरि हुनको राज पर पड़ि सकैत छनि । हुनक चिंता एहि बातक छलन्हि जे राणा साहेब हुनक मित्र छलथिन्ह । दुनूमे एतेक घनिष्ठता छलन्हि जे हफ्तो भरि एक-दोसराक ओहि ठाम आबिक' रहैत जाइत छलाह ।

दुनू गोटे सतरंजक सेहो नीक खेलाड़ी छलाह । जखन दुनू गोटेक गोटी भाँजब शुरु भ' जाइत छलनि, तँ ओ कतेक दिन धरि चलत, केओ नहि कहि सकैत छल । कतेको बेर तँ एहनो भेलैक जे सुमेरुगढ़सँ संदेश भेटला पर बीचहिमे खेल बन्न भ' जाइत छलैक ।

एक बेरक गप्प अछि । राणा साहेब रामगढ़ अयलाह । ओहि ठाम हुनक खूब स्वागत-सत्कार भेलनि, जे प्राय: पूर्वहुँमे होइत छलन्हि । भोजनक बाद राणा साहेब आ सुल्तान सतरंजक बाजी पर बैसि गेलाह । एखन मात्र तीन दिन भेल छलनि । सुमेरुगढ़सँ एकटा सिपाही संदेश ल' क' आयल । रानी सुनंदाक मन खराब छलन्हि । संदेशक अनुसार राणा साहेबकेँ तुरंत विदा भ' जयबाक चाहियनि, मुदा ओ ध्यान नहि देलन्हि । राणा साहेब संदेश सुनि ओहि सिपाहीकेँ आपस क' देलथिन्ह, ई कहैत जे अहाँ आगू बढ़ू, हम आबि रहल छी । पुन: दोसर सिपाही आयल आ ओहो इएह उत्तर ल' क' आपस चल गेल ।

रानी सुनंदाक स्थिति खराब भ' रहल छलन्हि । हुनका शहरक डाक्टर लग ल' जायब आवश्यक छलन्हि, मुदा बिना राणा साहेबक आदेशक ई सम्भव नहि छल । सिपाहीसँ सेनानायक शमशेर सिंहकेँ पता लागि गेलनि जे ओहि ठाम सतरंजक बिसात लागल छैक । ओहिपर सँ राणा साहेबकेँ उठायब ककरो बुते सम्भव नहि अछि । ओ स्वयं रामगढ़ गेलाह आ राणा साहेबकेँ सब स्थितिसँ अवगत करौलन्हि । ओकर बाद राणा साहेब सेनानायक शमशेर सिंहक संग विदा भेलाह, मुदा चलैत-चलैत कहि गेलाह, "एहि कक्षमे ताला लगबा दिऔक । हम जखन आयब, तँ खेल पुन: एही ठामसँ शुरू होयत ।''

एही क्रममे राणा साहेबक संग सुजीत सेहो यदा-कदा रामगढ़ अबैत छलाह । राणा साहेब आ सुल्तान तँ सतरंजमे बाझि जाइत छलाह । मुदा राजकुमार सुजीत आ राजकुमारी जावेदा दुनू बाललीलामे मस्त भ' जाइत छलीह । दुनूकेँ एक संग खेलाइत देखि रानी आबेदा खातूनकेँ बड़ नीक लगैत छलन्हि । ओ एकर चर्चा सुल्तानसँ सेहो करैत छलीह । ओ सुल्तानसँ कहैत छलीह, "जनैत छी ! जखन सुजीत आ जावेदा एक संग रहैत छथि, तँ एकदम राजा-रानी सन लगैत छथि । एहन बुझना जाइछ जे दुनूक सम्बन्ध पूर्व जन्मक अछि । एतेक प्रेम तँ कोनो सहोदरोमे नहि देखल जाइत अछि ।

जखन राणा साहेब सुमेरुगढ़क लेल विदा होइत छलाह, तँ रानी आवेदा खातून पूछैत छलथिन्ह, "पुन: राजकुमारक दर्शन कहिआ करायब ।" राणा साहेब हँसैत-हँसैत बजैत छलाह, "एतेक लगाओ जँ राजकुमारक संग भ' गेल अछि तँ एही ठाम किएक नहि राखि लैत छियन्हि ।" उत्तरमे रानी आवेदा खातून कहैत छलीह, "एखन तँ ई बच्चा छथि । एखन हिनका बिना रानी सुनंदाकेँ सेहो नीक नहि लगतन्हि । जखन पैघ भ' जयताह, तँ अवश्य हम एही ठाम राखि लेबन्हि ।"

जखन राजकुमार सुजीत गुप्त रूपेँ रामगढ़क कारागारमे छलाह, तँ सुल्तान एहि विषयमे रानी आवेदाक संग सेहो चर्चा कयने रहथि । रानी आवेदा आ राजकुमारी जावेदा राजकुमारसँ भेट करबाक लेल तड़पि उठलीह, मुदा सुलतान एकर अनुमति नहि देलथिन्ह । ओ बजलाह, "राजकुमार एहि ठाम गुप्त रूपेँ छथि । ओ तँ जंगलमे बौआइत छलाह । ई तँ नीक संयोग रहैक जे हमर गुप्तचर हुनका बताह वा आन ठामक गुप्तचर बुझिक' पकड़ि लेलकन्हि । हम हुनका चिन्हिक' एहि लेल कारागारमे रखने छियन्हि, जाहिसँ ओ सुरक्षित सेहो रहताह आ हुनक परिचय सेहो गुप्त रहतन्हि । हुनक तक्का-हेरीमे कतेको गुप्तचर घूमि रहल अछि । स्वयं सुमेरुगढ़क सेनानायक शमशेर सिंह आयल छल । ओकरा हम कहुना क' टरकयलहुँ । अहाँ लोकनिक भेटसँ हुनक भेद खूजि जायत । ओ संकटमे पड़ि जयताह । हमर रामगढ़ असुरक्षित भ' सकैत अछि । की अहाँ से चाहैत छी ?''

सुल्तानक तर्कक सोझाँ दुनू माय-बेटी विवश भ' गेलीह आ मन मसोसिक' रहि गेलीह, मुदा जावेदाक हृदय हहरि उठल । राजकुमारक प्रति हुनक प्रेम जागि उठल । ओ अपनाकेँ रोकि नहि सकलीह । ओ भावविह्वल भ' गेलीह । ओना राजकुमारसँ हुनका बहुत दिनसँ भेट नहि भेल छलन्हि मुदा एहन लगैत छलन्हि जेना काल्हिये देखने होयथिन्ह । ओ अपन सुधि-बुधि बिसरि गेलीह । ओ सबटा संयमकेँ तोड़ि दितथि मुदा राजकुमारक हित सोचि दम साधि लेलन्हि । ओ राजकुमारक एखनुक रूप देख' चाहैत छलीह, हुनक विवशता देख' चाहैत छलीह । ओ जाहि राजकुमारकेँ नेनपनमे देखने छलीह, निर्दोष, निश्छल, कपटरहित । एकदम प्रफुल्लित आ चंचलता सँ भरल, मधुमिश्रित मुस्कान । कारी-कारी लटुरिया केश, सुन्नर नाक-नक्स, रंग गोर दप-दप, कामदेवक प्रतिमूर्ति । आइ ओकर अभाव छलन्हि जेना कि सुल्तान वर्णन कयने रहथिन ।

जावेदाकेँ राजकुमारक संग नेनपनहिसँ प्रेम छलन्हि । ओना तँ नेनपनक प्रेम आ जुआनीक प्रेम दुनू दू चीज होइत छैक । नेनपनक प्रेम निश्छल, निःस्वार्थ आ असीमित होइत अछि । ओ ककरो संग भ' सकैत अछि । एक सहपाठी, भाय-बहिन, बाप-बेटी, अड़ोसी-पड़ोसी आदिक संग भ' सकैत अछि, मुदा जुआनीक प्रेम ओकरहि संग उचित अछि जकरा संग वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कयल जा सकैछ । ओकरा लेल हमउम्र, स्वजातीय होयब आवश्यक छैक । सबसँ पैघ गप्प जे जाहिमे दुनूक परिवार राजी-खुशी होमए । ओना ई सब गप्प आब पुरान भ' गेल छैक । आजुक समाज एहि बंधनसँ मुक्त अछि । एहि ठाम राणा साहेब आ सुल्तानमे दू जातिक रहितहुँ एकटा समानता छलन्हि जे दुनू अपना-अपना राजक राजा छलाह । दुनू नीक मित्र सेहो छलाह । दुनू गोटे कतेको बेर विवाहक विषय पर अपन सहमति द' चुकल छलाह । तेँ राजकुमारी जावेदाक नेनपनक प्रेम आब सम्बन्धमे परिणत होयबा लेल आतुर छल । मुदा एहि लेल समय उपयुक्त नहि छलैक । आवश्यकता छलैक प्रतीक्षाक ।

राहुल पुछलक, "बाबी ! की राजकुमार सुजीत सब दिन जहलेमे रहताह ? की हुनकर मदति सुल्तान अपना सेनासँ नहि क' सकैत छलथिन्ह ?"

बाबी बजलीह, "एक राजक सेना बिना अनुमतिक दोसर राजमे नहि जा सकैत अछि । ओ तखने जायत जखन ओकरा मदतिक लेल बजाओल जयतैक, युद्धक घोषणा होयतैक । सुल्तानक राज रामगढ़ बड़ छोट छलैक । सुमेरुगढ़क सोझाँ ओ बड़ कमजोर छलैक । रामगढ़मे ओतेक सेना नहि छलैक, जे सुमेरुगढ़क सामना करितए । तेँ ओ परोक्ष रूपेँ राजकुमारक मदति क' रहल छलाह । स्थिति सामान्य भेला पर राजकुमारकेँ जहलसँ बाहर कयल जइतन्हि ।"

कमला बजलीह, "बाबी ! सुल्तान जे राणा साहेब आ रानी नयनाबतीक विवाहक विरोध करैत छलाह, से किएक ? ओ रानी नयनाबतीक स्वभावसँ कोना परिचित छलाह ?

बाबी कहलथिन्ह, "सुल्तान रानी नयनावतीक स्वभावसँ परिचित नहि छलाह । ओ परिचित छलाह नयनावतीक पिता राजा सुजान सिंहक स्वभावसँ । ई स्वभाव सुजान सिंहकेँ मातृपक्षसँ भेटल छलन्हि । सुजान सिंहक पिता राजा प्रभुराम सिंह अपने बड़ नीक राजा रहथि । हुनका शासन कालमे हुनकर प्रजा बड़ खुश रहैत छलन्हि मुदा हुनक रानी देववती बड़ कर्कश स्वभावक छलथिन्ह । ओ ककरो नीक नहि देख' चाहैत छलीह । एतेक धरि जे राजा प्रभुराम सिंह सेहो हुनकासँ कन्नीये काटल करथि । ओएह रानी देववतीक असरि राजा सुजान सिंह पर पड़लन्हि । तेँ सुल्तानकेँ एहन शंका छलन्हि जे भ' सकैत अछि, राजा सुजान सिंहक असरि रानी नयनावती पर ने होमए आ दोसर गप्प जे खराब आचरणक कारण सुजान सिंहक राज-पाट सब खतम भ' रहल छलनि मुदा हुनका अय्यासीमे कनेको कमी नहि भेल छलनि । ओकर पूर्ति ओ कोना करितथि ? भ' सकैत छल जे एही बहन्ने ओ सुमेरुगढ़मे अपन पयर पसारबाक प्रयास क' रहल होथि ।

हुनक ई सोच सही छलनि । नयनावती पर सब तरहेँ पिताक खूनक असरि भेलनि आ ओ सब तरहेँ अपन पिताक स्वभावक अनुसरण कयलन्हि । विज्ञानक गप्प तँ नहि कहि सकैत छी, मुदा आध्यात्मिक दृष्टिसँ एहन चर्चा छैक जे माय-बापक स्वभाव, संस्कार, चालि-चलनक

प्रभाव बहुत अंश धरि बच्चा पर पड़िते छैक । एहिसँ मुनि-महात्मा सेहो वंचित नहि रहलाह । रावणक पिता मुनि विश्वश्रवा छलाह आ माता केकसी । विश्वश्रवा ऋषि छलाह, विद्वान छलाह, तपस्वी छलाह आ केकसी दानव पुत्री । स्वयं सोचि सकैत छी जे हुनकर स्वभाव केहन होयतन्हि । रावणमे किछु-किछु दुनू गुण समाहित भेलन्हि । पिताक प्रभावे ओ विश्वक सबसँ पैघ पंडित भेलाह । तपस्वी एहन जे अपन दसो माँथकेँ अपनहि हाथसँ काटि महादेवकेँ नित्य अर्पित करैत छलाह । एतेक गुण रहितहुँ मायक प्रभावे दानवीय स्वभाव छलन्हि । अनाचार-दुराचारमे लिप्त छलाह । तेँ सुल्तानक आशंका उचिते छलन्हि ।''

4.

आइ खिस्साक चारिम दिन छल । बच्चा सभक उत्सुकता बढ़ि रहल छलैक । आब तँ यावत् खिस्सा खतम नहि होइत अछि, केओ सुतबो नहि करैत अछि । आइ बाबी चारिम कड़ी ल' क' उपस्थित भेलीह आ बजलीह, ''किछु दिनक पश्चात् राजकुमार सुजीत सुल्तानक सहयोगसँ रामगढ़ राजक बाहर अयलाह । तावत् सुमेरुगढ़क वातावरण प्रायः शान्त भ' गेल छलैक । प्रजा वर्ग ई मानि लेने छल जे आब राजकुमारक जीवित आपस आयब सम्भव नहि छनि । सुल्तानकेँ ओहि ठामक सबटा गतिविधि बूझल छलन्हि मुदा राजकुमार सुजीतकेँ एकर कोनो भान नहि छलन्हि ।''

जखन राजकुमार रामगढ़क जहलसँ बहरयबाक अनुमति चाहलनि, तखन सुल्तान पुछने छलथिन्ह, "अपने कत' जाय चाहैत छियैक ?" राजकुमार सुजीत बाजल छलाह, "ई तँ हमरो पता नहि अछि । हम एखन जंगलमे विचरण करब । हमरा बुझा रहल अछि जे कोनो अदृश्य शक्ति हमरा अपना दिस घीचि रहल अछि । हम एहि तरहक सपना बरोबरि देखि रहल छी ।" ओना सुल्तान तँ एहि सबकेँ नहि मानैत छलाह मुदा एतेक ओहो बुझैत छलाह जे हिन्दूमे बहुतो देवी-देवता होइत छथि, जिनकर अद्भुत चमत्कार होइत छन्हि । राजकुमारकेँ बाहर जयबामे खतरा तँ अवश्य छन्हि, मुदा एहू ठाम कतेक दिन धरि राखि सकैत छियैन्हि ? एहू

ठाम तँ तक्का-हेरी चलिये रहल अछि । जँ जालिम सिंह आ शमशेर सिंहकेँ पता लागि जयतैक, तँ ओ हमरो परेशान क' सकैत अछि । हिनका लेल सुमेरुगढ़ तँ असुरक्षित अछिये । तेँ रानी आवेदा बरोबरि अनुरोध करैत रहै छलीह । हुनका कोनो ने कोनो रूपमे राजकुमारकेँ देखबाक उत्कंठा प्रबल भ' रहल छलन्हि । सुल्तानक लेल इएह उचित अवसर बुझायल ।

ओ राजकुमारसँ पुछलथिन्ह, "की, अहाँ रानी माँ आ जावेदासँ भेट कर' चाहैत छी ?

राजकुमार बजलाह, ''ओना तँ ई अवसर भेटक लेल उपयुक्त नहि बुझाइत अछि । एखन हमर बगय, वेशभूषा सब विचित्र सनक अछि । तखन जँ हुनकर इच्छा छन्हि, तँ हम ओकर पालन अवश्य करब ।''

सुल्तान रातिमे गुप्त रूपेँ हुनका अपना कक्षमे ल' अयलाह आ रानी आवेदाकेँ सूचित कयलन्हि । रानी आवेदा आ राजकुमारी जावेदा दुनू जेना एही अवसरक ताकमे होथि । सूचना पबितहिँ हहायल-फुहायल आबि गेलीह आ राजकुमार सुजीतकेँ निहार' लगलीह । हुनक एखनुक रूप देखि दुनू माय-बेटीक करेज दहलि गेलन्हि । राजकुमारी जावेदा तँ लोकलाजक ध्यान रखैत अपनाकेँ संयमित रखलन्हि मुदा रानी आवेदा अपनाकेँ रोकि नहि सकलीह । हुनका आँखिसँ अश्रुक धार बहि रहल छलन्हि ।

रानी आवेदाकेँ अपना पुत्र नहि छलन्हि । ओ नेनपनहि सँ राजकुमार सुजीतकेँ पुत्रवत् मानैत रहल छलीह । अपन स्नेह-वात्सल्यसँ हुनका ओत-प्रोत कयने रहलीह । आइ एहेन स्थितिमे जँ हुनका नहि कष्ट होइतन्हि, तँ ककरा होइतैक ? हुनका लोकनिक ई भेट तँ बहुत दिनक बाद भेल छलन्हि, मुदा स्नेह तँ स्नेह होइत छैक ।

राजकुमारक रूप देखि दुनू चकित छलीह । दूबर-पातर, केश-दाढ़ी बढ़ल, देहक वस्त्र फाटल-चीटल, पयर बिना जूता-चप्पलक । जन-बनिहारसँ सेहो बदतर । ककरो मुँहसँ कोनो शब्द नहि बहरायल । सब मंत्रवत् ठाढ़ि छलीह । मात्र आँखिक माध्यमे संवेदना प्रकट कयल गेल ।

रानी आवेदा राजकुमारकेँ वस्त्र बदलबाक आग्रह कयलनि मुदा

ओ तैयार नहि भेलाह । राजकुमार जावेदाकेँ ओही रूपमे देखलनि, जाहिमे नेनपनसँ देखैत छलाह । कोना दुनू गोटे संगे खेलाइत छलाह, राजा-रानीक खेल । राजकुमारक संग कोनो गड़बड़ी कयने रानी आवेदा, राजकुमारी जावेदाकेँ डाँटि दैत छलीह मुदा राजकुमारकेँ कौखन किछु नहि कहैत छलीह । राजकुमार सुजीत रानी आवेदाकेँ अभिवादन करैत आ हुनकासँ अनुमति लैत आगू बढ़लाह । सुल्तान संगमे एकटा विश्वस्त प्रहरीकेँ लगा देलथिन्ह ।

रातिक एगारह बाजि रहल छलैक आ बाट एकदम सुनसान, अन्हार घुप्प । ई बाट घनघोर जंगलसँ गुजरि रहल छल जाहि ठाम रहि-रहिक वन्य पशुक गर्जना रातिक नीरवताकेँ तोड़ि रहल छल । कतहु भालु तँ कतहु गीदर बाटमे भेटि रहल छलनि । ई बाट दिनहुमे दुर्गम छलैक । दुनू गोटे एकदम थाकि गेल छलाह । ओ सब एकटा.गाछतर बैसबाक प्रयास कयलनि । तावत् खूब जोरसँ सिंहक गर्जना भेलैक ।

बुझायल जे सिंह कतहु लगे-पास अछि । ओ सिपाही तँ पड़ा गेल मुदा राजकुमार सुजीत निर्भीकतापूर्वक ओहि आवाजक अनुसरण कयलन्हि । जेम्हरसँ सिंहक आवाज आयल छलैक, ओ ओम्हरहि विदा भ' गेलाह । हुनक सब थकान भागि गेल । ओ देख' चाहैत छलाह जे ई सिंह केहन अछि । आबय काल सुल्तान हुनका अपन रक्षाक लेल एकटा तलवार देने छलथिन्ह । हुनका सिंह तँ कतहु नहि भेटलन्हि, मुदा बीच-बीचमे ओकर गर्जब अवश्य सुनबामे अबैत छलन्हि । तावत् भोर सेहो भ' गेलैक । किछु दूर चललाक बाद एकटा आश्रम भेटलन्हि । ओ आश्रम एकदम चक-चक करैत छलैक । ओहि ठाम कतेको रंगक फूलक गाछ लागल छलैक । चारू भाग गाछ पर अनेको प्रकारक फल ओकर शोभा बढ़ा रहल छलैक । अनेको तरहक वन्य प्राणी आ चिड़ँइ-चुनमुन्नी सेहो छलैक । ओ सब आपसी बैर-भाव छोड़िक' खेलि रहल छल । परस्पर विरोधी रहितहुँ सब एक-दोसराक संग खेलमे मस्त छल, जेना साँप आ छुछुन्दरि, कौआ आ कोइली, सिंह आ हरिण, मुस आ उल्लू ।

आइ धरि देखनहुँ नहि छलाह । पहिल बेर ओही आश्रममे देखलन्हि । ई दृश्य देखि राजकुमार चकित छलाह । आखिर ई कोना सम्भव भेलैक ? ई तँ शृष्टिक नियमक विपरीत अछि । प्रकृतिक नियम अछि "जीवो जीवस्य भक्षणम्" । मुदा एहि ठाम तँ उनटे गंगा बहि रहल छल । ओ एम्हर-ओम्हर एहि दृश्यक अवलोकन करैत सुखक अनुभव क' रहल छलाह । कनेक कालक लेल ओ अपन सबटा दुःख, भूख-प्यास बिसरि गेलाह । तावत् देखलन्हि जे एकटा महात्मा जिनकर सभटा केश उज्जर, ललाट चमकैत छलनि, ध्यान मुद्रामे आसन लगौने छथि । राजकुमारकेँ ओहि महात्माकेँ देखलासँ बड़ आश्चर्य भेलनि किएक तँ ओ प्रायः सपनामे ओहने आकृतिकेँ देखैत छलाह । ओ महात्माजीक ध्यान टुटबाक प्रतीक्षामे ओहि ठाम एक कात बैसि गेलाह ।

किछु क्षणक प्रतीक्षाक बाद महात्माजीक ध्यान टुटलन्हि । ओ बजलाह, "राजकुमार सुजीत ! अहाँ आबि गेलहुँ । हम अहींक बाट ताकि रहल छलहुँ ।"

राजकुमारकेँ बड़ आश्चर्य भेलनि । ई महात्माजी हमरा पहिनहिसँ कोना चिन्हैत छथि ? हम तँ एहिसँ पहिने हिनका देखनहुँ नहि छियन्हि । ओ सोचमे पड़ि गेलाह ।

महात्माजी पुछलथिन्ह, "अहाँ कोन सोचमे पड़ि गेलहुँ । अहाँ इएह ने सोचि रहल छी जे हम अहाँकेँ कोना चिन्हलहुँ । हमरा अहाँकेँ तँ कहिओ भेट नहि अछि ।"

राजकुमार बजलाह, "जी !"

महात्माजी कहलथिन्ह, "तँ सुनू ! हम अहाँकेँ मात्र नामसँ जनैत छलहुँ । हमर गुप्तचर कहिऔक वा दूत, ओ सुमेरुगढ़मे छल । जखने अहाँके राजमहलसँ बहार कयल गेल, सेहो बेहोशीक हालतमे, तँ हमर दूत ओकर अनुसरण कयलक । ओ सब तँ अहाँकेँ

ठेलिक' भागि गेल । ओ महात्माजी ओहि दूतकें इशारा कयलथिन, ओ ततेक जोरसँ गर्जना कयलक, जे राजकुमार चकित रहि गेलाह ।

महात्माजी पुनः बजलाह, ''जखन-जखन अहाँ बाट बिसरि जाइत छलहुँ तँ इएह अपन गर्जनासँ अहाँकें बाट देखा रहल छल । अहाँ एकर आवाज तँ सुननहि होयब । अहाँक विषयमे आ सुमेरुगढ़क स्थितिक विषयमे एहि दूतक माध्यमे हमरा सब किछु बूझल अछि । एहिसँ पूर्व अहाँ रामगढ़क सुल्तान ओहि ठाम छलहुँ । हम एहि ठाम बैसिक' अहींक प्रतीक्षा क' रहल छलहुँ । अहाँ सही समय पर आयल छी ।"

राजकुमार पुछलथिन्ह, "बाबा ! अहाँ कोना बुझलियै जे हम एही ठाम आबि रहल छी ?

महात्माजी बजलाह, "पहिने अहीं कहू जे अहाँ कत' जाइत छलहुँ ? अहाँक गन्तव्य कत' अछि ?"

राजकुमार बजलाह, "हमर कोनो गन्तव्य नहि अछि आ जँ अछिओ, तँ हमरा ओकर जानकारी नहि अछि । हमरा बुझायल जे केओ हमरा आगाँ चलि रहल अछि आ हम ओकर पछोड़ धयने एहि ठाम धरि अयलहुँ अछि ।"

महात्माजी बजलाह, ''हम तँ ध्यानस्थ छलहुँ मुदा अहाँकें एहि ठाम अनबाक लेल हम अपन दूत पठौने छलहुँ । अपनेक अयलाक बाद हमरा किछु हल-चलक आभास भेल आ हमर ध्यान टूटल । सबसँ पहिने हमर ध्यान हमरा दूत पर गेल, तखन अहाँ पर । हम बुझि गेलहुँ जे ओ अहाँक संग आबि गेल आ तें हम अहाँकें राजकुमार सुजीतक नामसँ सम्बोधित कयल । हमर दूत सिंहक गर्जना करबामे दक्ष अछि । ओहिसँ ओ जंगली क्षेत्रमे हिंसक प्राणीसँ वा अन्य दुश्मनसँ अपन रक्षा क' सकैत अछि । ओकरहि गर्जनासँ अहाँक संगक सिपाही भागि पड़ायल आ अहाँ उत्सुकतावश ओकर पछोड़ धयलहुँ । दुनूक भेट एहि लेल नहि भेल जे अहाँ तँ सिंहकें तकैत छलियैक आ ओ मनुक्ख छल ।

तखन राजकुमारकें विश्वास भेलन्हि जे ई सही महात्मा छथि ।

ई तँ सद्यः त्रिकालदर्शी छथि । हिनकहि प्रभावे हम एहि ठाम आयल छी । अवश्य ई हमर कल्याण करताह । ओ दुनू हाथसँ महात्माजीक पयर पकड़ि लेलन्हि आ बजलाह, "बाबा ! कोन पापसँ हमरा संगे ई सब घटना घटित भ' रहल अछि । आर की की होयबाक छैक ? हमरा अपने एहि ठाम बजौलहुँ, एकर की प्रयोजन छैक ?"

महात्माजी बजलाह, ''प्रयोजन अवश्य छैक । बिना प्रयोजने किछु नहि होइत छैक, मुदा एखन हम प्रयोजनकें स्पष्ट नहि करब । कारण ओहिसँ जे विधिक विधान बनल छैक, ओहिमे हस्तक्षेप मानल जयतैक । ई अधिकार ककरो नहि छैक । एही लेल समयसँ पूर्व ओकरा प्रकाशमे नहि आनल जाइत छैक । सब किछु विधाता करैत छथि । हमरा लोकनि निमित्त मात्र थिकहुँ । कोन व्यक्तिसँ कोन काज कराओल जयबाक चाही, के ओकर सहयोगी बनत, के ओकर मार्गदर्शक बनत, सब किछु पूर्वहिसँ निर्धारित अछि । समयसँ पूर्व ओकर घोषणा नहि कयल जाइत छैक । उदाहरण स्वरूप रामक वनवास निर्धारित योजनाक अंग छलनि । ओकर जानकारी महर्षि वशिष्ठ, मुनि विश्वामित्र, महारानी कैकेयी आ स्वयं रामकें छलन्हि मुदा ओहो लोकनि चुप रहलाह । एहि पुनीत कर्त्तव्यक ठीकरा महारानी कैकयीक माँथ पर फोड़ल गेलन्हि । सर्वत्र हुनका अपयश भेलन्हि । ओ विधवाक जीवन व्यतीत कयलनि मुदा हजारो स्त्रीकें विधवा होयबासँ, कतेकोक सतीत्व नष्ट होयबासँ बचौलन्हि । ई बुझ'बलाके ? जँ कैकेयी नहि, तँ रामक वनवास नहि । जँ रामक वनवास नहि, तँ कुल सहित रावणक अंत नहि । राम जँ चाहितथि तँ कैकेयीकें कलंकसँ बचा सकैत छलाह मुदा से नहि कयलनि, एहि लेल जे विधिक विधान बनल रहए । तें हमहूँ अहाँक भविष्यक रहस्योद्घाटन नहि क' सकैत छी । हँ ! एतेक कहि सकैत छी, जे एहिसँ अहूँक कल्याण होयत आ समाजक सेहो । सर्वत्र सुयश प्राप्त करब । अहाँ पुछने छलहुँ जे ई कोन पापक दण्ड थीक । हम कहब अहाँ कोनो पाप नहि कयने छी । अहाँक संग जे किछु भ' रहल अछि वा जे किछु होमएबला अछि, ओ अपनेक कल्याणक लेल भ' रहल अछि । ई काज तँ विधाता

ककरो दोसरोसँ करा सकैत छलाह, तखन अहीँ किएक ? ई अहाँक पुण्यक फल थीक । एही लेल अहाँक चयन कयल गेल अछि । अहाँक साहस आ पराक्रममे परीक्षा भ' रहल अछि । एहिसँ घबरायब नहि । भगवानो ओकरे मदति करैत छथिन, जकरामे साहस आ शौर्य होइत छैक । कोढ़ि आ लाचारकेँ केओ मदति नहि करैत अछि । हँ, भोजन अवश्य पठा दैत छथिन । से तँ मनुक्खक कोन गप्प, सब जीव-जन्तुक आहार वैह पठबैत छथि । एखन धरि जे किछु अहाँक संगे घटित भेल अछि, से हम कहि सकैत छी ।"

राजकुमार बजलाह, "ई तँ केओ कहि सकैत अछि आ हम सेहो बुझैत छियैक ।"

महात्माजी बजलाह, "अहाँ बुझैत छी अवश्य, मुदा पूर्ण रूपसँ नहि । अहाँ मात्र घटनाक रूप जनैत होयब '। ओकर पाछाँ ककर हाथ छलैक, से सम्भवतः अहाँकेँ विदित नहि होयत । अहाँ विश्वास नहि करब जे अहाँकेँ जे सबसँ बेसी दुलार-मलार करैत छलीह, सएह अहाँक सबसँ पैघ दुश्मन छथि ।"

राजकुमार अचम्भित भ' महात्माजीक गप्प सुनि रहल छलाह । महात्माजी पुनः बजलाह, "हम जे किछु कहैत छी पहिने ओकरा ध्यानसँ सुनू– अहाँक नाम सुजीत अछि । अहाँक पिता राणा रणवीर सिंह सुमेरुगढ़क राजा छथि । हुनका दूटा कनियाँ छथिन्ह । एकटाक नाम सुनन्दा छन्हि जे अहाँक माय थिकीह आ दोसर नयनावती जे मात्र दूटा बालिकाक माय छथि । ओ अहाँके सबसँ बेसी दुलार-मलार करैत छलीह मुदा ऊपरसँ, भीतरसँ ओ अहाँक प्राणक दुश्मन छथि ।"

राजकुमार सुजीत बीचहिमे बात काटैत बजलाह, ''ई कोना भ' सकैत छैक । ओ तँ हमरा सबसँ बेसी मानैत छथि । अपने हाथे भोजन करबैत छथि । हमर कोनो गप्पकेँ बिना सोचने-विचारने समर्थन करैत छथि । ओ हमर दुश्मन कोना भ' सकैत छथि ? हम एहि गप्पक विश्वास नहि करब । अपनेकेँ अवश्य कोनो भ्रम भेल होयत ।"

महात्माजी बजलाह– "भ्रम हमरा नहि भेल अछि । भ्रमित तँ अपने छी । एही विश्वासक लेल तँ ओ अहाँकेँ एतेक मानैत छलीह । सुमेरुगढ़क प्रमुख षड्यंत्रकारी ओएह छथि ।"

राजकुमार पुछलथिन्ह, ''ई अपने कोन आधार पर कहि रहल छी ?"

महात्माजी कहलथिन्ह, "अहाँक माँ-बाबूजी एखन सुमेरुगढ़क जहलमे बन्न छथि आ राजक संचालन रानी नयनावतीक भाय क' रहल छनि । अहाँकेँ सेहो ओ सब ताकि रहल अछि । एखन धरि अहाँपर तीन बेर आक्रमण भ' चुकल अछि । ओ सभ तीनू बेर असफल रहल छथि । ओकरा सभकेँ असफल केनिहार आर केओ नहि, हमर ओएह शिष्य अछि । एक बेर साँपसँ कटबौलक । ओहि साँपक काटल आइ धरि केओ नहि बाँचल अछि, मुदा ईश्वरक कृपासँ ओ विष हमर ओएह शिष्य जे सिंहक गर्जना करैत छथि, उतारने छलाह । कारण ओ गुप्त रूपेँ ओतहि छलाह । दोसर बेर भोजनमे विष मिलाओल गेल । संयोगवश ओ भोजन एकटा बिलाइ खा लेलक आ ओतहि प्राण त्यागि देलक । तेसर बेर पुनः अहाँक भोजनमे बेहोशीक दवाइ मिलाओल गेल जाहिसँ अहाँ बेहोश भ' गेलहुँ । नयनावतीक सहयोगी अहाँक सेनानायक सेहो छथि । ओकरे आदेश पर चारिटा सिपाही अहाँकेँ उठाक' जंगल ल' गेल । ओ सब अहाँकेँ मारबाक प्रयास क' रहल छल, तावत् हमर शिष्य ओहि ठाम पहुँचि गेल आ सिंहक गर्जना कयलक । ओ सब अहाँकेँ एकटा बड़का खाधिमे जाहिसँ बहरायब सेहो कठिन छलैक, ठेलिक' भागि गेल । सब मौका पर हमर शिष्य ओहि ठाम उपस्थित छल, तेँ अपने बाँचि सकलहुँ । ओ सिपाही शमशेर सिंह आ रानी नयनावतीकेँ कहलक जे राजकुमारकेँ मारिक' फेकि देलियैक । किछु सबूत नहि भेटलाक कारण ओकरा सभकेँ एखन धरि पूर्ण रूपेँ विश्वास नहि भेलैक अछि । ओ सब अहाँक तक्काहेरी जंगल-झाड़क संग पड़ोसी राजमे सेहो करबा रहल अछि । अपने जाहि सुल्तानक ओहि ठाम छलहुँ, अहाँक लेल आब ओहो स्थान सुरक्षित नहि रहल । अहाँक पिता आ सुल्तान नीक मित्र छथि । ई गप्प नयनावती आ शमशेर सिंह नीक जकाँ बुझैत छथि । हुनका सभकेँ एहन अंदेशा छन्हि

जे सुल्तान राणा साहेब आ राजकुमारक मदति अवश्य करताह । तेँ दर्जनो गुप्तचर रामगढ़मे घुमि रहल अछि । ओ रामगढ़क गति-विधिकेँ देखि रहल अछि । ओहि ठामसँ पल-पल केर जानकारी सुमेरुगढ़ पठा रहल अछि । आब अहीँ निर्णय करू, अहाँकेँ कत' जयबाक अछि ?"

राजकुमारकेँ मन पड़लन्हि, जखन ओ होशमे अयलाह, तँ एकटा खाधिमे पड़ल छलाह जाहि ठामसँ बहरयबाक कोनो बाटे नहि छलैक । एक तरहेँ ओहि खाधिकेँ इनारे बुझल जाय मुदा ओहिमे जल नहि छलैक आ बेस लम्बा-चौड़ा सेहो छलैक । ओ कोना-कोना क' बड़क सीर पकड़िक' बाहर भेल छलाह । हुनका महात्माजीक गप्प पर पूर्ण विश्वास भ' गेलन्हि । संगहि ई सुनिक' अति कष्ट भेलनि जे हुनकर माय-बाबूजी एखन कारागारमे बन्न छथिन । हुनका कतेक कष्ट भोग' पड़ि रहल होयतन्हि । आब हुनका सर-सुल्तानक गप्प पर सेहो विश्वास भ' रहल छलन्हि । ओ अपन माँ-बाबूजीक राज आ प्रतिष्ठा पुनः पयबाक लेल आतुर छलाह । ओ सब किछु करबाक लेल तैयार छलाह । ओ बजलाह, "बाबा ! हमरा नैयाक पतवार तँ आब अहीँक हाथ अछि । हमर गन्तव्य की अछि, हमरा की करबाक अछि, ई सब तँ हमरा ने बूझल अछि आ ने बुझा रहल अछि । तखन अपनेक जे निर्देश होयत, से हम अवश्य करब ।"

महात्माजी बजलाह, "एहिमे हिम्मतिक बड़ आवश्यकता छैक, कारण डेग-डेग पर संकटक सामना करबाक छैक । बाट बड़ कठिन छैक, मुदा साहसी व्यक्तिक लेल सबटा सुगम भ' सकैत छैक । कठिनता तँ बड़ होयत मुदा सब किछु स्वतः ठीक भ' जायत ।"

राजकुमार बजलाह, "हमरा जीवनक कोनो उद्येश्यो तँ आब नहि बाँचल अछि । ककरा लेल हम जीवनक आशा राखब । जखन हम अपन माँ आ बाबूजीक रक्षा नहि क' पओलहुँ, तखन आब हम जीबियेक' की करब । हम अपन जीवन अहाँक चरणमे अर्पित क' रहल छी । एकरा जेना चाही अपने उपयोग क' सकैत छी । हम अहाँक सब गप्प मानबाक लेल तैयार छी ।"

महात्माजी बजलाह, "एना अधीर आ हतोत्साहित नहि होउ ।

हतोत्साहित लोक जीवनमे किछु नहि क' सकैत अछि । जीवनमे उत्साह आ साहस दुनूक आवश्यकता छैक । जीवनमे आशाक बड़ महत्व छैक । आशासँ सोचबाक शक्ति बढ़ैत छैक, पुरुषार्थ बढ़ैत छैक । एक सँ एक समस्याक समाधाान मनमे अबैत छैक, आगू बढ़बाक प्रेरणा भेटैत छैक । साहसी लोक अपन गन्तव्य सुगमतासँ तय करैत अछि । अहाँक माँ आ बाबूजी कारागारमे अवश्य छथि मुदा ओ सकुशल रहताह, एतेक हम आश्वासन द' सकैत छी, मुदा ओ बहरयताह तखन, जखन अपनेक यात्रा पूर्ण होयत, जखन अपने माँ कालीक आशीर्वाद प्राप्त करब ।"

राजकुमार बजलाह, ''ठीक छै, हमरा शीघ्र आदेश देल जाय ।"

महात्माजी बजलाह, ''अहाँकेँ एखन बहुत काज करबाक अछि । एहि ठामसँ उत्तर दिशामे जाउ । बाटमे सातटा जंगल पहाड़ आ सातटा धार भेटत । धार छोट-पैघ दुनू होयत । जंगल बहुत डेराओन आ वन्यप्राणीसँ भरल छैक । ओहिमे अहाँकेँ बहुत कष्ट होयत मुदा घबरायब नहि । सब बाधाकेँ पार करैत आगू बढ़ैत रहब । जखन डेरा जायब, अहाँक यात्रा खतम भ' जायत । पुनः अहाँ आगू नहि बढ़ि सकैत छी । तेँ एहि गप्पक सतत ध्यान राखब । जंगल-पहाड़ पार कयलाक बाद एकटा विशाल मैदान भेटत जाहि बीचमे एकटा सरोवर भेटत । ओहि सरोवरक चारू भाग विशाल पहाड़ छैक । ओकर जल एकदम शीतल छैक । सरोवरक बीचमे एकटा स्वर्ण-कमल छैक । स्वर्ण-कमल तोड़लाक बाद मंदिरक घंटी बाजि उठत । घंटी बजितहि अहाँकेँ माँ कालीक मंदिरक बाट भेटत । मंदिरमे माँ कालीक चरणमे ओ स्वर्ण-कमल चढ़ा देबैक । ओहि ठाम माँ कालीक आशीर्वाद स्वरूप जे किछु भेटत, से ल' क' आपस आबि जायब । तखन आगूक कार्यक्रम तय होयतैक ।''

महात्माजी राजकुमारकेँ एकटा तलवार देलथिन्ह आ कहलथिन्ह, ''एकर उपयोग आवश्यकता भेने करब । एहिसँ सब बाधा कटि जायत । एकदम निर्भीक रहब । मनमे डर कखनो नहि करब ।''

प्रायः सब बच्चा हाफी कर' लागल आ बेरा-बेरी सूति रहल ।

5.

पाँचम दिन बाबीकेँ ओछाइन पर अबितहि रानी पूछि देलक, "बाबी ! राजकुमार सुजीतक माय-बाबूकेँ किएक जहलमे द' देलकन्हि ? हुनका सभक की कसूर छलन्हि ?"

बाबी बजलीह, "ओ दुनू रानी नयनावतीक बाटमे बाधक छलाह। हुनका मोनक मोताबिक नहि चलैत छलथिन्ह। तेँ हुनका दुनूकेँ जहलमे ध' देलकन्हि।"

विमला बजलीह, "बाबी ! आब राजकुमार सुजीत कत' जयताह आ की करताह ?"

बाबी पुनः बजलीह, "राजकुमार सुजीतक कोनो समाचार नहि पाबि राणा साहेब आ रानी सुनंदा सदैव चिंतित रहैत छलीह। रानी सुनंदाक खायब-पीयब, पूजा-पाठ सब छुटि गेलनि। राणा साहेब सेहो राज-काजमे ओतेक रुचि नहि लैत छलाह, जतेक कि पहिने लैत छलाह। बुझल जाय तँ एक तरहेँ विरक्ति भ' गेल छलन्हि। राज-काजक सबटा भार रानी नयनावती आ सेनानायक शमशेर सिंह पर छलन्हि। रानी नयनावती शमेशर सिंहक सहमतिसँ अपन भाय जालिम सिंहकेँ सेहो बजा लेलन्हि। पहिने रणवीर सिंह एहि लेल तैयार नहि होइत छलाह। ओ जालिम सिंहक चरित्र आ स्वभावसँ परिचित छलाह। जालिम सिंहक चरित्र नीक नहि छलन्हि। ओ प्रजाकेँ प्रजा नहि, अपितु अपन गुलाम बुझैत छल, ओकरा सभक बहु-बेटीक आबरूक संग खेलाइत छल। एतेक बुझितहुँ राणा साहेब विवश छलाह। ओ रानी नयनावतीक गप्प मे आबि गेलाह, एहि लेल जे आब ओ अपनाकेँ राज-काजक लेल सक्षम नहि बुझैत छलाह। तकरे फायदा रानी नयनावती उठा रहल छलीह।

एक दिन सायंकाल राणा साहेब बगीचामे घुमि रहल छलाह। हुनक एकटा विश्वस्त सिपाही आबि राणा साहेबकेँ गोड़ लागि एक कातमे ठाढ़ भ' गेल। राणा साहेब पुछि देलथिन्ह, "नगरक की हाल-चाल अछि ? प्रजा लोकनि ठीक-ठाक छथि ने ?"

ओ सिपाही बाजल, "सरकार ! प्रजाक हाल बड खराप अछि। एक तँ राजकुमारक दुःख आ ऊपरसँ जालिम सिंहक कहर। लोक धीरे-धीरे जालिम सिंहक अत्याचारसँ सुमेरूगढ़ छोड़ि रहल अछि। एहि ठाम ककरो ईज्जति-आबरू बाँचब कठिन छैक। ओ प्रजासँ जबरन दुगूना कर वसूली क' रहल अछि। जँ केओ विरोध करैत अछि, तँ ओकरा निर्वस्त्र क' गाम-शहरमे घुमाओल जाइत अछि। एहि दण्डमे स्त्री-पुरुषक कोनो विचार नहि कयल जाइत अछि। सभक संग एके रंगक व्यवहार। लोक अहाँक दुःखसँ दुखित भ' विद्रोह नहि करैत अछि। मुदा विद्रोहक धूआँ उठि रहल अछि। ओकरा अधिक दिन धरि रोकल नहि जा सकैत छैक।

राणा साहेब ओहि सिपाहीकेँ बुझा-सुझाक' विदा कयलन्हि आ नयनावतीकेँ बजाक' सब किछु पुछलथिन्ह।"

नयनावती बजलीह, "एहन तँ कोनो गप्प नहि छैक। अपनेकेँ के बाजल अछि, तकर नाम तँ कहल जाए ?"

राणा साहेब कहलथिन्ह, "अहाँ नाम बुझिक' की करब ?' जँ ई गप्प सत्य होमए, तँ एहिपर अंकुश लागबाक चाही। जँ असत्य होमए, तँ जेम्हरेसँ सुनल अछि, ओम्हरेसँ निकालि दिऔक।"

नयनावती बजलीह, "से तँ सत्ये कहल अपने, मुदा ई तँ हमर आ हमरा भायक अपमान सेहो ने भेल। जखन एहन कोनो गप्पे नहि अछि, तखन एहन गप्प बहरायल कोना ? ई तँ ककरो धृष्टता सेहो भ' सकैत अछि। अहाँकेँ जे केओ एहन गप्प बाजल, ओकरा ई प्रमाणित करबाक चाही।"

राणा साहेब कहलथिन्ह, "ओना तँ बिना आगिक धूआँ नहि उठैत छैक। तखन किछु भ्रमवश सेहो भ' सकैत छैक। तेँ एहिपर सजग रहब आवश्यक अछि। जालिम सिंह केहन लोक छथि, से तँ हमहूँ जनितहि छियन्हि।"

नयनावती बजलीह, "जखन अहीँ घरक लोक भ' क' ओकर खिधांश करबैक, तखन बाहरक लोक किएक नहि करतैक ?"

राणा साहेब बजलाह, ''अहाँ ई किएक बिसरि जाइत छी जे हम एहि ठामक राजा सेहो छी । प्रजाक सुख-शांतिक व्यवस्था करब हमर कर्त्तव्येटा नहि, अपितु जिम्मेवारी सेहो अछि । जाहि राजमे प्रजा क्लेशित रहतैक, ओकर राजा निश्चित रूपेँ नरकक वास करत । एकर उल्लेख कतेको धार्मिक ग्रंथमे कयल गेल अछि । दोसर गप्प ई जे गरीबकेँ सतौनिहार गलि जाइत अछि, जेना मुइल खालक सांससँ लोह भस्मीभूत भ' जाइत अछि । तेँ हम कहब जे जालिम सिंहकेँ बरजू । ओ ककरो नहि थीक । एहेन लोक ककरो नहि होइत अछि । अहाँक भाय आततायी अछि, जकर कोनो जाति वा धर्म नहि होइत छैक । जहाँ धरि हमरा जानकारीक प्रश्न अछि, तँ ओ कखनहुँ असत्य नहि भ' सकैत अछि ।"

रानी नयनावती तँ बुझैत छलीह जे राणा साहेबक गप्प एकदम सत्य छन्हि । तथापि ओ प्रत्यक्ष रूपेँ ओकरा मानबाक लेल तैयार नहि छलीह । जँ लोक अपन दोष मानि लिअए तँ सबटा झगड़े खतम भ' जायत मुदा से माननिहार केओ नहि । रानी नयनावती सेहो अपन बात ऊपर करबाक लेल बजलीह, "की दुर्गुण अछि, हमरा भाय मे ?"

राणा साहेब बजलाह, "एक-दूटा रहए तखन ने गनायब, अनगिनती अछि ।"

रानी नयनावती कहलथिन्ह, "राज-काज चलेबाक लेल तँ कठोर बनब आवश्यके छैक । बेशी दया कयने प्रजा माथ पर चढ़ि जाइत छैक । तेँ ओकरा अपन ओकतिमे राखब आवश्यक छैक । सैह तँ हमर भाय क' रहल अछि ।" नयनावती तुरंत शमशेर सिंहकेँ बजौलन्हि आ पुछलथिन्ह, "अहाँ एहि राज्यक सेनानायक थिकहुँ ने ? अहाँ सुतले रहैत छी आ कि जगलो रहैत छी ? अहाँक राजमे की भ' रहल अछि, किछु पता अछि ?"

शमशेर सिंह बजलाह, "एहि ठाम तँ सब किछु अहीँक निर्देशानुसार चलि रहल अछि ।"

नयनावती बजलीह, "जखन सब किछु ठीके-ठाक अछि, तखन राजा साहेबक कान भैयाक विरुद्ध के भरैत अछि ? एहन दुःसाहस के

कयलक ? ओहि व्यक्तिकेँ शीघ्र हमरा सोझाँ उपस्थित करू अथवा आश्वासन दिअ' जे काल्हुक सूर्यक ओ दर्शन नहि करत । शमशेर सिंह तुरंत बहरयलाह आ ओकर पता लगायब शुरू कयलनि । ओहि प्रहरीमे तँ अधिकांश लोक शमशेरे सिंहक छलाह । तखन एहि ठाम आयल तँ के आयल ? ओहिमे सँ एकटा प्रहरी बाजल, "हजूर ! जखन राणा साहेब बागमे घुमि रहल छलाह, तँ हुनका संगे चन्दन सिंह सेहो घुमि रहल छल । दुनू गोटेमे बड़ी काल धरि किछु गप्प-शप्प भेलन्हि, मुदा की गप्प भेलन्हि से हम सुनि नहि सकलहुँ । हम ओहि स्थानसँ बहुत दूर छलहुँ । यावत् सहटि क' लग अयलहुँ, तावत् ओ चल गेल । ओकरा गेलाक बाद राणा साहेब गम्भीर मुद्रामे छलाह । तेँ बुझाइत अछि जे कोनो गम्भीरे गप्प-शप्प भेल होयतनि ।

शमशेर सिंह बुझैत छलैक जे चन्दन सिंह एहि राज्यक आ राणा साहेबक समर्पित सिपाही थीक । ओ अवश्य जालिम सिंहक विरुद्ध राणा साहेबकेँ भड़कौने होयतन्हि । ओना राणा साहेब तँ आब किछु करबाक जोगरक छथि नहि मुदा हुनका पर प्रजा आँखि मूनि क' विश्वास करैत छनि । हुनका संग किछु कयने विद्रोह भ' सकैत अछि । एहिसँ नीक जे चंदन सिंहकेँ बाटसँ हटा दी । ने ओ रहत आ ने आगि लगाओत । एहि तरहेँ शमशेर सिंह राणा साहेबक कतेको विश्वस्त सिपाहीकेँ अपना बाटसँ हटा चुकल छल । राजाकेँ बहुतो कान होइत छैक । खासक' एहन राजाक जे सूचना देनिहारक नाम गुप्त रखैत होथि । चन्दन सिंहक संग जे किछु भेलैक, तकर सूचना राणा साहेबकेँ भेटि गेलन्हि । ओ शमशेर सिंहकेँ बजौलनि आ कहलथिन्ह, "एखन हम जीबैत छी कि मरि गेलहुँ ?"

शमशेर सिंह बाजल, "सरकार ! एहन गप्प किएक करैत छी ? हमरासँ कोन अपराध भेल अछि ?"

राणा साहेब पुछलथिन्ह, 'चंदन सिंहक संग जे किछु भेलैक, से किएक भेलैक आ ओहिपर अहाँक की कारबाइ भेल ?"

शमशेर सिंह बाजल, "एहि विषयमे हमरा कोनो जानकारी नहि अछि । हम पता लगाक' कहैत छी ।"

राणा साहेब बजलाह, "सौंसे नगरमे शोर अछि आ अहाँकेँ पता नहि अछि । अहाँ कोन सेनानायक छी ?"

शमशेर सिंह, 'सरकार ! सहीमे हमरा पता नहि अछि । हम तँ राजकुमार सुजीतकेँ तकबाक लेल आठ दिनसँ बाहर छलहुँ । हम पता लगाक' अपनेकेँ कहैत छी ।"

राणा साहेब बजलाह, "हम देखि रहल छी । अहाँ सब आब हमरहि संगे खेल खेला रहल छी । जल्दीसँ पता लगाक' हमरा सूचित करू । शमशेर मुड़ी लटकौने चल गेल आ रानी नयनावतीकेँ सब गप्प कहलकन्हि । संध्याकाल रानी नयनावती, शमशेर सिंह आ जालिम सिंह तीनूक बैसार भेल । बड़ी कालक घमर्थनक उपरान्त निश्चय कयल गेल जे राणा साहेब दुनू प्राणीकेँ कारागारमे द' देल जयबाक चाही । मुदा एकर भनक जँ प्रजाकेँ लागि जयतैक तखन तँ विद्रोह भ' सकैत अछि । तेँ हुनकहि कक्षकेँ कारागारक रूप द' देल गेलनि जत' कोनो आन गोटेक प्रवेश वर्जित क' देल गेल । हुनक भोजन-विश्राम सब ओही कक्षमे होयबाक जोगाड़ क' देल गेलनि । घुमबाक लेल जे बाग-बगीचा जाइत छलाह, सब बन्न क' देल गेलनि । ओहि ठाम शमशेर सिंह आ नयनावतीक विश्वस्त लोक प्रहरीक रूपमे राखल गेल । राणा साहेबक जे खास प्रहरी सभ छलन्हि, जकरा सभकेँ ओ अपना इच्छासँ रखने छलाह, तकरा सभकेँ कोनो-कोनो आरोप लगाक' हटा देल गेलैक आ ओकरो सभकेँ कारागारमे बन्न क' देल गेलैक । राणा साहेबक घोड़ाकेँ भगा देल गेलैक आ सगरे शोर करबा देल गेलैक जे राणा साहेब रानी सुनंदाक संग राजकुमारक वियोगमे जंगल दिश चल गेल छथि । हुनक तक्का-हेरीक लेल किछु सिपाहीकेँ पठा देल गेलैक जाहिसँ प्रजाकेँ ई विश्वास भ' जाइक जे सहीमे राणा साहेब पुत्र वियोगमे राज-पाट छोड़ि जंगल चल गेलाह । आब ओ सब निर्विघ्न आ निरंकुश भ' सत्ता-सुख भोग' लगलाह ।

राणा साहेब प्रहरीकेँ बजाक' कहलथिन्ह, "हमरा कनेक बागमे घुमबाक इच्छा भ' रहल अछि ।"

प्रहरी बाजल, "सरकार ! अहाँ पर बाहरमे खतरा अछि, तेँ अपने बाहर नहि जा सकैत छी । हमरा इएह आदेश भेटल अछि ।"

राणा साहेब पुछलथिन्ह, "तोरा एहन आदेश के देलथुन्ह ?"

प्रहरी बाजल, "सरकार ! ई छोटकी रानी साहेबक आदेश छन्हि ।"

राणा साहेब बुझि गेलाह जे हुनका घरहिमे बंदी बना लेल गेलनि अछि । अनायास हुनका एकटा साधुक वचन मन पड़ि गेलन्हि । आइसँ बीस वर्ष पूर्व राणा साहेब एक गोटेकेँ मिथ्या आरोपमे कारागारमे रखबाक आदेश देने छलाह । ओ व्यक्ति साधु छल मुदा रंग-रूपसँ ओ साधु प्रतीत नहि होइत छल । सेनानायक शमशेर सिंह ओकरा पर आरोप लगौने छलैक जे ई दोसर राजक गुप्तचर थीक । एहिपर राणा साहेब अपन निर्णय लेने छलाह । ओ व्यक्ति कहने छलन्हि, "हे राजा ! एहिमे हमर कोनो दोष नहि अछि । हम साधु-महात्मा छी, कोनो राजक गुप्तचर नहि । अहाँ नीकसँ एकर जाँच-पड़ताल करबा लिअऽ ।''

मुदा राणा साहेब अपना निर्णय पर कायम रहलाह । ओ व्यक्ति बहुत अनुनय-विनय कयलक, मुदा सबटा बेकार साबित भेलैक । तखन ओ व्यक्ति बाजल, "कोनो बात नहि, ईश्वरक इएह इच्छा छन्हि । हम तँ अहाँकेँ बचयबाक बहुत कोशिश कयलहुँ मुदा अहाँ बचि नहि सकलहुँ । आइसँ बीस वर्षक बाद बिना कोनो अपराधक अहूँ बंदी बनाओल जायब आ ओ व्यक्ति जे हमरा आरोपी बनौलक अछि ओकरो एहन गति होयतैक जे ओकर मृतक देह चीन्हल पर्यन्त नहि जयतैक ।

साधुक गप्प सुनि राणा साहेब घबरा गेलाह आ बहुत तरहेँ अनुनय-विनय कयलथिन्ह । साधु बजलाह, 'होनीकेँ के रोकि सकैत अछि । हमर की अपराध छल ? तथापि हम एकटा रहस्यक गप्प कहैत छी । अहाँक बालक परम यशस्वी होयताह । ओएह अहाँकेँ एहि झमेलासँ बाहर करताह । साधुक गप्पसँ राणा साहेबकेँ कनेक तकलीफो भेलनि आ कनेक खुशी सेहो । खुशी एहि लेल जे साधु महाराज पुत्रक गप्प कहलथिन्ह । ओहि समयमे राणा साहेबकेँ कोनो संतान नहि छलन्हि आ ने रानी नयनावतीसँ विवाहे भेल छलन्हि ।

किछु दिनक बाद रानी नयनावती मंत्री, दरबारी आ नगरक किछु प्रबुद्ध लोकक संग एकटा बैसार कयलन्हि । सभक बीच प्रस्ताव राखल गेल जे जखन राणा साहेबक कोनो अता-पता नहि छन्हि, राजकुमार सुजीतक सेहो कोनो खबरि नहि छन्हि, एहनमे सुमेरुगढ़क गद्दी कतेक दिन धरि खाली राखल जायत ? ओना तँ सब काज रानी नयनावती आ जालिम सिंह देखिये रहल छथि । किएक ने अस्थायी रूपेँ हुनके दुनूकेँ ई भार देल जान्हि ? किछु एहन निर्णय लेब' पड़ैत छैक जाहि पर राजाक अनुमति आवश्यक होइत छैक । देशकेँ बाहरी शत्रुसँ रक्षाक लेल वा आवश्यकता पड़ने कोनो आक्रमणक लेल राजाक अनुमति आवश्यक होइछ, कारण ओहिसँ होमए बला फायदा वा नुकसानक असरि सम्पूर्ण राज्ये पर पड़ैत छैक । एकटा गुप्तचर सूचना देलक अछि जे रामगढ़क राजा सुमेरुगढ़ पर चढ़ाइ करबाक योजना बना रहल अछि । ओना ओकर शक्ति कम छैक, तथापि ओ गद्दी सून रहबाक फायदा उठाब' चाहैत अछि । एहन स्थितिमे सुमेरुगढ़क लोककेँ किछु सोचबाक चाही । आन लोक सभ चुप्पे रहथि वा किछु बजितथि, ताहिसँ पूर्व नयनावतीक इशारा पर एकटा दरबारी बजलाह, 'एखन धरि राणा साहेब वा राजकुमार सुजीतक कोनो खबरि नहि आयल अछि । तेँ यावत् ओ लोकनि आपस नहि अबैत छथि, तावत् राज्यक देखरेखक भार कुमार जालिम सिंहकेँ देल जयबाक चाहियनि, किएक तँ ओहो खानदानी राजाक पुत्र छथि आ रानी नयनावतीक भाय सेहो । एखन वर्त्तमानमे ओएह राज्यक देख-रेख क' रहलाह अछि । हमरा बुझने एखन हिनकासँ उपयुक्त दोसर केओ नहि होयताह ।''

एहि प्रस्ताव पर बेसी लोककेँ आपत्ति छलनि । ओ सब जालिम सिंहक कृत्य देखि चुकल छलाह, मुदा किछु बजबाक मतलब छलैक नयनावतीसँ झंझट बेसाहब । तकर प्रतिफल की होइत, सब केओ बुझितहि छलाह । जालिम सिंह पहिनहुँ तँ सब किछु करितहि छलाह, मुदा अनधिकृत रूपेँ रानी नयनावतीक कृपापात्र बनिक' । आब ओ अधिकृत शासक बनि गेलाह । जे व्यवस्था राणा साहेबक समयमे छलैक, सब बदलि गेलैक । सभक अमन-चैन खतम भ' गेलैक । प्रजा त्राहिमाम् क'

रहल छलैक, मुदा प्रजा कहतैक तँ ककरा ? जे सुख-सुविधा राणा साहेबक समयमे छलैक, तकर सर्वथा अभाव भ' गेल छलैक । नयनावती एकदम निरंकुश भ' गेल छलीह । हुनका सोझाँ बजबाक साहस ककरो नहि छलैक । किछु दिन तँ नयनावतीक खूब चलती रहलनि । ओ जे चाहैत छलीह, सएह होइत रहलैक, मुदा किछु दिनक पश्चात् शमशेर सिंह आ जालिम सिंह दुनूक पकड़ राज्यक सत्तापर भ' गेलैक । जालिम सिंह जूआ, शराब आ व्याभिचारमे लिप्त रहैत छल आ शमशेर सिंह राजकोष लुटबामे । जालिम सिंहकेँ समय पर केवल अपन खोराक भेटि जाइत छलैक । ओहिसँ बेशी किछु नहि । शमशेर सिंह ओकर सब इच्छाक पूर्ति करैत छलैक आ रानी नयनावती आब दूधक माँछी बनि गेल छलीह ।

विमला पुछलक, "ऐँ यै बाबी ! रानी नयनावती कोना दूधक माँछी बनि गेलीह ? जालिम सिंह तँ हुनकर भाय छलन्हि जकरा लेल ओ अपन पतिकेँ जहल पठबा देलन्हि ।

बाबी कहलथिन्ह, "सत्ता आ स्वार्थमे अन्योन्याश्रय सम्बन्ध होइत छैक । बहुत कमे लोक एहन होइत छथि जे सत्तामे रहितहुँ स्वार्थसँ दूर रहैत छथि आ जालिम सिंह तँ सब दुर्गुणसँ परिपूर्ण छलैक । ओकरा कार्य-कलापमे केओ बाधक नहि बनए, एकरहि लेल ओ नयनावतीक तिरस्कार कयलक । सत्ता सम्हारितहि हुनकर कोनो मोजर नहि रह' देलकन्हि । पतिकेँ छोड़ि जे कोनो नारी दोसराक आसरा धरैत अछि ओकर इएह दुर्गति भेलैक अछि । पतिक आदेशक विरुद्ध गेने स्वयं जगजननी भवानीकेँ आगिमे जर' पड़लन्हि ।

6.

आइ खिस्साक छठम दिन अछि । ओकर रोचकता बढ़ि गेने बच्चा सब सेहो बड़ बेशी उत्सुक अछि । ओना तँ बाबीक खिस्सा आधा घंटामे खतम भ' जाइत छलन्हि आ बच्चा सभ सुनिते-सुनिते सुति रहैत छल मुदा एखन पाँच दिनसँ सब प्रायः जगले रहैत छल आ बड़ ध्यानसँ खिस्साक रसस्वादन करैत छल । एतेक विस्तारसँ बाबीक ई पहिल खिस्सा

छलनि आ रोचक सेहो । सब बच्चा बाबीक बाट जोहि रहल छल । बाबी सेहो अपना आसन पर अयलीह आ आजुक खिस्सा शुरू कयलन्हि ।

शमशेर सिंहक मदतिसँ जालिम सिंह सुमेरुगढ़क गद्दी हासिल कयलन्हि । शुरूमे तँ कमान रानी नयनावतीक हाथमे छलन्हि मुदा ककरो स्वभाव बदलल नहि जा सकैत छैक । जालिम सिंह सुमेरुगढ़क राजा अवश्य छलाह मुदा हुनका राज-काजसँ कोनो मतलब नहि छलनि । ओ तँ कनक आ कामिनीक वशीभूत छलाह । राज-काजक भार शमशेर सिंह पर छलन्हि ।

सुमेरुगढ़मे नगरसँ हटिक' एकटा आदिवासीक गाम छलैक । ओहि ठाम करीब पाँच सय घर आदिवासी छलैक । ओ सभ खेती-बाड़ी आ शिल्प कार्यमे दक्ष छल । ओहि ठाम वर्षमे एकटा मेलाक आयोजन होइत छलैक । मेलामे विभिन्न तरहक जानवर यथा हाथी, घोड़ा, बड़द, गाय, महिष आदिक खरीद-बिक्री होइत छलैक । बच्चा सभक लेल झूला, नृत्य, सरकस, सिनेमा आदिक प्रबंध छलैक । काष्ठ सामग्री यथा पलंग, टेबुल, कुर्सी, आलमारी आदि उपलब्ध छलैक, सेहो अनेक प्रकारक नक्काशीक संग । दूर-दूरसँ सामग्री किननिहार आ बेचनिहार अबैत छलाह । ओहिमे राजा वा हुनक प्रतिनिधिकेँ उपस्थित होयब औपचारिकता छलैक । ओहिसँ होम'बला आमदनी राजकोषमे जाइत छलैक । ओहिमे आदिवासी लोकनिक सामूहिक विवाह सेहो होइत छलैक । ई सब राजाक समक्ष होइत छलैक । तेँ ओहि ठाम जालिम सिंहक जायब आवश्यक छलनि, मुदा हुनका अपन काजसँ पलखति कत' ? ओ कोनो बहन्ना बना लेलनि आ रानी नयनावतीसँ राजक प्रतिनिधित्व करबाक आग्रह कयलनि । रानी नयनावती दुनू बेटीक संग मेलामे गेलीह किएक तँ आब राजक भार हुनकहि दुनूक ऊपर पड़बाक छलनि । तेँ धीरे धीरे सब किछु सिखा रहल छलथिन्ह । संगमे सेनानायक शमशेर सिंह सेहो छलाह । कमला आ विमलाकेँ मेला घुमबाक उत्कट इच्छा भेलन्हि । ओ सब कहिओ राजमहलसँ बहरायलो नहि छलीह । तेँ मेलाक चमक-दमक देखि अपनाकेँ रोकि नहि सकलीह । रानी नयनावती अपने तँ नहि गेलीह । ओ कतेको बेर

राणा साहेबक संग एहन-एहन कतेको ठाम घुमि चुकल छलीह । हुनका लेल ई पहिल अवसर नहि छलन्हि आ राज्यक प्रतिनिधि होयबाक करणे मंच सेहो नहि छेड़ि सकैत छलीह ।

राजा-रानीक एकटा मर्यादा होइत छैक जकर निर्बाह करब हुनका लेल आवश्यक छलन्हि । ओ सेनानायक शमशेर सिंहकेँ इशारा कयलथिन्ह । ओ तँ स्वयं कतेको दिनसँ एही अवसरक ताकमे छलाह । कमला आ विमला दुनू जुआन भ' गेल छलीह । वयस सेहो सतरहकेँ पार क' गेल छलन्हि । आब ओ दुनू बहिन विवाह योग भ' रहल छलीह, मुदा हुनका लेल वर ताकत तँ के ? वर तकनिहार सेनानायक शमशेर सिंह स्वयं कतेको दिनसँ हुनक जुआनी देखि नजरि गड़ौने छल । ओना राज परिवार पर ककरो आँखि उठयबाक हिम्मत तँ नहि होइत छैक, मुदा इहो तँ सेनानायके छलाह आ माथ पर जालिम सिंहक हाथ सेहो छलन्हियेँ । जँ नयनावती मेलामे एसकरहि अबितथि, तँ ओ कमला आ विमलाकेँ घरसँ उठबा लैत, जे ओकर योजना छलैक । आब संगहि देखि ओकर योजना बदलि गेलैक । ओ एकटा सिपाहीक संग दुनू बहिनकेँ पठा देलक आ अपने रानीक सुरक्षामे रहि गेल । ओहि सिपाहीक कानमे शमशेर सिंह किछु कहि देलक । ओ मेला घुमयबाक क्रममे कमला आ विमलाकेँ शर्बतमे कोनो मादक द्रव्य मिलाक' पिआ' देलक । ओ दुनू बेहोश भ' गेलीह । हुनका दुनूकेँ उठाक' ओ सिपाही अतिथिशालाक एकटा कक्षमे, जकर निर्देश शमशेरसिंह देने छलाह, बन्न क' देलकनि । पुनः आबि एकर सूचना शमशेर सिहंकेँ देलक । तावत् मेलामे हुड़दंग भ' गेलैक । सब केओ सब दिश भाग' लागल । कतेको गोटे अपना परिजनसँ बिछुड़ि गेलाह । कतेको घायल भ' अस्तपाल पहुँचि गेलाह । ककरो केओ सुधि लेनिहार नहि । सब अपने-आपमे बेहाल । शमशेर सिंह रानी नयनावतीसँ कहलक, ''रानी जी ! मेलामे भगदड़ भ' गेलैक अछि । हम दसटा सिपाहीकेँ पठा देने छियैक जे कमला आ विमलाकेँ सुरक्षित ल' अनतन्हि । अहाँकेँ महलमे पहुँचाक' हम स्वयं हुनका लोकनिक ताक-क्षेम करबन्हि । हमरा सूचना भेटल अछि जे दुनू बहिन कतहु बिछुड़ि गेल छथि ।

रानी नयनावती बजलीह, "पहिने कमला आ विमलाके ताकि क' लाउ, तखन हम महलक लेल विदा होयब ।"

शमशेर सिंह बाजल "रानी सरकार ! अहूँके तँ कतौ असुरक्षित नहि छोड़ल जा सकैत अछि । हमरा तँ एहि बातक तहकीकात सेहो ने करबाक अछि जे ई हुड़दंग के कयलक आ कोन कारणसँ भेलैक, के एकर सरगना अछि ? एकरा पाछाँ ओकर की अभिप्राय छलैक ? जाधरि अपने एहि ठाम रहबैक, ई सम्भव नहि होयतैक । हम अहाँके छोड़ि कतहु नहि जा सकैत छी । राज्य आ राजपरिवारक लेल हमरहु तँ किछु दायित्व अछि । ओकर अवज्ञा कयने राजदण्डक भागी बनि सकैत छी । तेँ जाधरि हम अहाँके सुरक्षित महलमे नहि पहुँचायब, हम दोसर काज नहि क' सकैत छी !

अंततः रानी नयनावती आपस महलमे आबि गेलीह । शमसेर सिंह कमला आ विमलाकेँ तकबाक बहन्ने अतिथिशाला पहुँचि गेलाह । ओहि ठाम कमला आ विमला बेहोश छलीह । हुनका दुनूक देहक वस्त्र अस्त-व्यस्त छलनि । शमशेर सिंह हुनका दुनूक जुआनीक तरंग देखि अपनाकेँ रोकि नहि सकलाह । ओ हुनका दुनूक बेहोशीक फायदा उठाक' विभिन्न तरहेँ अपन वासनाक भूख मेटौलन्हि । ओहि सिपाहीकेँ किछु उपहार द' क' ओतहि राखि अयलाह । ओ सिपाही कमला आ विमलाकेँ भोजन आदि पहुँचाबैत रहल । दवाइक असर कम भेलैक । दुनू बहिनकेँ होश आबि गेलनि । ओ दूनू अपन देहक वस्त्रकेँ अस्त-व्यस्त देखि आ देहक दुर्दशाक अनुभव करैत महसूस कयलनि जे हुनका दुनूक संग किछु अनीति भेलनि अछि । मुदा ई अनीति के कयलक आ कोना भेल, एहिसँ ओ दुनू अनभिज्ञ छलीह । पुछला पर सिपाही कहैत छलैक जे अहाँ सब एकटा दोसर राजमे बंदी बनाक' राखल गेल छी । जखन शमशेर सिंह आबथि तँ हुनका दुनूकेँ ओएह शर्बत पिआ देल जाइत छलन्हि । ओकर बाद शमशेर सिंह ओहि कक्षमे जाइत छलाह । ई क्रम करीब छओ मास धरि चलैत रहल । जखन नयनावती पूछथि, तखन शमशेर सिंह कहैत छलाह "हम एखन दुनू कन्याकेँ तकबामे लागल छी । ओहि भगदड़मे अहाँक बेटी थोड़हि हेरायल छथि । ओहिमे तँ सैकड़ो लोक अपन परिजनसँ बिछुडि गेल अछि ।"

एहि घटनाक लेल सभकेँ छगुन्ता लागल छलैक जे आखिर ई भेलैक तँ कोना ? एहि लेल मने-मन आदिवासी समाज अपना-आपकेँ दोषी मानैत छल । ओहो सब एहि विषय पर गहन चिंतन करब शुरू कयलक । एकटा आदिवासी जकर नाम राखाल मुरमुर छलैक, ओहो एहि अभियानमे छल । ओ खूब वलिष्ठ आ निर्भीक छल । ओ एहि रहस्यकेँ बुझि गेल । ओकरा शमशेर सिंहसँ पटरी नहि खाइत छलैक । ओ तीन-चारि गोटेक संग दरबार पहुँचल । ओहि ठाम एकटा सिपाही पुछलकैक "अहाँ सब कत' आयल छी ?"

राखाल मुरमुर बाजल, "हम सब रानी साहेबसँ भेट कर' चाहैत छी ।"

सिपाही बाजल, "अभिप्राय ?"

राखाल बाजल, "राजकुमारीक विषयमे रानी साहेबकेँ किछु जानकारी देबाक अछि ।"

ओ सिपाही एकरा सभकेँ बैसाक' शमशेर सिंहकेँ सूचित कयलक । शमशेर सिंह ओकरा सबकेँ बंदी बनाक' दरबारमे उपस्थित कयलक आ जालिम सिंहसँ बाजल, "सरकार ! ओहि मेलामे हंगामा केनिहार आर केओ नहि, इएह सब अछि । एकरा सभक संगे आर लोक छल, जे सभ भागि गेल । इएह पाँचटा पकड़ायल अछि । एकरहि सभक हुड़दंगक कारणे राजकुमारी एखन धरि निपत्ता छथि । एकरा सभकेँ कठोरसँ कठोर सजा देल जयबाक चाही जाहिसँ पुनः दोसर केओ एहन कार्य नहि करए ।

राखाल मुरमुर कतबो अपन बात रखबाक कोशिश कयलक मुदा जालिम सिंह किछु सुनबाक लेल तैयार नहि छल । ओ तँ मात्र शमशेर सिंहक भाषा बुझैत छल, दोसर ककरो नहि । ओकरा सभकेँ रानी नयनावतीक सोझाँ जहल पठा देल गेलैक । रानी नयनावती बाजल छलीह, "ओ की कह' चाहैत अछि, कनेक सुनि तँ लिऔक ।"

जालिम सिंह कहलथिन्ह, "राजा हम छी कि अहाँ ? हमरा जे किछु सुनबाक छल से सुनि लेलहुँ । एहि घटनासँ रानी नयनावतीकेँ अपन

ओकाति बुझा गेलन्हि आ आदिवासी समाज सेहो जालिम सिंह-शमशेर सिंहक विरोधी बनि गेल आ मौकाक तलाशमे जुटि गेल ।

एक दिन एकटा सिपाही आयल आ रानी नयनावतीक कानमे किछु कहलक । रानी नयनावती तुरंत ओकरा संग विदा भ' गेलीह । पता नहि ओ सिपाही नयनावतीक हितैषी छलैक वा शमशेर सिंहक । रानी नयनावती ओहि सिपाहीक संग अतिथिशाला पहुँचलीह । ओहि ठाम जे किछु दृश्य देखलनि से देखि ओ अवाक् रहि गेलीह । ओ तामसे थरथरा रहल छलीह । कमला आ विमाल दुनू बेवाक् बनल केवल कानि रहल छलीह । बुझबामे कोनो भाङ्गठ नहि रहलनि जे ई सब शमशेर सिंहक करतूत थीक । हुनका सपनहुँमे एहन उम्मेद नहि छलनि जे शमशेर एतेक पैघ विश्वासघात करत । दुनू बहिन गर्भवती छलीह । नयनावती महल आबि सब किछु जालिम सिंह केँ कहलथिन्ह । जालिम सिंह बजलाह, "हमरा सब किछु बुझल अछि । ओ सभ मेलामे हेरा गेल छलीह । पता नहि कत'-कत' गेलीह आ की की कयलन्हि । शमशेर सिंह कोनो अनर्गल नहि कयलक अछि । ओ तँ हमरा सभक इज्जतिकेँ बचाक' रखलक अछि । एहन परिस्थितिमे के भला लोक ओकरासँ विवाह करैत । एहि बोझकेँ कतेक दिन धरि माथ पर राखब । आब एकरा उतारबाक समय आबि गेल अछि । चुपचाप एकरा दुनूकेँ बिसरि जाउ ।''

नयनावतीकेँ एहिसँ बड़ दुःख भेलन्हि, मुदा ओ कइओ की सकैत छलीह । अपनहि खूनल खाधिमे ने खसल छलीह । जे किछु क' सकैत छलाह, हुनका तँ पहिनहि शिथिल क' देने छलथिन्ह । अंततः चुपचाप मन मारिक' भगवान भरोसे रहि गेलीह ।

चंदा बजलीह, ''अरे बाप रे बाप । बाबी ! नयनावतीकेँ अपन करनीक फल एतेक जल्दी भेटि गेलनि ? ठीके लोक सभ कहैत अछि ''जेहने करनी, तेहने भरनी" ।

बाबी बजलीह, "देखैत त' रहह । सबकेँ अपने करनीक फल भेटतैक । भगवान कतौ गाम गेल छथिन । ओ सब किछु देखैत छथिन । तेँ कहैत छियह जे नीक काज करैत जाह आ अधलाह दिस ताकह जुनि ।"

7.

आइ खिस्साक सातम दिन छलैक । सब केओ अपन-अपन जगह पकड़ि लेने छल । तावत् बाबी सेहो आबि गेलीह । रानी पुछि बैसल ''बाबी ! राजकुमार सुजीतक की भेलन्हि, ओ कत' गेलाह आ की कयलन्हि ?"

बाबी कहलथिन्ह, "आइ तोरा सभकेँ इएह सुनबैत छियह जे महात्माजीसँ विदा लेलाक बाद राजकुमार कोना अपना यात्रा पर आगू बढ़लाह ।"

राजकुमार सुजीत महात्माजीक देल तलवार ल' क' आगू बढ़लाह । कनेक दूर गेलाक बाद ओ पहिल पहाड़ पर चढ़लाह । ओहिपर वातावरण बड़ सुन्नर बुझना गेलन्हि । विविध प्रकारक फूलक सुगंधसँ वातावरण गमगमा रहल छलैक । शीतल मंद हवा चलि रहल छलैक । वातावरणमे मदहोशी छलैक । हुनक इच्छा किछु क्षण विश्राम करबाक भेलनि मुदा महात्माजीक आदेश छलनि, "कतहु ठहरबाक नहि अछि ।" ओ आगू बढ़ैत रहलाह । पहाड़सँ उतरलाक बाद समतल भूमि पर एकटा धार बहि रहल छलैक । ओकर जल एकदम निर्मल छलैक । सम्भवतः ओकर स्रोत ओही पहाड़सँ बहरायल छलैक । राजकुमारकेँ भूख-प्यास सेहो सता रहल छलन्हि । सोचलन्हि जे एहि जलसँ पिपासा शान्त कयल जा सकैत अछि । ओ जल पीबाक लेल झुकलाह, तावत् महात्माजीक हिदायत मन पड़ि गेलन्हि । ओ धीरे-धीरे ओहि धारके पार कयलन्हि । धारमे विशेष जल नहि छलैक आ ने कोनो जलीय जंतुए । धार पार कयलाक बाद राजकुमार दोसर पहाड़ पर चढ़लाह । ओ पहाड़ फल-फूलसँ लदल छलैक मुदा ओहिपर एकहुटा चिड़ँइ-चुनमुन्नी नहि छलैक । ओहि फलकेँ देखि ककरो मन खयबाक लेल ललचि सकैत छलैक । राजकुमारक इच्छा सेहो फल खा' क' अपन क्षुधा शांत करबाक भेलन्हि । ओ एकटा फल तोड़बाक लेल हाथ बढ़ौनहि छलाह कि महात्माजीक चेतावनी कानमे गुंज्जए लगलन्हि जे कोनो वस्तुकेँ हाथ नहि लगेबाक छैक । खयबाक लेल तँ हाथ लगायब आवश्यके छलैक । ओ ठमकि गेलाह आ किछु सोचिक'

आगू बढ़ि गेलाह । पहाड़क बाद पुनः एकटा धार भेटलन्हि, जे गहीँर तँ कमे छलैक मुदा ओकर जल छलैक एकदम घोरमट्‌ठा । बुझाइत छलैक जे ओहिमे केओ जलक्रीड़ा कयने हो, मुदा दूर-दूर धरि केओ नहि छलैक । सम्भवतः ओहि ठामक कोनो वन्यप्राणी आबि ओहिमे जलक्रीड़ा कयने छल । ओ कोनो तरहेँ ओकरो पार कयलन्हि आ तेसर पहाड़ पर पहुँचि गेलाह । किछु दूर आगू बढ़लाक बाद राजकुमारक नजरि एकटा विशाल मधुमाँछीक छत्ता पर पड़लन्हि । ओहि ठाम असंख्य मधुमाँछी एहि तरहेँ उड़ि रहल छलैक जे ओकरा पार करब आसान नहि छलैक । ओकरा पार करब तँ दूर, ओकरासँ प्राण बचायबो कठिन छलैक । यावत् ओ मधुमाँछी सभ राजकुमार पर आक्रमण करैत, तावत् राजकुमार एकटा सुखायल डारिमे आगि लगाक' अपना हाथमे लेलन्हि आ ओम्हरे विदा भेलाह जेम्हरसँ मधुमाँछीक आक्रमणक संभावना छलनि । एहि तरहेँ ओ आगू बढ़ैत गेलाह । आगि आ धूआँक कारण मधुमाँछी सभ हुनक बाट छोड़ि देलकनि । तकरा बाद पुनः एकटा धार भेटलन्हि जाहिमे जल तँ नहि छलैक, मुदा एहन बुझना जाइत छलैक जे वर्षाकालमे अवश्य ओहिमे जल प्रवाहित होइत होयतैक । ओकर पाथर बड़ नोंखगर छलैक जे राजकुमारक पयरमे काँटी जकाँ गड़ि रहल छलनि । ओहि धारकेँ पार करबामे राजकुमारक पयर-लहू-लहूआन भ' गेलन्हि । कनेक कालक लेल ओ बेहोश भ' गेलाह । पुनः धड़फड़ाक' उठलाह, जेना निन्नसँ जागल होथि । आब राजकुमारक सोझाँ चारिम पहाड़ छलन्हि, जे वन्य पशुसँ भरल छल । राजकुमारकेँ ओहि ठामक वन्य प्राणी सभक गर्जना कानमे पड़ि रहल छलन्हि, मुदा ओ कनेको विचलित नहि भेलाह । हुनका लग मात्र एकेटा विकल्प छलनि । सब विघ्न-बाधाकेँ पार क' एहि धारकेँ पार करबाक । ओ निरंतर आगू बढ़ि रहल छलाह । हुनका संगमे अपन साहस आ महात्माजीक देल तलवार छलन्हि । ओ देखि रहल छलाह जे वन्य प्राणी सभ शोर करैत एम्हरसँ ओम्हर जा रहल अछि । तैओ ओ कनेको भयभीत नहि भेलाह । आगू बढ़ला पर किछु हाथीक झुण्ड अपनामे खेलि रहल छल । कनेक काल तँ राजकुमार सशंकित भेलाह अवश्य मुदा पुनः किछु सोचि आगू बढ़ि गेलाह आ एहि तरहेँ ओ निर्विघ्न ओकरो पार करैत पुनः एकटा धारमे प्रवेश कयलन्हि जाहिमे जल सेहो अथाह छलैक आ जोंकसँ सेहो भरल छलैक । एकर आभास राजकुमारकेँ तखन भेलन्हि, जखन हुनका देहमे करीब दसटा जोंक सोहरि गेलन्हि । जलसँ बहराइते ओहि जोंक सभकेँ बहार कयलन्हि । एहि तरहेँ राजकुमार चारिटा पहाड़ आ धार पार कऽ लेलन्हि । आब हुनका सोझाँ पाँचम पहाड़ छलन्हि । ओकरा पार करैत काल किछु विचित्र प्राणी सभ हुनका पर आक्रमण कयलक । एहन जन्तु सभकेँ राजकुमार आइ धरि नहि देखने छलाह । ओ जन्तु सभ देखबामे बड़ छोट बगेड़ी सनक, मुदा लोल नाम आ तीक्ष्ण कठखोधी सनक । रंग एकदम हरियर सुग्गा सनक । ओ ततेक संख्यामे छलैक, जे ककरो हिम्मत डोलि सकैत छलैक । कनेक काल धरि तँ राजकुमारो सोचमे पड़ि गेलाह जे आब हमर यात्रा अपूर्णे रहि गेल । तावत् हुनका महात्माजीक वचन मोन पड़ि गेलन्हि । 'अहाँ आगू बढ़ैत रहब । अहाँक केओ किछु नहि बिगाड़ि सकैत अछि ।'

राजकुमार पुनः साहस बटोरि हाथमे मशाल लेने आगू बढ़ि गेलाह आ ओ विचित्र जन्तु सभ पाछाँ रहि गेल । ओकर बाद जे धार भेटल, ताहिमे घड़ियाल सभ अपन डेरा जमौने छल । राजकुमारकेँ धार पार करब कठिन बुझना गेलनि । ओ जेम्हरे जाथि, घड़ियाल सभ बाट छेकि लैत छलन्हि । राजकुमार चारू भाग गहिंकी नजरिसँ ताक-क्षेम कयलन्हि । कनेक दूर पर एक ठाम हुनका एकटा नाओ भेटलन्हि जे जलमे डूबल छलैक । राजकुमार ओहि नाओकेँ बहार कयलन्हि । पुनः जलमे देलाक बाद ओ डूबि गेलैक । ओहि नाओमे एकटा छेद छलैक जाहि कारणेँ ओ जलसँ भरि जाइत छल । राजकुमार सोचमे पड़ि गेलाह । एकर कोन उपाय भ' सकैत छैक । बिना नाओक पारो नहि भेल जा सकैछ । ओहि ठाम नाओ ठीक करबाक कोनो साधन उपलब्ध नहि छलैक । अन्तमे राजकुमार एक हाथसँ नाओक छेदकेँ बन्न कयलनि आ दोसर हाथे करुआरि चलाक' धारकेँ पार कयलन्हि । आब राजकुमार छठम पहाड़ पर छलाह जाहि ठाम टिटहीक टिटकारी वातावरणकेँ विचित्र बना रहल छलैक । ओहि आवाज पर केहनो साहसी लोकक साहस टुटि सकैत छलैक ।

वातावरण जेना कोनो अनहोनीक आहट द' रहल छलैक मुदा राजकुमार महात्माजीक स्मरण करैत आगू बढ़ैत रहलाह। ओ टिटही समुदाय स्वयं हुनक बाट छोड़ि देलक जेना कि ओ सभ हिनकहि स्वागतक लेल आयल होमए। पहाड़क नीचाँ धार बहैत छलैक। ओ बड़ विचित्र छलैक। ओकर लहरि समुद्र जकाँ उठैत छलैक। ओकरा पार करब राजकुमारकेँ कष्टकर बुझयलनि। ओ चारू दिस निहारि रहल छलाह आ पार जयबाक लेल उपाय सोचि रहल छलाह। एक ठाम हुनका नदीक किनारमे एकटा झाड़ीमे एकटा नाओ देखि पड़लन्हि, मुदा खेबैयाक कोनो अता-पता नहि छलैक। ओहुना जखनसँ ओ एहि यात्रा पर बहरायल छलाह, कोनो मनुक्खक दर्शन नहिएँ भेल छलन्हि। एहन तरंगमे नाओसँ पार करब कठिन छलनि। एहि लेल तँ कोनो दक्ष नाविक केर अवश्यकता छलनि, मुदा कोनो विकल्प नहि देखि राजकुमार सहटि क' नाओ धरि गेलाह आ ओहि पर चढ़ि गेलाह। तरंगक गति तीव्र होयबाक कारणे ओहि धारकेँ पार करबामे राजकुमारकेँ दू प्रहर लागि गेलन्हि, जखन कि सामान्य रहने एक घंटा बहुत छलनि। जखन सोझाँमे कोनो पैघ डर आबि जाइत छैक, तँ ओहि क्षण छोटका डर भागि जाइत छैक। एक बेर रातुक समयमे आमक गाछीमे आम बिछैत काल कलमक मालिक आबि गेलाह। हुनका डरे सब केओ एकटा एहन भूताहि गाछी बाटे पड़यलाह, जाहि गाछीमे लोक दिनहुमे जाइत डेराइत छलैक। एखन राजकुमारक सेहो किछु एहने स्थिति छलन्हि।

आब आगू सातम पहाड़ छलैक जे संभवतः अन्तिम पहाड़ छलैक। एहिपर पिशाचक वास छलैक। एहि पहाड़ पर सगरो आगि बरैत छलैक, ठीक ओहिना जेना श्मशानक चिता धधकैत रहैत छैक। राजकुमारकेँ कतहु खाली स्थान नहि भेटि रहल छलन्हि जाहि बाटे ओ आगू बढ़ितथि। हुनका महात्माजीक वचन मन पड़ि गेलन्हि। अहाँ जेम्हरे जायब, ओम्हरे बाट बनि जायत। ओ आँखि मुनि तलवार आगू कयने आगू बढ़लाह आ झट द' ओहो पहाड़ पार क' गेलाह। आब राजकुमारक सोझाँ विशाल पाँतर छलन्हि जकरा पार करबामे तीन-चारि घंटा लागि सकैत छलनि। ओहिमे हजारो गिद्ध विचरण क' रहल छल। बुझाइत छलैक जे कनेक

काल पूर्व कोनो युद्ध खतम भेल होमए आ गिद्ध सब मृतक सिपाहीक आँत-माँसु नोचि क' खा रहल होमए। कतहुँ मुंड पर मुंड तँ कतहुँ माँसक लोथड़ा जमीन पर लोटि रहल छलैक। सम्पूर्ण क्षेत्र शोणितमय छलैक। कतहुँ पयर धरबाक बाट नहि छलैक। ई दृश्य देखि राजकुमारक हृदय विदीर्ण भ' गेलन्हि। ओ सोच' लगलाह, "मानवक एहनो दुर्गति भ' सकैत छैक। लोक कतेक स्वार्थी भ' गेल अछि। अपन स्वार्थक लेल इहो सब क' सकैत अछि।'' हुनकर पयर थकमका गेलनि। ओ आगू नहि बढ़' चाहैत छलाह। पुनः ध्यान अयलन्हि जे ओ कत' आ कोन प्रयोजनसँ जा रहल छथि। ओ सब किछुकेँ अनदेख करैत आगू बढ़ि गेलाह। जखन राजकुमार ओहि बाटकेँ पार कयलन्हि तँ सूर्य सेहो अस्ताचल शिखर पर पहुँचि गेल छलाह। गगनमंडल लाल लागि रहल छलैक। आब राजकुमारक सोझाँ ओ सरोवर छलैक, जाहिमे स्वर्ण-कमल छलैक, मुदा सरोवरक जल कदवाह छलैक जाहिसँ विचित्र दुर्गन्ध बहरा रहल छलैक। ओहिमे प्रवेश करब तँ जे से, ओहि ठाम ठाढ़ो रहब मुश्किल छलैक। ऊपरसँ ओहिमे साँप सभ सह-सह क' रहल छलैक। महात्माजीक आदेश बुझि राजकुमार ओहि सरोवरमे प्रवेश कयलन्हि आ धीरे-धीरे आगू बढ़' लगलाह। किछु क्षणक बाद ओ ओहि स्थान पर आबि गेलाह, जत' स्वर्ण-कमल छलैक। स्वर्ण-कमल देखि राजकुमार सोचमे पड़ि गेलाह। महात्माजी तँ एकटा स्वर्ण-कमलक गप्प कयने रहथिन, मुदा एहि ठाम तँ अनेको स्वर्ण-कमल अछि। तथापि ओ स्वर्ण-कमल तोड़बाक लेल अपन हाथ बढ़ौलनि। ओ हाथ बढ़ौनहि छलाह कि ओहि ठाम एकटा स्त्री प्रकट भेलीह। ओ राजकुमारकेँ फूल तोड़बासँ मना कयलकनि। राजकुमार बजलाह, "एहि फूलसँ हम माँ कालीक पूजा कर' चाहैत छी। हमर समूचा परिवार विपत्तिमे पड़ल अछि। ओकरे विपत्तिसँ बचेबाक लेल हम एहि ठाम आयल छी। तेँ हमरा एहि कार्यसँ जुनि रोकू।"

ओ स्त्री बजलीह, "एहि पुष्पसँ हमरा पुत्रक जीवन जुड़ल अछि। जँ अपने एकरा तोड़ैत छी, तँ हम पुत्रहीन भ' जायब। तेँ हम अपन

पुत्रक जीवन-दान माँगि रहल छी ।'' राजकुमार सोचमे पड़ि गेलाह । ओ सोच' लगलाह ''की हम एतेक स्वार्थी भ' गेलहुँ । अपना स्वार्थक लेल एक स्त्रीकेँ पुत्रहीन बनायब । ई उचित नहि । पुनः ध्यान अयलन्हि जे महात्माजी तँ एहेन कोनो संकेत नहि देने रहथि । भ' सकैत अछि जे ई हमर भ्रम होमए । ओ हाथ बढ़ाक' स्वर्ण-कमल तोड़ि लेलन्हि मुदा मंदिरमे घंटीक आवाज नहि भेलैक । ओ दोसरो पुष्प तोड़लन्हि मुदा कोनो आवाज नहि भेलैक । एहि तरहेँ ओ दसटा स्वर्ण-कमल तोड़ि लेलन्हि, मुदा मंदिरक कोनो संकेत नहि भेटलन्हि । जखन ओ एगारहम स्वर्ण-कमल तोड़लन्हि, तखन मंदिरक घंटी टनाटन बाजि उठल । सरोवरक जल एना भ' क' सूखि गेल जेना ओहिमे कहिओ जल रहबे नहि करैक । जेम्हरसँ घंटीक आवाज आबि रहल छलैक, ओम्हर एकटा भव्य मंदिरक कपाट खुजलैक । ओहिमे काली माताक भव्य मूर्ति छलैक । धूप-अगरबत्तीक सुगन्धसँ वातावरण मनमोहक लागि रहल छलैक । जेना बुझाइत छलैक जे एखनहि मंदिरक पुजारी पूजा क' क' कतहु गेल छथि । कालीक मूर्ति ओहने रक्तरंजित मुँह आ जीह कुचने जेना तुरंत राक्षसक संहार क' आबि रहल होथि । एकटा पयर धरती पर आ दोसर महादेवक छाती पर । एकदम दक्षिणेश्वर कालीक प्रतिमूर्ति । राजकुमार सुजीतक यात्रा सफल भेलन्हि । ओ अति हर्षित भेलाह । हाथक स्वर्ण-कमलकेँ माँ कालीक चरणमे अर्पित कयलन्हि आ साष्टांग गोड़ लगैत बजलाह, "हे माँ ! हमर मनोरथ पूर्ण करू । हमरा माँ आ बाबूजीकेँ जल्दी विपत्तिसँ बहार करू । माँ काली प्रसन्न भ' वर देलथिन्ह, ''अहाँ जाहि मनोरथसँ आयल छी से पूर्ण होयत ।'' संगहि एकटा कवच दैत बजलीह, ''ई जाधरि अहाँक देहमे रहत, अहाँपर ककरो प्रहारक असरि नहि होयत । अहाँ जाहि कार्यकेँ हाथमे लेब, शीघ्र पूर्ण होयत । जँ कुठाममे पयर देब वा कवचक दुरुपयोग करब, तँ हमर आशीर्वाद आ कवचक प्रभाव निष्फल भ' जायत । आब अहाँ पुनः ओही महात्माजीक ओहि ठाम जाउ, जे अहाँकेँ एत' पठौने रहथि । आगूक बाट ओएह देखौताह ।"

सुजीत माँ कालीक प्रसाद आ वरदान पाबि ओहि ठामसँ आपस

अयलाह । बाटमे पुनः ओएह पहाड़ आ बाट भेटलन्हि मुदा ओतेक भयावह नहि, जतेक जयबा कालमे बुझायल छलनि । ओहुना पुरान बाटक अपेक्षा कोनो नव बाट भयावह लगितहि छैक । एकटा कहबीओ छैक, "अपना गामक गाछी आ आन गामक पोखरि डेराओन लगैत छैक ।" एहि तरहेँ ओ पुनः महात्माजीक आश्रम अयलाह आ हुनका सबटा वृत्तान्त विस्तारसँ सुनौलथिन्ह । महात्माजी हुनक वृत्तान्त सुनबा काल मुस्किया रहल छलाह । हुनका तँ सब किछु बुझले छलन्हि । पहिने तँ ओएह ओहि बाटक बटोही बनल रहथि ।

महात्माजी बजलाह, ''प्रभुक इच्छासँ आ माँ कालीक कृपासँ अहाँकेँ एकटा काज आर करबाक अछि । एकरहि लेल ई कवच मँगाओल गेल अछि । बिना माँ कालीक कृपासँ ई सम्भव नहि छल । अपने एखन जे.कार्य कयल अछि, ई ओकरोसँ विकट अछि मुदा बुद्धि.आ साहससँ ओकरा आसान बनाओल जा सकैत छैक । एहि ठामसँ एक सय कोस पर पूर्व दिशामे एकटा नगर छैक श्रीधरपुर । ओहि ठाम कल्लू नामक एकटा राक्षस रहैत अछि । ओ दूर-दूर धरिक लोकक शिकार करैत अछि । ओ जाहि ठाम जाइत अछि, ओहि ठाम बहुत उत्पात मचबैत अछि। ओहि ठामक लोक सभकेँ मारैत अछि, ओहि ठामक कुमारि कन्या सभक अपहरण सेहो करैत अछि । ओकरा उत्पातसँ इलाका वीरान भ' गेलैक अछि । एहि तरहेँ ओ एखन धरि कतेको गोटेकेँ मारि चुकल अछि आ हजारनो कन्याक अपहरण क' चुकल अछि । ओकर संहार अहीँक हाथे होयबाक छैक, मुदा ई काज एतेक सरल नहि छैक । ओकरा सोझाँ हजारो राजाक सिपाही बेकार अछि । अहाँ जे दुर्गम बाट पार कयलहुँ अछि, ई ओकरोसँ दुर्गम छैक । ओ राक्षस तरुआरिसँ नहि काटल जा सकैत छैक । ओ जलमे नहि डूबि सकैत छैक । ओ कोनो वस्तुसँ नहि मारल जा सकैत अछि । ओ केवल आगिसँ डेराइत अछि । ओकरा केवल आगि लगा क' मारल जा सकैत छैक जे सभक लेल सम्भव नहि छैक । ओकरा किलाक चारू दिस धार जकाँ बनल छैक जाहिसँ लगैत छैक जे ओकर किला कोनो टापू पर बसल होइक । ओहि धारमे केवल हिंसक

जीव जेना सोंसि, घड़ियार, गोहि आदि रहैत छैक । ओ अपने आकाश मार्गेटासँ जाइत-अबैत अछि । किलाक गेट सेहो स्थायी रूपसँ बन्न छैक । एकटा चोर दरवाजा छैक जाहि बाटे केओ अन्य जा सकैत अछि मुदा जँ सावधान नहि रहत तँ पचास फीट खाधिमे खसि पड़त, जाहिसँ बहरायब मुश्किल होयतैक । जखने कोनो गोटे ओहि किलाक समक्ष जायत तखने ओ सजग भ' जायत । ककरो देखि क' ओ घड़ियार सब एतेक ने किलोल करत जे ओकर सजग होयब स्वाभाविके अछि, दिन भरि सुतैत अछि, राति भरि विचरण करैत अछि वा अपन खयबाक जोगाड़ करैत अछि । ककरो लेल ओकर जीवैत ओहि किलामे जायब संभव नहि छैक । ओकरा मृत्युक बादे अहाँ किलाक भीतर प्रवेश क' सकैत छी आ ओहि अपहृत कन्या सभकेँ मुक्त करा सकैत छी ।''

राजकुमार सुजीत बजलाह, "मुदा ओ मरत तखने ने । पहिने ई तँ कहल जाय जे ओ मरत कोना ?''

महात्माजी बजलाह, ''एहि संसारमे मृत्यु पर केओ विजय नहि पओने अछि । जेकर जन्म भेलैक अछि, ओकर मृत्यु होयबे करतैक । ई ध्रुव सत्य छैक । तेँ ओकरो मृत्यु होयबे करतैक, सेहो अहींँक हाथे । ओ आगिमे जरिक' मरत । ओकरा लेल एहेन इंतजाम कर' पड़त जे ओ आगिसँ घेरा जाय । अन्यथा ओ पकड़मे नहि आओत आ एक बेर जँ घेरा गेल तँ भागि नहि सकैत अछि । तखन ओकरा आसानीसँ जराओल जा सकैत छैक ।"

राजकुमार पुछलथिन्ह, "मुदा ओ किलासँ बाहर कोना आओत ? ताहि लेल की कर' पड़तैक ?"

महात्माजी बजलाह, ''ताहि लेल धारक एही पारसँ ओकरा ललकारा देमए पड़त । ओ ललकारा सुनि अहाँक संग लड़बाक लेल आओत । ओही ठाम लड़ैत-लड़ैत ओकरा आगिक घेरामे अनबाक प्रयास करब । तखन ओ भागि नहि सकत । ओकर बाद ओकरा आगि लगा क' मारि सकैत छी । एहिमे जतेक शीघ्रता करब ओतेक नीक । देरी भेने वा

अहाँक अभिप्रायक आभास भेने ओ भागि सकैत अछि आ जँ एक बेर भागि गेल, तँ पुनः अहाँ ओकरा नहि पकड़ि सकबैक ।

राजकुमार सुजीत महात्माजीक आदेश पर विदा भेलाह । जंगलमे प्रवेश करबासँ पूर्व हुनका जे केओ भेटलन्हि, ओ ओहि दिशामे जयबासँ मना कयलकन्हि मुदा ई तँ जानि-बुझि क' जा रहल छलाह । किएक मानितथि ? बाटमे जंगल, झाड़ आ कतेको वन्य पशु सभसँ सामना भेलन्हि । एहि यात्रामे राजकुमारकेँ कतेको जानवरक शिकार कर' पड़लन्हि जे आवश्यके छलनि आ महात्माजीक निर्देश सेहो । ओहि यात्रामे जे किछु छलैक, से भ्रम छलैक आ एहिमे जे किछु छैक से सद्यः छैक । शिकार करबाक उद्देश्य ई जे लोक बुझए जे ई कोनो शिकारी राजकुमार छथि, नहि कि कल्लूसँ युद्धक इच्छुक । कतेको दिनक उपरान्त ओ किलासँ पाँच सय मीटरक दूरी पर पहुँचि गेलाह । ओहि ठामसँ किला स्पष्ट परिलक्षित भ' रहल छलैक । मुदा लोकक कतहु कोनो आहटि नहि जे महात्माजी सेहो पहिने कहिए देने छलथिन्ह । राजकुमार अपना संगे पर्याप्त मात्रामे धूमन आ सलाइ सेहो लेने गेल छलाह । ओहि ठाम ओ धूमनक एकटा पैघ घेरा बनौलन्हि । ओकर बाद ओ ओहि राक्षसकेँ ललकार' लगलाह । कनेक कालक बाद बुझायल जेना भयंकर बिहाड़ि आबि गेलैक अछि । चारू दिश भयंकर वातावरण भ' गेलैक । ओ बिहाड़ि ओहि राक्षसक अयबाक सूचना छलैक । जखन बिहाड़ि बन्न भेल तँ राजकुमारक सोझाँ एकटा विशालकाय राक्षस ठाढ़ छलैक । ओ राक्षस बाजल, ''तोहर प्राण भारी छौक जे एहि ठाम आयल छेँ। एहि ठामसँ बाँचि क' केओ नहि जाइत अछि । एहि परोपट्टामे केओ जीवित अछि ? सभकेँ मारिक' खा गेल छियैक । तोँ कत'सँ जनमि गेल छेँ ?''

राजकुमार सुजीत बजलाह, ''तोँ की सब दिन जिविते रहबेँ ? तोहर अंत समय आबि गेल छौक ।"

एतेक सुनैत देरी ओ राक्षस राजकुमार पर झपट्टा मारलक । राजकुमार पाछाँ हटि गेलाह । पुनः दुनू गोटेमे मल्लयुद्ध शुरू भेल । राजकुमारक प्रहारे ओकरा किछु नहि होइत छलैक आ ओकरा प्रहारसँ

राजकुमार आहत तँ अवश्य होइत छलाह, मुदा कवचक कारणेँ बेशी असरि नहि होइत छलन्हि । राजकुमारक एकेटा उद्देश्य छलन्हि जे कहुना क' एकरा धूमनसँ बनाओल घेरामे आनल जाय । ओकरो आश्चर्य भ' रहल छलैक जे एतेक प्रहारक बादो एखन धरि राजकुमार ठाढ़ किएक अछि । ओ खिसियाक' आक्रमण करैत छल आ राजकुमार पाछाँ हटैत छलाह । अन्तमे ओ खिसियाक' राजकुमारकेँ ऊपर उठा लेलक आ नीचाँ पटकि देलक । राजकुमार ओही घेरामे आबिक' खसलाह आ ठाढ़ भ' गेलाह । ओ पुनः राजकुमारकेँ पकड़बाक लेल ओहि घेरामे प्रवेश कयलक । राजकुमार फूर्तीसँ धूमनमे आगि लगा देलन्हि । ओ आगि देखि घबरा गेल आ भगबाक प्रयत्न कयलक । तावत् आगि सम्पूर्ण घेरामे पसरि गेल छलैक । एहि हमलासँ ओकर रूप देखबा जोगड़क छलैक । ओ सियार जकाँ राजकुमारक सोझाँ गिड़गिड़ा रहल छल । राजकुमार तुरंत आर धूमनकेँ तेना क' ओकर देह पर फेकि देलथिन्ह जे ओकरा सौंसे देह पर पड़ि गेलैक आ आगि लागि गेलैक ।

कल्लू राक्षसकेँ एकर अंदाज नहि छलैक । ओ तँ केहनो बलशालीकेँ पछारि मारैत छल । ओ आगिमे छटपटा रहल छल । ओकर सबटा शक्ति आगि देखितहि खतम भ' गेल छलैक । आब ओ आकाशो मार्गसँ भागि नहि सकैत छल । ओ एके क्षणमे जरि क' छाउर भ' गेल ।

ओकरा जरितहि ओहि ठामक जे प्रभाव छलैक, सेहो खतम भ' गेलैक । राजकुमार सुजीत महात्माजीक निर्देशानुसार किलाक समीप पहुँचलाह । किलाक चारू कात जे धार छलैक आ ओहिमे जे जीव सभ छलैक, सब स्वस्थ भ' गेल छल । सभक स्वभाव बदलि गेल छलैक । रजाकुमार आसानीसँ ओ धार पार कयलन्हि आ किलाक भीतर जयबाक बाट ताक' लगलाह ।

किलामे जयबाक बाट कतहु भेटिये नहि रहल छलन्हि । मुख्य द्वार बन्न छलैक आ बुझा रहल छलैक जेना अनेक वर्षसँ नहि खोलल गेल होमए । से ओहि ठामक झाड़-पातसँ विदित भ' रहल छलैक । किलामे प्रवेश करबाक लेल राजकुमार ओकरा चारू भागक निरीक्षण

करब शुरू कयलन्हि । किलाक उत्तर दिशामे एकटा बड़का कील ठोकल छलैक । राजकुमार अपना तलवारसँ ओहि कील पर प्रहार कयलन्हि जाहिसँ तीन-चारिटा ईंट भरभराक' खसि पड़लैक आ एक गोटेक जयबाक बाट बनि गेलैक ।

राजकुमार ओहि बाटमे प्रवेश कयलन्हि । भीतरमे जाहि ठाम कील छलैक, ओहि ठाम करीब पचास फीट गहीँर खाधि छलैक जाहिमे खसने पुनः बहरायब कठिन छलैक । जँ केओ गोटे धरधड़ाक' जाइत तँ अवश्य ओहि खाधिमे खसैत । मुदा राजकुमार तँ अपने सतर्क छलाह आ फूकि-फूकिक, डेग धरैत छलाह । ओ पुनः बाहर आबि तलवारक सहयोगसँ आर चौड़ा बाट बनौलनि आ सावधानीपूर्वक किलामे प्रवेश कयलनि ।

भीतर एकदम सुनसान छलैक । कोनो तरहक चहल-पहल नहि । ओ किला बहुत फइल जगहमे बनाओल गेल छलैक । ओहिमे रंग-विरंगक फूल आ फलक गाछ सेहो छलैक । ठाम-ठाम जलक झरना बहि रहल छलैक । ओहि ठामसँ एक कोसक दूरी पर एकटा विशाल पहाड़ छलैक । सम्भवतः ई झरना ओकरहि स्रोत छल होयतैक । लागि रहल छलैक जे कोनो राजा-महाराजाक महल होमए । राजकुमारकेँ देखि क' एकटा बूढ़ स्त्री जनिक वयस करीब अस्सी वर्ष छलनि, कतेक वर्षक बाद मनुक्खक दर्शन कयने छलीह । ओ ओहि किलामे मनुक्खकेँ देखि विस्मित छलीह । सम्भवतः साठि-बासठि वर्षक बाद एहेन अवसर भेटल छलनि । ओना तँ ओ राक्षस जकर अपहरण करैत छलैक, ओकरा देखितहि छलीह लाचार, बेबस आ बेहोश, मुदा आइ एकटा स्वच्छन्द आ निर्भीक युवककेँ देखि हुनका दया उमड़ि पड़लनि । हुनका ओकर रक्षाक चिंता भेलन्हि । ओ बजलीह, "बौआ ! अहाँके थिकहुँ आ एहि ठाम कोन प्रयोजने आयल छी ? ई स्थान नीक नहि अछि । अहाँ जल्दी एहि ठामसँ पड़ा जाउ नहि तँ ओ राक्षस अहाँकेँ मारि देत ।"

राजकुमार बजलाह, ''हम बटोही थिकहुँ । एहि ठाम भटकैत आबि गेल छी, मुदा अहाँ कोन राक्षसक गप्प क' रहल छी ? ओकरा संग अहाँक कोन सम्बन्ध अछि ?''

ओ स्त्री बजलीह, "हमरा ओकरा संग कोनो सम्बन्ध नहि अछि। तखन एतेक धरि अवश्य अछि, जतेक एकटा जानवर आ घासक बीच होइत छैक । ओ एहि किलाक स्वामी थीक आ ई सम्पूर्ण इलाका सय कोस भरि ओकर चारागाह । हम सब ओकर चारा थिकहुँ । ओ कतेको गोटेकेँ अपन क्षुधाक शांतिक लेल यमपुर पठा देलक । कतेको बालिकाक अपहरण कयलक । हमहूँ ओहीमे सँ एकटा छी । एखन ओ तुरंत बाहर गेल अछि । यद्यपि ओकरा बहरयबाक ई समय नहि छैक । सम्भवतः ककरो ललकार पर बहरायल अछि ।"

राजकुमार सुजीत नम्र भावे पुछलथिन्ह, ''माँजी ! अहाँ तँ कहलहुँ जे ओ कतेको बालिकाक अपहरण कयलक मुदा अहाँ तँ अस्सी वर्षक वृद्धा लागि रहल छी ।"

"आइसँ करीब साठि-बासठि वर्ष पूर्व हमर विवाह निश्चित भेल । तखन हमर वयस करीब सोलह वा सत्रह वर्षक छल । दरबज्जा पर बरियाती आबि गेल छलैक । हम सजि-धजिक' विवाहक लेल तैयार छलहुँ । शहनाइ बाजि रहल छलैक । अपन प्रियतमसँ मिलनक लेल मनमे कतेको तरह उमंग सजौने छलहुँ । कोना हुनका संग प्रथम मिलन होयत ? ओ की पुछताह, हम छी उत्तर देबन्हि, जीवन कोना बितायब ? मनमे उथल-पुथल भ' रहल छल । ई सब सोचि मनमे गुद्‌गुदी-लागि रहल छल । अनायास बुझायल जेना खूब जोरसँ बिहाड़ि आबि रहल हो । हमरा तँ ओतेक बुझल नहि छल । सगरो भाग-भागक हल्ला भ' रहल छलैक । हम सोचलहुँ बिहाड़िक कारण लोक भागि रहल छैक । जकरा एकर अनुभव छलैक, से तँ अपन प्राण बचाक' भागल । ओहि ठाम बाँचि गेलाह बरियाती लोकनि, जनिका सभकेँ एकर कोनो आभास नहि छलनि आ किछु हमर घरक लोक, जनिकर रहब बाध्यता छलनि । ओ राक्षस आबि गेल आ ओहि ठाम जतेक लोक छलैक, सबकेँ क्षत-विक्षतक' देलक । देखैत-देखैत ओ विवाह-मंडप लाशक ढेरी बनि गेल । हमर जे होअ'बला पति छलाह, हुनकर तँ ई हाल कयलक जे चिन्ह'मे नहि आबथि । ओकर बाद ओ हमरा उठा क' विदा भ' गेल । हम तँ ओ दृश्य

देखि पहिनहि बेहोश भ' गेल छलहुँ । जखन होशमे अयलहुँ तँ अपनाकेँ एही किलामे पओलहुँ । जाहि दिन ओकरा कोनो शिकार नहि भेटैत छैक ओहि दिन ओ हमरहि सभमे सँ ककरो एकटाकेँ उठा लैत अछि आ अपन क्षुधा शान्त करैत अछि । बूझल जाय तँ हम सभ ओकर ज्योरा थिकहुँ । तेँ हम अहूँसँ आग्रह कयलहुँ जे अहाँ शीघ्र एहि ठामसँ पड़ा जाउ । ओकर कोन ठेकान जे कखन आबि जायत," ओ स्त्री कहलथिन ।

राजकुमार पुछलथिन्ह, "पहिने ई तँ कहू जे ई राक्षस के थीक ?'' राक्षसक काज तँ लोककेँ मारि क' खायब होइत छैक । ओ एतेकटा भव्य किला किएक आ कोना बनौलक । एकरा पाछाँ ओकर की उद्देश्य छलैक ?"

ओ स्त्री बजलीह, "ओकर नाम कल्लू छैक । ओकरा भयसँ एहि ठाम दूर- दूर धरिक लोक डेराइत अछि । अहाँकेँ बाट-घाटमे सम्भवतः केओ नहि भेटल होयत । एहि किलाकेँ ओ अपन शरणस्थली बनौने अछि । पूर्वमे एहि ठामक राजा श्रीधर छलाह आ एहि स्थानक नाम अछि श्रीधरपुर । एकर निर्माण राजा श्रीधर अपना शासन कालमे करौलन्हि । ओ बहुत न्यायप्रिय आ लोकप्रिय राजा छलाह । हुनका शासन कालमे एहि ठामक प्रजा खुश रहैत छल । ओ वेश बदलि रात्रिमे नगर भ्रमण सेहो करैत छलाह जाहिसँ हुनका सब किछु बुझबामे आबि जाइत छलन्हि । हुनका मात्र तीनटा बालिका छलथिन्ह । ओ सब अति सुन्नरि आ सुशील छलीह । जखन ओ सब विवाहक योग्य भ' गेलीह तँ राजा श्रीधर कतेको ठाम कन्यादानक उद्येश्यसँ गेलाह मुदा बेटीक गुणक अनुरूप वर नहि भेटलन्हि । एक दिन संध्या काल एक गोटे महाराज श्रीधरक दरबारमे आयल । ओ अपन दुःख-दर्दसँ महाराजकेँ अवगत करौलक । महाराज श्रीधर दयालु तँ छलाहे । ओ ओकरा दुःख-दर्दसँ पसिझि गेलाह । ओकरा अपनहि ओहि ठाम सेवकमे राखि लेलन्हि । ओएह छल कल्लू राक्षस । महाराज ओकरा चिन्हि नहि सकलथिन्ह । कल्लू वेश बदलबामे माहिर अछि । ओ रातिमे वेश बदलि क' ककरो ने ककरो मारि क' खा जाइत अछि । दिनमे सूर्यक रोशनीमे ओ राक्षसक रूपमेँ रहैत अछि । तेँ ओ दिनमे कतहु नहि बहराइत अछि । पता नहि आइ कोना बहरायल । एहू

ठाम ओ रातियेमे आयल छल । समूचा नगरमे शोर भ' गेलैक जे एकटा राक्षस रातिमे आबि लोकके मारिक' खा जाइत अछि । कतेको लोक एकर शिकायत महाराज श्रीधरक ओहि ठाम कयलक । हुनक चिंता बढ़ि गेलनि । ओ राज्यमे प्रहरीक संख्या बढ़ा देलनि । ओ अपनहु रातिमे यदा-कदा निगरानी करैत छलाह, मुदा परिणाम किछु नहि बहरयलनि । जँ केओ बाहरसँ अबैत, तखन ने ओकरा केओ देखैत । ओ तँ किलाक भीतरे छल । नित्य एकटा प्रहरीक संख्या घटि रहल छलैक । कतेक पंडित बजाओल गेलाह मुदा एहि विषय पर केओ समुचित उत्तर नहि द' सकलाह ।

एक दिन रातिक बारह बाजि रहल छलैक । प्रहरी लोकनि अपना ड्यूटी पर मुस्तैद छलाह । सब डरे मृतप्राय छलाह । पता नहि आइ ककर पार छैक । महाराज श्रीधर सेहो सैनिकक वेशमे आ प्रहरीक हिम्मत बढ़यबाक उद्येश्यसँ प्रहरीयेक बीचमे छलाह । कल्लू राक्षस अपना गुफ़ासँ बहरायल आ एकटा प्रहरीके दबोचि लेलक । सब प्रहरी हल्ला कयलक । महाराज श्रीधर सेहो ओहि प्रहरीके बचयबाक लेल पहुँचलाह, मुदा ओ कल्लू राक्षस महाराजोके मारि यमपुर पठा देलक । ओकर बाद सब दिनक लेल किलाक गेट बन्न क' देल गेलैक । ने केओ बाहरसँ आबि सकैत छल आ ने केओ भीतरसँ बाहर जा सकैत छल । जे केओ बाहर रहि गेल ओ तँ कहुना क' भागि गेल मुदा जे सभ भीतरमे रहल, ओ सभ धीरे-धीरे ओकर भोजन बनल । अपने तँ ओ आकाश मार्गसँ जाइत-अबैत अछि । बाँकी लोक कैदी बनि क' रहि रहल अछि । ओ महाराज श्रीधरक तीनू बेटीक संग जबरदस्ती विवाह क' लेलक अछि आ एही ठामसँ अपन साम्राज्यक संचालन कर' लागल अछि । जतेक लोकक अपहरण करैत अछि सबके एही ठाम तहखानामे रखैत अछि । ई किला जेना महाराज श्रीधरक समयमे चहचह करैत छल, तकर अभाव भ' गेल अछि किएक तँ एहि ठाम जे केओ अछि, ओ डेरायल, सहमल, हतोत्साहित, उद्देश्यहीन भ' गेल अछि । तखन चुहचुही कोना रहतैक ? एकर देख-रेख कयनिहार केओ नहि रहल अछि । कल्लूके तँ दिन भरि सुतबाक आ राति भरि शिकार करबाक आदति छैक । इएह अछि हमरा सभक जीवनक आ एहि स्थानक पिहानी ।"

राजकुमार पुछलथिन्ह, "की ! ई सब अहाँके कल्लूसँ पता चलल ?"

ओ स्त्री जिनकर नाम विशाखा छलन्हि, बजलीह, 'जी नहि, ई सब गप्प हमरा महाराज श्रीधरक पुत्री आ कल्लूक घरवालीसँ ज्ञात भेल अछि ।"

राजकुमार पुछलथिन्ह, "ओ एखन कत' छथि ?"

विशाखा बजलीह, "ओ तँ आब एहि दुनियाँमे नहि छथि, मुदा मृत्युसँ किछु दिन पूर्व हमरासँ सब वृत्तान्त कहने छलीह ।"

राजकुमार पुछलथिन्ह, "ओ तँ तीन बहिन छलीह ने ?"

विशाखा बजलीह, "दूटा तँ हमरा अयबासँ पूर्वहि दुनियाँ छोड़ि चुकल छलीह । तेसर बाँचल छलीह, जनिकासँ गप्प-शप्प होइत छल ।"

राजकुमार पुछलथिन्ह, "हुनकर कोनो बाल-बच्चा....?"

विशाखा बजलीह, "दूटाके तँ बाल-बच्चा नहि भेलन्हि मुदा तेसरके दूटा बेटी भेल छलन्हि । ओ नहि चाहैत छलीह जे हमर संतान एहि राक्षसक संतान कहाबए । दोसर गप्प जे राक्षसक संतानके तँ किछु अंश ओकरोबला रहबे करितैक । तेँ जन्म होइतहि ओकरा मारि दैत छलीह आ कल्लूके कहैत छलीह जे मुइले जन्म भेल छलैक ।"

राजकुमार पुछलथिन्ह, "की एहिपर ओकर कोनो प्रतिक्रिया नहि होइत छलैक ? ओ राजकुमारीक संग अभद्रता नहि करैत छल ?"

विशाखा बजलीह, "अभद्रता तँ ओकर स्वभावे छैक । ओ सदरि काल सभक संग अभद्रता करैत अछि । तखन प्रतिक्रिया की होयतैक ? ओ तँ स्वयं हृदयहीन, विवेकहीन अछि । ओकरा एतेक पलखति कत' जे एतेक गहराइसँ विषय-वस्तु पर सोचय । ओ तँ जतेक काल शिकार करैत अछि, से करैत अछि । शेष अवधि फोंफ कटैत रहैत अछि ।"

राजकुमार बजलाह, "माँजी ! अपने चिंता जुनि करू । आब एहि ठामक स्वामी हमहीं थिकहुँ । अहाँक आर संगी-सहेली कत' छथि ?

माँजीक सम्बोधनसँ विशाखा बड़ प्रसन्न भेलीह । हुनका अपन

जे माँ बनबाक सपना छलनि से तँ पूर्ण नहिएँ भेलनि । ओ सोचिओ नहि सकैत छलीह जे हमरा केओ माँजी कहि सकैत अछि । आइ हुनका जीवनमे जहिआसँ किलामे आयल छथि, पहिल बेर मन प्रफुल्लित बुझयलनि । ओ बजलीह, "अहाँ एहि ठामक स्वामी कोना भेलहुँ ? एहि ठामक स्वामी तँ ओ कल्लू राक्षस अछि जकर हम सभ गुलाम छी । ओकरा जिबैत ई सपना केओ नहि देखि सकैत अछि ।"

राजकुमार कहलथिन्ह, "अहीँ ने कहलहुँ जे एहि ठामक राजा श्रीधर छलाह । पुनः कल्लू कोना भेल ?"

विशाखा बजलीह, "श्रीधरकेँ मारि क' ।"

राजकुमार बजलाह, "हमहूँ कल्लूकेँ मारि क' एहि ठामक स्वामी भेलहुँ अछि । अहूँ सब आब ककरो गुलाम नहि छी । जे केओ जत' चाही, घुमि-फिरि सकैत छी ।''

विशाखा बजलीह, "की ? अहाँ सत्य कहि रहल छी ? हमरा विश्वास नहि भ' रहल अछि । ई तँ एकदम असम्भव अछि । अपने बताह तँ ने छी ? हमरा सभकेँ एहन सपना किएक देखा रहल छी ?"

राजकुमार विशाखाकेँ ल' क' ओहि स्थान पर गेलाह, जत' कल्लू राक्षसकेँ जरौने छलाह । ओकर कोनो रूप-रंग तँ नहि परिलक्षित भ' रहल छलैक, मुदा अस्थिक ढेरीसँ अवश्य बुझना जाइत छलैक जे अस्थि साधारण लोकक नहि भ' सकैत छैक । अस्थिक ढेरीसँ एखनहुँ धूआँ निकलि रहल छलैक आ विचित्र दुर्गन्ध सेहो । ओहि ठाम चारू दिस केओ छलैको तँ नहि, जकरासँ पूछल जा सकैत छलैक । अन्ततः विशाखाकेँ राजकुमारक बात मान' पड़लन्हि । पुनः दुनू गोटे किलामे आपस अयलीह । राजकुमार विशाखाक संग समूचा किलाक भ्रमण कयलन्हि । किलाक बनाबटि ओहिना छलैक जेना महाराज श्रीधर छोड़ि क' गेल छलाह । भीतरमे बड़का भंडारघर भोजनक सामग्रीसँ भरल छलैक । किलाक भीतर रख-रखाओक अभावमे कतेको ठाम बड़-पीपर अपन साम्राज्य बना लेने छलैक । कल्लूक मृत्युक खबरि सुनितहिँ ओहिमे

जतेक बुढ़ि स्त्री छलीह, सब बुलबुला क' बाहर अयलीह आ राजकुमारक सोझाँ नतमस्तक भ' गेलीह । सब राजकुमारक गुणगान कर' लगलीह ।

विशाखा राजकुमारकेँ ओहि तहखाना लग ल' गेलीह जाहिमे अपहृत बालिका सब कैद छलीह । ओकरा दोसर केओ खोलिओ नहि सकैत छलैक । ओकरा मात्र कल्लू खोलैत छलैक । ओहिमे लटकल ताला चारि गोटेसँ उठैत छलैक । राजकुमार विशाखाक निर्देशपर अपना तलवारसँ ओकरा तोड़ि देलन्हि । तहखाना खुजि गेल आ ओहिमे सँ बालिका सब बहराय लगलीह । ओ सब करीब नौ सय छलीह । सभक वयसमे अंतर छलनि । आधासँ बेशी अपन जवानीक चौकठि पार क' गेल छलीह । हुनकामे गृहस्थी बसयबाक सामर्थ नहि छलन्हि । आधा एखन जुआन छलीह, जिनकर गृहस्थी बसाओल जा सकैत छलनि । पहिने तँ ओ सभ सहमल छलीह कारण जे जे ओहि तहख़ानासँ बहरायलि, ओ पुनः ओहिमे नहि पहुँचैत छली । ओहिमे सँ बहरयबाक मतलब भेलैक मृत्युक वरण करब । ई आशा तँ सपनहुँमे नहि छलन्हि जे जीबैत एहि किलाक बाहर जायब । एही कारणसँ सभ सहमल छलीह । पता नहि आइ ककर पार अछि ।

विशाखा बजलीह, ''अहाँ सभ निर्भीक भ' क' बाहर आउ । ओ राक्षस जेकरासँ अहाँ सभ डेराइत छलहुँ से मारल गेल । आब हम सब गोटे आजाद छी ।'' पुनः राजकुमार दिस इशारा करैत बजलीह, ''हमरा सभकेँ आजाद करौनिहार बुझू, भयत्राता बुझू, इएह छथि । ई एहि ठाम हमरा सभक रक्षक बनिक' आयल छथि ।''

ओ सब राजकुमारक बहुत तरहेँ अभिनन्दन कयलन्हि आ बजलीह, "आब हमरा सभक की होयत ? हम सब कत' जायब ? के हमरा सभकेँ शरण देताह ? हम सभ कलंकित भ' चुकल छी । समाजमे कोना मुँह देखायब ?''

राजकुमार बजलाह, ''जे भगवान एतेक कयलन्हि, से आगुओ किछु ने किछु अवश्य करताह । अहाँ सब की चाहैत छी ? अहाँ सभ जत' आ जेना रहबाक इच्छा करब, से इन्तजाम भ' जायत । किछु दिन अहाँ सभकेँ एतहि रह' पड़त । अहाँ सभ निर्भयतापूर्वक रहू । हमरा किछु

आर काज करबाक अछि । हम किछु दिनक बाद पुनः अबैत छी । एतेक आश्वासन द' क' आ विशाखासँ विदा ल' क' राजकुमार पुनः ओहि आश्रममे अयलाह, जत' महात्माजी हुनकर प्रतीक्षा क' रहल छलथिन्ह ।

ओ सम्पूर्ण घटनाक विवरण महात्माजीकेँ सुनौलनि । महात्माजी अति प्रसन्न भेलाह । एतेक प्रसन्नचित्त होइत महात्माजीकेँ राजकुमार कहिओ नहि देखने छलाह । ओ तँ सतत हुनका गम्भीरे मुद्रामे देखैत छलथिन्ह । महात्मा कहलथिन, ''आब अहाँ पहिने सुमेरुगढ़ जाउ । ओहि ठाम अपन पहचान गुप्त राखब । गुप्त रूपेँ राज्यक स्थितिक पता लगायब । ओना जाधरि अहाँ लग माँ कालीक कवच अछि, अहाँक केओ किछु नहि बिगाड़ि सकैत अछि, मुदा जँ युद्ध होयतैक तँ अनेरो कतेको लोकक शोणित बहतैक । तेँ एकरा कूटनीतिसँ पछारल जयबाक चाही । एहिसँ "साँपो मरि जायत आ लाठिओ नहि टूटत ।" ओकर बाद सर सुल्तानक ओहि ठाम जाउ आ हुनकासँ किछु सेनाक मदति ल' क' जालिम सिंहकेँ परास्त क' पुनः अपन राज्य स्थापित करू । हमर उद्देश्य पूर्ण भ' गेल । आब अहाँकेँ हमर कोनो प्रयोजन नहि होयत । अहाँ ततेक ने तपाओल गेल छी जे अहाँकेँ तोड़ब ककरो लेल कठिने नहि अपितु अति कठिन होयतैक ।"

आजुक खिस्सा बच्चा सभकेँ अतिप्रिय लागल छलैक किएक तँ आइ बाबी कहबो कयलथिन्ह तहिना जेना कोनो जासूसी उपन्यास होइक । बाबीकेँ चुप देखि बच्चा सभ बाजल, "बाबी ! राजकुमार एकसरे सुमेरुगढ़ जयताह ? ओहि ठाम हुनकर दुश्मन हुनका पकड़तन्हि नहि ?"

बाबी बजलीह, "आइ राति विशेष भ' गेल अछि । पुनः काल्हि अहाँ सभकेँ एहि विषयमे आगू बुझायब ।"

8.

आइ खिस्सा आठम पड़ाव पर अछि । सब बच्चा बड़ उत्सुक अछि । घरमे एकटा पाहुन आबि गेल छथिन्ह । हुनकहि आव-भगतमे बाबीकेँ कनेक विलम्ब भ' गेलन्हि । बाबी एखन धरि ओछाइन पर नहि आयल छलीह । बच्चा सब आपसमे हल्ला-गुल्ला क' रहल छल । बाबी दूरहिसँ

बजलीह, "हल्ला करब तँ हम खिस्सा नहि सुनायब" । सब बच्चा शान्त भ' गेल । बाबी सेहो हाथ-पयर धो क' आबि गेलीह आ खिस्सा शुरू भेल ।

बहुत दिन धरि राजकुमार सुजीतक कोनो खोज-खबरि नहि पओने सुमेरूगढ़क लोक सब मानि लेने छलैक जे राजकुमार सुजीत आब जीवित नहि छथि । हुनका कोनो जंगली जानवर मारिक' खा गेलन्हि । जँ जीवित रहितय तँ अवश्य अबितथि वा जालिम सिंह हुनको पकड़िक' जहलमे रखने रहितय । कानो-कान ई गप्प सब केओ बुझि गेलै जे राणा साहेब आ रानी सुनंदाकेँ जहलमे द' देल गेल छन्हि । एहि षड्यंत्रमे रानी नयनावती आ सेनानायक शमशेर सिंह सेहो छथि । ओहि ठामक प्रजा जालिम सिंह आ शमशेर सिंहक जुल्मसँ तबाह छल । सभकेँ अपन इज्जति बचायब कठिन छलैक । कतेको गोटे सुमेरुगढ़ नगर छोड़ि जंगलमे आश्रय ल' लेलक । ककरोमे एतेक साहस नहि छलैक जे ओकरा दुनूक विरुद्ध किछु बजैत । ओ सभ प्रजाकेँ कतेको भागमे बाँटि देने छल । बेसी लोक चापलूसीमे रहैत छलैक । अपन इज्जति सबकेँ प्रिय होइत छैक । ओकरे बचयबाक लेल सभ केओ अपन मुँह बन्न रखैत छल । तैओ ककरो ने ककरो जालिम सिंह अपन शिकार बनाइये लैत छल ।

रानी नयनावतीक सब अधिकार छिना गेल छलन्हि । हुनक कोनो गप्प पर केओ काने नहि दैत छलन्हि । जे अधिकार कोनो स्त्रीकेँ पति वा पतिक सम्पत्ति पर होइत छैक, से भाय वा भायक सम्पति पर नहि रहैत छैक । भाय वा नैहरक लेल तँ ओ पराया भ' जाइत अछि । ओना तँ ओ सम्पत्ति रानी नयनेवतीक छलन्हि, मुदा पतिक बिना सब किछु रहितहुँ किछु नहि छलन्हि ।

महात्माजीक कथनानुसार राजकुमार सुजीत अपन नाम आ वेष बदलि क' सुमेरुगढ़ आबि गेलाह । ओ जंगलक कातमे एकटा सुनसान गाछीमे अपन डेरा खसौलन्हि आ धुनी रमाक' रह' लगलाह । चारू भाग शोर भ' गेलैक जे एकटा सिद्ध महात्मा सुमेरुगढ़मे आयल छथि जे सभक भूत, भविष्य आ वर्त्तमान कहैत छथिन । महात्मासँ लोक सभ जे किछु पुछैत छलन्हि तकर-समुचित आ गोल-मटोल उत्तर दैत छलाह । राजकुमारकेँ राजमहलसँ बाहर भेला करीब दस वर्ष भ' गेल छलन्हि । केश-दाढ़ी सब

बढ़ि गेल छलन्हि । अनेक वर्षसँ तेलक दर्शन नहि भेल छलन्हि । विशाल जटा-जूट, खाली पयर, देह पर गेरुआ वस्त्र सेहो मात्र देह झँपबाक उद्देश्यसँ, गप्पमे गम्भीरता जेना पूर्ण परिपक्व होथि । ओ अपना स्वभावसँ ककरो आकर्षित क' लैत छलाह । तेँ ओ कोनो सिद्ध महात्मासँ कम नहि लगैत छलाह । ओ विशेष लोककेँ इएह कहैत छलाह, ''अहाँ बहुत दुःख कटलहुँ । आब अहाँक समय जल्दी घुरत । अहाँक राज्यमे एकटा चतुर आ बहादुर लोक आबि रहल छथि, जे अहाँ सभक दुःख मेटौताह ।'' जे केओ जालिम सिंह आ शमशेर सिंहक विरोधी बुझाइत छलनि तकरा मध्य रात्रिमे बजबैत छलाह आ आगूक कार्यक्रम पर विचार करैत छलाह । ओही क्रममे हुनक भेट भवानीशंकरसँ भेलन्हि । भवानीशंकरक गप्पसँ सुजीतकेँ बुझना गेलन्हि जे ओ पूर्व राजा राणा साहेबक पक्षधर अछि । भवानीशंकर राजकुमारसँ करीब दस वर्ष पैघ छलाह । ओ उचित गप्प ककरो मुँहपर कहबाक लेल प्रख्यात छलाह । राजकुमार अपना बाल्यकालमे भवानीशंकरक साहस देखने छलथिन ।

एक बेरक गप्प अछि । आदिवासी बस्तीमे एकटा युवक जकर नाम छलैक राखाल मुरमुर, ओ खूब बलिष्ठ आ निर्भीक लोक छल । ओकरा कारण ओहि बस्तीमे शमशेरसिंहक किछु नहि चलैत छलैक । शमशेर सिंहक गलत काजक राखाल मुरमुर विरोध करैत रहल । एक दिन शमशेर सिंह ओकरा आरोपी बनाक' राजदरबारमे प्रस्तुत कयलक । ओहिमे भवानीशंकर सेहो उपस्थित छलाह । भवानीशंकरकेँ राखाल मुरमुरसँ कोनो जान-पहचान तँ नहि छलनि मुदा ओ बुझैत छलाह जे एहि घटनामे राखालकेँ जबर्दस्ती आरोपी बनाओल गेल छैक । ओ शमशेर सिंहक विरुद्ध ठाढ़ भेलाह आ राखाल मुरमुरक पक्षमे अपन बयान देलथिन । राणा साहेबकेँ सत्यसँ अवगत करौलनि जखन कि ओहि बैसारमे शमशेर सिंहक विरोध करबाक सामर्थ ककरो नहि छलैक । राणा साहेब भवानीशंकर पर बड़ प्रसन्न भेलाह । यद्यपि एहि प्रकरणसँ शमशेर सिंह अपनाकेँ अपमानित महसूस कयलक मुदा ओहो भवानीशंकर सनक लोकसँ उलझ' नहि चाहैत छल । भवानीशंकर ककरोसँ डेराइत तँ किएक ? ओकरा आगू-पाछू केओ

नहि छलैक जकर केओ अनिष्ट करैत । शमशेर सिंह भीतरे-भीतर तँ अवश्य भवानीशंकर पर कुड़बड़ायल मुदा ऊपरसँ बाजल, "सरकार ! हमरा तँ गुप्तचरसँ इएह जानकारी भेटल छल ।''

भवानीशंकरक गप्प-शप्पसँ राजकुमारकेँ बुझना गेलनि जे जँ एखन चढ़ाइ कयल जाय, तँ ओ ताहू लेल तैयार अछि, मुदा राजकुमार एखन गुप्तचर रूपमे छलाह । ओ एखन प्रकट नहि होम' चाहैत छलाह । एखन तँ हुनका योजना बनयबाक छलन्हि । बिना योजनाक निर्दोष लोकक शोणित बहैत जे ने राजकुमार चाहैत छलाह आ ने हुनका एहेन निर्देश छलन्हि । ओ महात्माजीक निर्देश पर धीरे-धीरे आगू बढ़ि रहल छलाह । ओ अपन किछु बालसखा सभसँ सेहो भेट कयलन्हि आ ओकरा सभकेँ कहलथिन्ह, "अहाँक राजकुमार जीवित छथि, मुदा एकर एखन प्रचार नहि करबाक अछि । आइसँ अहाँ सभक नेता वा मार्गदर्शक भवानीशंकरजी छथि । ओहो जालिम सिंह आ शमशेर सिंहसँ रुष्ट छथि । ओहो सुमेरुगढ़ छोड़ि क' जंगलेमे आबिक' बसि गेल छथि । ओहि जंगलमे कतेको परिवार जे जालिम सिंहसँ त्रस्त अछि, बसि गेल अछि ।

राजकुमारकेँ एक गोटे आर भेटि गेलन्हि, जिनकर नाम छलन्हि बालचंद । बालचंद बजलाह, "सरकार ! अहाँ राजकुमारकेँ एहि ठाम अयबासँ मना करबैन्हि ।''

राजकुमार बजलाह, 'से किएक ?"

बालचंद कहलथिन्ह, "ओ एहि ठाम सुरक्षित नहि रहताह । सेनामे एकहु गोटे हुनक पक्षक नहि बाँचल छथिन । जतेक राज परिवारक अनुयायी छलाह, सभ केओ मारल गेलाह आ किछु जहलमे बन्न छथि । हमर राजकुमार तँ बहुत कोमल छथि । ओ हुनका सभक लग कोना टिकताह ?"

राजकुमार बजलाह, "जे राजकुमार आततायीकेँ पछाड़ि अपन प्रजाक रक्षाक लेल सक्षम नहि होयताह, हुनका राजकुमार कहयबाक कोनो अधिकार नहि छन्हि । अहाँक राजकुमार एतेक कमजोर नहि छथि । तखन कनेक प्रतीक्षाक आवश्यकता छैक ।"

बालचंद बजलाह, "एहि ठाम सम्पूर्ण राज जालिम सिंहक चापलूससँ भरल अछि । ओना तँ प्रजामे प्रचार छैक जे खूब जोर-शोरसँ राजकुमारक तक्काहेरी कयल जा रहल अछि, मुदा सत्य ई अछि जे हुनका मारि क' ई सब निष्कंटक राजा बन' चाहैत अछि ।"

राजकुमार बजलाह, "ककरो सोचने किछु नहि होयतैक । एकरा सभक अंत समय आबि गेल अछि । अपने सभ किछु दिन आर संयमपूर्वक रहिऔक । परिणाम अहीँ सभक अनुकूल होयतैक ।" राजकुमार भवानीशंकरकेँ ओहि ठामक नायक बनाक' राखाल मुरमुरसँ सेहो सम्पर्क करबाक निर्देश देलन्हि आ पुनः तीन दिनक बाद अयबाक भरोसा सेहो ।

भवानीशंकर पुछलथिन्ह, "आब तँ ई स्पष्ट भ' गेल जे अपने कोनो महात्मा नहि, ककरो गुप्तचर थिकहुँ । तखन इहो कहि देल जाय जे अपने के थिकहुँ आ किनकर गुप्तचर थिकहुँ ।' गुप्तचर बनल राजकुमार बजलाह, "हम रामगढ़ राजक गुप्तचर थिकहुँ आ राजकुमारो एखन ओही ठाम कतहु छथि । एहिसँ बेसी हमरो नहि बूझल अछि । हमरा तँ जे संदेश भेटल अछि, हम ताहिपर कार्य क' रहल छी । तखन एकटा सूचना हमरा एखन धरि नहि भेटल अछि ?"

भवानीशंकर पुछलथिन्ह, "कोन सूचना ?"

गुप्तचर बजलाह, "राणा साहेब आ रानी सुनंदा एखन कत' छथि आ कोन स्थितिमे छथि ? रानी नयनावतीक की हाल छन्हि ?"

भवानीशंकर कहलथिन्ह, "राणा साहेब आ रानी सुनंदा एखन कोन स्थितिमे छथि, ई तँ नहि कहि सकैत छी । ओ सब कारागारमे छथि जत'सँ कोनो गप्प नहि बहराइत अछि । ओना प्रजामे ईहो हल्ला अछि जे ओ सभ राजभवनसँ कतहु चल गेल छथि, मुदा ई झूठ-मूठक प्रचार अछि । रानी नयनावतीकेँ अपन करनीक फल भेटि रहल छन्हि । हुनका दुनू बेटीक संग जोर-जबरदस्तीसँ शमशेर सिंह विवाह क' लेलक आ ओ किछु नहि क' सकलीह । करबो करितथि तँ ककरा बलेँ ? जालिमो सिंह शमशेरे सिंहक संग देलक ।"

गुप्तचर बजलाह, "ओना तँ प्रतीक्षाक घड़ी बड़ पैघ होइत छैक, मुदा अहूँ सब सभकेँ जुटाउ । तीन दिन बितैत देरी नहि लगतैक । आब हम राजकुमारक संग आयब ।"

रानी बजलीह, "बाबी ! जखन राजकुमार सब तरहेँ सक्षम छथि । आ हुनका संग देनिहार भेटि गेलन्हि, तखन किएक नहि चढ़ाइ कयलन्हि ?"

बाबी बजलीह, "एखन ओ दूत बनिक' वा गुप्तचर बनिक' सभ वस्तुक जानकारी लेबाक लेल आयल छलाह । आब ओ चढ़ाइ करबाक योजना बनौताह । कोना की कयल जयतैक एहिपर गंभीरतापूर्वक विचार करताह जाहिसँ लोकक कम क्षति होइक । ओ हुनके राज छलन्हि । ओ नहि चाहैत छलाह जे राजक कोनो नुकशान होइक । लोककेँ जल्दीबाजीमे कोनो काज नहि करबाक चाही । योजनाबद्ध तरीकासँ काज कयने ओकर परिणाम नीक भेटैत छैक ।"

रानी पुनः बजलीह, "बाबी ! आब की सुनयबैक ?"

बाबी बजलीह, "बस, आइ एतबहि । काल्हि कल्लू आ महात्माजीक विषयमे सुनायब ।"

9.

कलानाथ राजापुरक एकटा नीक गृहस्थ छलाह । ओ बहुत मेहनती छलाह । मेहनति-मजदूरीसँ अपन आ अपना परिवारक भरण-पोषण करैत छलाह । ओ अपना वृत्तिसँ पूर्ण संतुष्ट छलाह । गाम-घरमे सेहो हुनक बड़ मान्यता छलन्हि । ओ यथासाध्य सभक मदति करैत छलाह । गामक एहन केओ गोटे नहि छलाह जे कलानाथसँ उपकृत नहि होथि । ओ दू गोटेक झगड़ोँ एतेक कुशलतासँ फरिछाबैत छलाह, जे दुनू संतुष्ट भ' क' जाइत छल । हुनक पंचायतक चर्चा अगल-बगलक आनो गाममे होइत छलनि, मुदा सभक समय सभ दिन एक नहि रहैत छैक । होनीकेँ के टारि सकैत अछि ? एहने किछु कलानाथोक संग भेलनि ।

एक बेर भयंकर रौदी भ' गेलैक । उपजा-बाड़ी सेहो नहि

भेलैक । सब केओ कोनो तरहेँ जीवन निर्वाह क' रहल छल । तावत् राजाक सेवक मालगुजारी वसूल करबाक लेल पहुँचि गेलैक । कलानाथ अपन लाचारी देखबैत बजलाह, "जँ समय-साल नीक रहतैक, तँ अगिला साल दुनू वर्षक मालगुजारी अदा क' देब । एहिपर दुनू गोटेमे खूब विवाद भेलन्हि आ ओ राजाक सेवक कलानाथक एकटा बड़द खोलिक' विदा भेल । ओ तँ बुझैत छल जे हम राजाक सेवक छी । हमरा सोझाँके ठाढ़ रहत । ओकरा कलानाथक संग पहिनहुँसँ किछु खार छलैक । ओ एहीमे ओकरो बदला सधाब' चाहैत छल । कलानाथ ओकरा बहुत तरहेँ बुझौलथिन्ह-सुझौलथिन्ह, मुदा ओ मानबाक लेल तैयार नहि भेल । कलानाथ जतेक आहिस्ते-आहिस्ते गप्प करथि, ओ ओतबहि जोर-जोरसँ हिनका दमसा रहल छलन्हि । कलानाथ खूब बलिष्ठ लोक छलाह । ओ ओहन-ओहन कतेको के पछाड़ि सकैत छलाह । हुनका संगे समस्या छलन्हि जे जँ ओ सेवककेँ बड़द छोड़ि दैत छथि, तँ बिना बड़दे खेती कोना करताह । दोसर गप्प एहि ठाम ओ जतेक जतनसँ बड़दक सेवा करैत छथि, से दोसर तँ नहि करतन्हि । राजाक ओहि ठाम तँ बड़द भुखले-पिआसले रहि जायत । नोकर-चाकरकेँ दोसराक बड़दसँ कोन मतलब रहतैक । ओ ओहि सेवककेँ पछाड़िक' अपन बड़द छीनि लेलन्हि । एहि क्रममे सेवककेँ कनेक चोट सेहो लागि गेलैक । ओ खाली हाथ चल गेल आ राजा साहेबकेँ खूब लगा-बझाक' कलानाथक विषयमे कहलक ।

राजा साहेब एकर तहकीकात नहि कयलनि जे एहिमे दोषीके । ओ मात्र सेवककेँ कहलापर कारबाइ कयलनि । दसटा पहलवान गेल आ कलानाथसँ खूब मारि-पीट कयलक । ओकर दुनू बड़द खोलि लेलक । ओकरा घर-दुआरिकेँ तहस-नहस क' देलक । ओकरा एतेक मारि लगलैक, जे ओ उठिक' ठाढ़ नहि भ' सकल । किछु दिनक बाद ओकर मृत्यु भ' गेलैक । ओकरा राजद्रोही घोषित क' देल गेलैक जाहिसँ ओकर दाहो-संस्कार नहि भेलैक ।

अपना ओहि ठाम एकटा किंवदन्ती अछि जे जकर दाह-संस्कार

नहि होइत छैक, ओकर आत्मा भटकैत रहैत छैक । तेँ अपना ओहि ठाम दाह-संस्कारक चलन छैक । जकरा केओ नहि छैक, ओकरो समाजक लोक मिलिक' दाह-संस्कार क' दैत छैक । कलानाथक आत्मा सेहो भटकि रहल छलैक । ओ राजासँ बदला लेबाक लेल छटपटा रहल छल, मुदा आत्माकेँ कोनो हाथ-पयर तँ नहि होइत छैक । ओकरा दोसराक देहक प्रतीक्षा छलैक । ओ जाहि बाटे जाइत छल, ओम्हर आँधी-तूफान सनक दृश्य होम' लगैत छलैक । ओ एम्हर-ओम्हर भटकि रहल छल । अनायास ओ एकटा लाशकेँ देखलक जे दू-तीन दिन पूर्वक छलैक आ कोनो पहलवानक लागि रहल छलैक । ओ ओहिमे प्रवेश क' गेल आ अपन शिकारकेँ तकबामे लागि गेल । तकर बाद शुरू भेल ओकर प्रतिशोध ।

जाहि राजमे ई घटना भेल छल तकरे राजा श्रीधर छलाह आ कलानाथक आत्मा बनल कल्लू । कल्लू चूकि प्रेतात्मा छल । तेँ ओ वेष बदल'मे माहिर छल । कल्लू राजा श्रीधरक ओहि ठाम वेष बदलिक' गेल आ बाजल, "सरकार ! हम बड़ गरीब लोक छी । हम चारि दिनक भूखल छी । हमरा कोनो काज करबाक लेल राखि लेल जाय ।"

श्रीधर पुछलथिन्ह, "तोँ के थिकह आ कत' रहैत छह ?"

कल्लू बाजल, "सरकार ! हमर नाम थिक कल्लू आ हम माधोपुरमे रहैत छी ।"

श्रीधर बजलाह, "माधोपुर तँ बहुत दूर अछि ? एतेक दूरसँ तोँ कोना अयलह ? ओहि बाटमे तोरा केओ कोनो काज नहि देलकह ?"

कल्लू बाजल, "जी नहि सरकार ! हमरा केओ कोनो काज नहि दैत अछि । कतेक ठाम काज कयलहुँ । दू-चारि दिन खटाक' भगा दैत अछि । बोइनो नहि दैत अछि । तखन अपनेक नाम सुनिक' एहि ठाम आयल छी ।" ई माधोपुर ओएह थीक, जाहि ठाम कलानाथक संग घटना घटित भेल छलैक, मुदा राजा श्रीधरकेँ एकर ध्यान नहि छलन्हि । ओ तँ राजा छलाह आ एहन-एहन कतेको काण्ड करौने होयताह । ओ कतेक मन रखताह । मुदा कल्लूक संग तँ घटित भेल छलैक । ओकरा सब किछु

मोन छलैक । राजा श्रीधर ओकर आर्तनादसँ द्रवित भ' ओकरा अपन सेवकक रूपमे राखि लेलन्हि । किछु दिनक बाद कल्लू ओहि ठाम अपन आधिपत्य जमौलक आ राजा श्रीधरकेँ मारि-पीटिक' सबटा राज-पाट हड़पि लेलकनि । लोक तँ बुझैत अछि जे राजा श्रीधर कल्लूक हाथे मारल गेलाह, मुदा राजा श्रीधर भागिक' जंगलमे आबि गेलाह । पहिने कतेको दिन धरि अपन उपचार करौलन्हि । जखन ओ स्वस्थ्य भ' गेलाह, तखन कल्लूसँ बदला लेबाक लेल घोर तपस्या कयलनि ।

शीला पुछलकन्हि, "बाबी यै ! ई तपस्या की थिकैक, ई कोना कयल जाइत छैक आ एहिसँ की भेटैत छैक ?"

बाबी बजलीह, "तपस्या आराधना करब थिकैक । जे केओ जाहि इष्टसँ फलप्राप्ति चाहैत छथि, हुनकर आराधना करैत छथि । ई अन्न-जलकेँ त्यागि एकाग्रचित्तसँ कयल जाइत छैक । जखन अहाँक आराधनासँ इष्ट-प्रसन्न होयताह तखन मन इच्छित वरदान भेटत जेना राजा भगीरथ माँ गंगाकेँ प्रसन्न क' धरती पर उतारलन्हि, ध्रुव भगवानक परम पद पओलन्हि । माता पारवती पुनः वर रूपमे देवाधिदेव महादेवकेँ पओलन्हि, एहन कतेको दृष्टान्त अछि मुदा हमरा आब ओतेक मन नहि रहैत अछि । आब एहि वयसमे जएह मोन रहैत अछि, बहुत भेलैक ।"

राजा श्रीधर जखन बारह वर्ष धरि तपस्या कयलन्हि, तखन देवी प्रसन्न भेलीह आ प्रकट भ' क' बजलीह, "राजन् ! अहाँ की चाहैत छी ?"

श्रीधर बजलाह, "हम शत्रु पर विजय चाहैत छी ।"

देवी बजलीह, "अहाँक शत्रु के अछि ?"

श्रीधर बजलाह, "हमर शत्रु कल्लू राक्षस अछि । ओ धोखासँ हमरा ओहि ठाम आबि गेल आ हमरा मारि-पीटिक' भगा देलक । हम ओकरासँ बदला लेब' चाहैत छी ।"

देवी बजलीह, "ई बदला कतेक दिन चलतैक ? एकर अंत कोना होयतैक ?"

श्रीधर बजलाह, "हम एकर अभिप्राय नहि बूझल ?"

देवी बजलीह, ''आइ अहाँ बदला लेबैक, काल्हि ओ लेत, फेर अहाँ... फेर ओ... ई कतेक दिन चलतैक ?''

श्रीधर बजलाह, "ओ हमरा संगे बहुत अनर्गल कयने अछि । ओकरा हम गरीब, असहाय बुझिक' शरण देलियैक आ ओ हमरे मारिक' भगा देलक । जँ हम भगितहुँ नहि तँ प्राणो बाँचब कठिन छल ।''

देवी बजलीह, ''ओ अहाँक संग अनर्गल कयने छल मुदा अहाँ ओकरा संगे की कयने छलियैक ? ओ अहाँक अपराधी नहि अछि । ओकर अपराधी अहाँ छलियैक । अहाँक सेवक अहाँकेँ गलत जानकारी देलक । वस्तुस्थिति किछु आर छलैक । अहाँ ओकरा कथनक पुष्टि नहि कयलहुँ आ अकारण ओकरा दण्डित कयलहुँ । ओकर सम्पूर्ण परिवार बिखड़ि गेलैक ।''

श्रीधर बजलाह, "तखन हमर तपस्या निष्फल जायत ?"

देवी बजलीह, "नहि कथमपि नहि । अहाँक तपस्या निष्फल नहि जायत । आइ धरि ककरो तपस्या निष्फल गेलैक अछि की ? ओकर अंत अवश्य होयतैक । किएक तँ सभक अंत होयब निश्चित अछि । इएह विधिक विधान सेहो थीक । ओहो बहुत पाप कयलक । ओकरो आत्मा कतेक दिन धरि भटकैत रहतैक । तखन ई काज अहाँक हाथे नहि होयत ?"

श्रीधर बजलाह, "तखन कोना होयत ?"

देवी बजलीह, "अहाँकेँ प्रतीक्षा कर' पड़त । आइसँ बीस वर्षक बाद सुमेरुगढ़मे एकटा राजकुमारक जन्म होयतैक । सात-आठ वर्षक आयुमे घरेलू विवादक कारणे ओकरा जंगलमे आनल जायत । ओहि ठामक षड्यंत्रकारी सभ ओकरा मारबाक प्रयास करतैक । अहाँके ओतहिसँ ओकरा बचाक' अनबाक अछि आ ओकर मार्गदर्शक बनि हमरा ओहि ठाम पठयबाक अछि । ओकरहिसँ अहाँक इच्छा पूर्ण होयत । ओएह कल्लूक अन्त करत । पहिने ओ एहि ठाम आबि एहि सरोवरक स्वर्ण-कमलसँ पूजा करत । तदुपरान्त ओकरा एकटा कवच प्रदान कयल जयतैक जे

अभेद्य होयतैक । ओहि कवचक सहयोगसँ कल्लू राक्षस मारल जायत । तखन इहो ध्यान राखब आवश्यक छैक जे ओ कोनो अस्त्र-शस्त्रसँ नहि मरत । जेँ ल' क' ओकरा मृत्युक उपरान्त जराओल नहि गेलैक, तेँ ओ मात्र आगिसँ डेराइत अछि । ओकरा घेरबाक लेल ओकरा-चारुकात आगिक घेरा होयबाक चाही । तखन ओ भागि नहि सकैत अछि आ ने ओकर कोनो प्रभावे रहतैक । एक बेर जँ ओ भागि जायत तँ पुनः बहुत दिन धरि हाथ नहि लागत । ओकर बाद देहमे आगि लगौने ओ ई देह छोड़ि सदाक लेल मुक्त भ' जायत ।"

राहुल बाजल, "बाबी ! ई तँ बड़ कठिन काज छैक । राजकुमार कोना क' कल्लूकेँ आगिक घेरामे घेरताह । ओ कल्लू की चुपचाप बैसले रहतैक ?"

बाबी बजलीह, "युक्तिसँ पैघसँ पैघ काज सुलभ भ' जाइत छैक आ साहसी लोकक लेल कोनो काज कठिन नहि होइत छैक । भगवान राम तँ बाल्येकालमे ताड़का, सुबाहुकेँ मारि मुनि विश्वामित्रक यज्ञक रक्षा कयने छलाह । ताड़का, सुबाहु बहुत बलशाली छलैक । कतेको मुनि-महात्माकेँ मारिक' खा' गेलैक मुदा राम आ लक्ष्मण ओकरा अपना युक्ति आ साहस सँ परास्त कयलन्हि ।

10.

राहुल पुछलकन्हि, ''बाबी ! आइ की सुनायब ?"

बाबी बजलीह, "आइ राजकुमारक सुमेरुगढ़मे प्रवेश आ अपहृत बालिका सभक उद्धारक खिस्सा सुनायब । आइ खिस्सा अपन अन्तिम पड़ाव पर अछि, तेँ अहाँ सब ध्यानसँ सुनब ।

एकटा जटाजूटधारी आगन्तुक रामगढ़ रज्यक मुख्य द्वारिपर आबि सेवकसँ बाजल, "हम एहि ठामक राजा सर-सुल्तानसँ भेट कर' चाहैत छी ?"

सेवक बाजल "सरकार ! अपने के थिकहुँ आ कत'सँ आयल छी । भेटक की प्रयोजन छैक ?"

राजकुमार सुजीत अपन पूर्ण परिचय देलन्हि । सेवक जा क' सुल्तानकेँ कहलक, "जहाँपनाह ! एकटा युवक जे देखबा-सुनबामे कोनो महात्मा सनक लागि रहल छथि, वयस करीब सत्रह-अठारह वर्षक होयतन्हि, गेरुआ वस्त्र पहिरने छथि, केश-दाढ़ी सब बढ़ल छन्हि, पयरमे चप्पल-जूता किछु नहि छन्हि, अपन नाम सुमेरुगढ़क राजकुमार सुजीत कहि रहल छथि आ अपनेसँ भेटक इच्छुक छथि ।"

संवाद सुनि सुल्तान अति प्रसन्न भेलाह जेना ओहो हुनके प्रतीक्षा क' रहल होथि । ओ तुरंत सेवककेँ आदेश देलथिन्ह जे जल्दीसँ हुनका दरबारमे लाबह ।

किछु क्षण पश्चात् राजकुमार सुजीत दरबारमे उपस्थित भेला आ सर-सुल्तानकेँ अभिवादन कयलन्हि । सर-सुल्तान सेहो हुनका अभिवादनक उत्तर अपना हिसाबसँ देलथिन्ह । केश-दाढ़ी बढ़ि गेलासँ हुनका चीन्हब कठिन छल । जखन सुमेरुगढ़क लोक नहि चिन्हलकनि तँ सुल्तान कोना चिन्हितथिन । ओ एकर जाँच करबाक लेल जे ई वास्तविक राजकुमार छथि वा नहि, बजलाह, "अहाँकेँ बूझल अछि कि नहि जे सुमेरुगढ़मे एखन जालिम सिंह शासन क' रहल अछि । राणा साहेब आ रानी सुनंदा जहलमे बन्न छथि । राजकुमार सुजीतकेँ तँ कहिआ ने जंगली जानवर अपन ग्रास बनौलक । ओ जीवित कहाँ छथि ? तखन अपने एहन मजाक किएक कयलहुँ ? अपनेकेँ पता अछि जे एकर सजा की भ' सकैत अछि ?"

राजकुमार बजलाह, "राजकुमार सुजीत मारल गेलाह, तकर अपने लगमे की प्रमाण अछि ?"

सुल्तान बजलाह, "ई तँ सौंसे सुमेरुगढ़मे शोर अछि । जँ ओ जीबैत छथि, तँ एकर अहाँ लगमे की प्रमाण अछि ?"

राजकुमार सुजीत बजलाह, ''अपने जाहि सुजीतक विषयमे कहि रहल छी, हम से सुजीत नहि छी । हम तँ ओ सुजीत छी जे तीन वर्ष धरि अहाँक संरक्षणमे अहीँक जहलमे बन्न छलहुँ ।"

एतेक सुनैत देरी सुल्तान राजकुमारकेँ अपना हृदयसँ लगा लेलन्हि

आ खूब आव-भगत कयलथिन्ह । पुनः सुल्तान पुछलथिन्ह, "एतेक दिन धरि अहाँ कत' छलहुँ ?"

राजकुमार सुल्तानकेँ सब वृत्तान्त सविस्तर सुनौलन्हि आ अगिला कार्यक्रमपर विचार-विमर्श शुरू भेल । सुल्तान पुछलथिन्ह, "तखन अपने की चाहैत छी ?"

राजकुमार सुजीत महात्माजीक निर्देशानुसार बजलाह, "अपने हमरा बाबूजीक घनिष्ठ मित्र छियैन्हि । तेँ हम चाहैत छी जे ई मित्रता पहिने समबन्धमे बदलि जाय ।"

राजकुमार सुजीत जखन रामगढ़क जहलमे छलाह, तँ एकर भनक रानी आवेदा खातून आ राजकुमारी जावेदाकेँ सेहो लागल छलन्हि । ओ सब जहलमे जा क' राजकुमारक भेट कर' चाहैत छलीह किएक तँ एहेन चर्चा घरमे पहिनहुँ होइत रहैत छलैक जे जावेदाक विवाह राजकुमार सुजीतसँ कराओल जयबाक चाही । ई मजाकमे कहल जाइत छलैक वा वास्तवमे, से कहब कठिन अछि । तखन भ' सकैत छैक जे सुल्तानमे आ राणा साहेबमे सेहो एहन गप्प होइत हो । तेँ भितरे-भीतर राजकुमारी जावेदा राजकुमार सुजीतसँ प्रेम कर' लागल छलीह । आब तँ ओ एहि वयसमे आबि गेल छलीह, जत' प्रेमक मतलब दम्पति बनब होइत छैक । पता नहि हुनका प्रतिये राजकुमार सुजीतक की सोच छलन्हि । राजकुमारी जावेदा राजकुमार सुजीतसँ भेट करबाक लेल छटपटा रहल छलीह । ओ बड़ प्रयास कयलन्हि मुदा सुल्तान तकर अनुमति नहि देलथिन्ह, एहि लेल जे एखन भेट कयलासँ रहस्य पर सँ पर्दा उठि सकैत छलैक । ओना तँ जे होयबाक छलैक से होयबे करितैक मुदा भेद खुजि गेलासँ राजकुमारक संगे सुल्तानोक कठिनता बढ़ि सकैत छलनि । तेँ ओ कठोरतापूर्वक राजकुमारी जावेदाकेँ एहि भेटसँ मना कयने छलथिन्ह । कारागारसँ विदा लेलाक बाद किछु क्षणक लेल राजकुमारक भेट जावेदा आ आवेदा खातूनसँ भेल छलन्हि मुदा किछु गप्प-शप्प नहि भ' सकल छलन्हि । मात्र सजल आँखिसँ जे बुझबामे आयल होन्हि । राजकुमारक प्रश्नक उत्तरमे सुल्तान बजलाह, "जँ एहेन नहि भ' सकए, तखन...."

सुजीत विनम्रभावेँ उत्तर देलथिन्ह, "ई तँ मात्र हमर प्रस्ताव अछि । मानब वा नहि मानब तँ अहाँ पर निर्भर करैत अछि । हम एहि लेल अपनेकेँ बाध्य नहि क' सकैत छी ।"

सुल्तानो तँ चाहैत छलाह जे ई मित्रता सम्बन्धक रूप ल' लिअए मुदा ओ राजकुमारक मन टोबि रहल छलाह, हुनकर परिपक्वताक जाँच क' रहल छलाह । ओ हँसैत-हँसैत बजलाह, "ठीक छै, ई प्रस्ताव हमरा मान्य अछि । तकर बाद की कयल जयतैक । अपनेक आगूक की योजना अछि ?"

राजकुमार बजलाह, "अपने एहि सम्बन्धक घोषणा सौंसे राज्यमे करबा दिऔक ।"

सुल्तान कहलथिन्ह, "तखन तँ एखनहि सुमेरुगढ़क सब सेना रामगढ़पर आक्रमण क' देत आ हमरा बिना पड़यने कल्याणो नहि होयत ।"

राजकुमार बजलाह, "एहन किछु नहि होयतैक । एतेक अवसरे ओकरा नहि भेटतैक जे ओ अहाँक राज्यपर चढ़ाइ करत । विवाहोपरान्त राजकुमार सुजीत आ रानी जावेदाक डोली एहि ठामसँ सुमेरुगढ़क लेल विदा होयत, मुदा ओहि डोलीमे ने राजकुमार रहतैक आ ने रानी जावेदा । ओ डोली बम-बारूदसँ भरल रहतैक । हमरा संगे अपनेक मात्र दसटा सिपाही रहत जे केवल अपन प्राणक रक्षा करत आ ई देखाओत जे एहि डोलीमे वास्तवमे रानी जावेदा आ राजकुमार सुजीत छथि । ओ सब सिंह द्वारि पर जा' क' डोली राखि देत आ दूर हटि जायत । संगहि नारा लगाओत "राजकुमार सुजीत-जिंदाबाद", एहि लेल जे सुमेरुगढ़मे जालिम सिंह आ शमशेर सिंहक जे केओ विरोधी लोक छथि, ओ सब सजग भ' जाथि । ओ सब हमर प्रतीक्षा क' रहल छथि । ओ सब हमर संग लागि जयताह ।"

सुल्तान बजलाह, "ई कार्य जावेदाक विवाहक पूर्वो तँ भ' सकैत छैक । जालिम सिंह आ शमशेर सिंह अहाँकेँ आपस नहि आब' देत । हमरा बेटीकेँ अहाँ एखनहि विधवा बनब' चहैत छी ?"

राजकुमार कहलथिन्ह, "हम एखन विवाह नहि क' रहल छी, आ ने कर' चाहैत छी । यावत् माँ-बाबूजी जहलमे छथि, तावत् ई सम्भवो

नहि अछि । दुश्मनकेँ झाँसा देबाक लेल केवल घोषणा करबाक आग्रह क' रहल छी ।"

सुल्तान बजलाह, "हमरा ई गप्प नीक नहि बुझा रहल अछि । कोनो दोसर उपाय सोचल जाय ।"

राजकुमार कहलथिन्ह, "अपने संतान-मोहक त्याग करू । वीर पुरुष अपना देशक लेल, अपना हाथसँ अपना स्वजनक बलिदान कयने छथि । इतिहास एकर साक्षी अछि । जावेदा कहिओ विधवा नहि भ' सकैत छथि, ई हमर गुरुदेवक वचन अछि । हम हुनकहि कथनानुसार अपनेक समक्ष ई प्रस्ताव रखने छलहुँ, अन्यथा जकर माय-बाप जहलमे रहतैक, तकर बेटा विवाह रचायत । एहिसँ निकृष्ट काज आर की भ' सकैत छैक । दोसर गप्प हमरा शक्तिक अंदाज अपनेकेँ नहि अछि । हम एकसरो विजय प्राप्त क' सकैत छी मुदा हम नहि चाहैत छी जे अकारण निर्दोष लोकक शोणित बहए । अपने जँ हमर परीक्षा लेब चाहैत छी, तँ दसटा सिपाहीकेँ बजाओल जाय, जे हमरासँ युद्ध करत ।

राजकुमारक अनुरोध पर आ सुल्तानक मनक डरकेँ खतम करबाक उद्देश्यसँ दसटा बीछल सिपाहीकेँ राजकुमारसँ युद्ध करबाक लेल बजाओल गेलैक । ओ दसो सिपाही घायल भ' गेल, थाकि गेल मुदा राजकुमारक देह पर माँ कालीक कवचक कृपासँ ने थकाने भेल आ ने कतहु खरोंचे लागल । से देखि सुल्तान आश्चर्यचकित रहि गेलाह आ जहिना राजकुमार कहने छलाह, तहिना कयलन्हि ।

दूटा डोली सजाक' ओहिमे गोला-बारूद राखि देल गेलैक । चारिटा कहार डोली उठौलक आ सुमेरुगढ़क लेल विदा भेल । डोलीक आगाँ स्वयं राजकुमार सुजीत गुप्तचरबला वेषमे आ पाछाँ-पाछाँ घोड़ा चढ़ि सबटा सिपाही । सिपाही सभ नारा लगा रहल छलैक, "राजकुमार सुजीत- जिन्दाबाद, जिन्दाबाद ।" बाटेमे भवानीशंकर अपन दल-बल सहित सिपाहीक झुण्डमे शामिल भ' गेलाह । सौंसे नगरमे शोर भ' गेलैक जे राजकुमार सुजीत बारह वर्ष पर विवाह क' क' कनियाँक संग आबि

रहल छथि । सब केओ राजकुमारकेँ देखबाक लेल उत्सुक छल मुदा देखैत कोना ? ओ बहरयताह तखन ने । डोली मुख्य द्वार लग राखि देल गेलैक आ सब केओ धीरे-धीरे डोलीसँ दूर भ' ओएह नारा लगाब' लागल । महलसँ जतेक सेना आयल सब डोलीक चारू भाग जमा भ' गेल । तावत् जालिम सिंह आ शमशेर सिंहकेँ सेहो पता लगलैक जे राजकुमार सुजीत रामगढ़क राजकुमारीसँ विवाह क' क' आयल अछि । ओहो सब तँ एही ताकमे छल । ओ दुनू आबि जखन महफाक ओहार हटौलक, दूटा विस्फोट भेलैक । दुनूक देहक चेथरा-चेथरा उड़ि गेलैक । ओकर किछु सिपाही सेहो घायल भेलैक । ई सब कोना भेलैक, के कयलक, केओ नहि बुझलक । बड़का भगदड़ मचि गेलैक । सब केओ यत्र-तत्र भागब' शुरू क' देलक । सभकेँ अंदेशा भेलैक जे महफामे आयल राजकुमार आ हुनकर कनियाँ खतम भ' गेलीह । तखन गुप्तचर रूपी महात्मा बजलाह, "अहाँ सब शांत रहू । हमहीँ अहाँक राजकुमार सुजीत थिकहुँ आ अहाँक राजा राणा साहेब आ रानी सुनंदा जहलमे छथि । ई दुनू दुष्ट मिलिक' सबटा कुचक्र रचलक ।

भवानीशंकर पुछलकनि, "ओहि महफामे के छल ?"

राजकुमार कहलथिन्ह, "ओ महफा खाली छलैक । ओहिमे जालिम सिंह आ शमशेर सिंहक काल छलैक, जे ओकरा गीड़ि गेलैक । सब केओ गेल आ राणा साहेब आ रानी सुनंदाकेँ जहलसँ बहार कयलक । जतेक सिपाही जहलमे छलैक, सबकेँ बहार कयल गेल । ओ सब राणा साहेबक खास छलथिन्ह, तेँ ओकरा सभकेँ शमशेर सिंह जहलमे देने छलैक । पुनः राणा साहेब राजकुमार सुजीतकेँ गला लगौलन्हि आ राज सिंहासन पर बैसलाह । राजकुमार सुजीत अपन गुप्तवासक विषयमे विस्तारसँ राणा साहेबकेँ कहलथिन्ह आ हुनकासँ अनुमति ल' क' किछु गाड़ी, घोड़ाक इन्तजाम कयलन्हि । संगमे किछु सिपाही सेहो लेलन्हि । राजकुमार सबकेँ ल' क' श्रीधरपुर कल्लूक किला लग अयलाह । ओहि ठाम ओ स्त्री सब राजकुमारक प्रतीक्षा क' रहल छलीह । सब किलासँ बाहरक दुनियाँ देखबाक लेल उताहुल छलीह । सभकेँ

उपयुक्त गाड़ी पर बैसाक' सुमेरुगढ़ आनल गेलनि । ओहि किलाक तहखानामे अनगिनत स्वर्णमुद्रा, रत्न, हीरा, माणिक आ जवाहरात छलैक । राजकुमार सब किछु विशाखाक आज्ञासँ ल' अनलनि । विशाखा ओएह छलीह जे किलामे राजकुमारकेँ सबसँ पहिने भेटल छलथिन आ प्राणरक्षाक लेल भागि जयबाक आग्रह कयने छलथिन । ओहि किलाक स्वामिनी विशाखा बनाओल गेलीह । राजकुमार विशाखाकेँ माँजी कहैत छलाह आ विशाखा सेहो हुनका पुत्रवते मानैत छलथिन । आइ जँ हुनकर विवाह भेल रहितनि वा वैवाहिक जीवन बितौने रहितथि, तँ अवश्ये राजकुमारक वयस केर हुनका पौत्र रहितनि, मुदा शुरू राजकुमारे माँजीसँ कयने रहथि, तेँ ओ हुनका अपन पुत्र बुझ' लगलीह । एहिमे हुनकर कोनो स्वार्थ नहि छलन्हि । ओ तँ राजकुमार सनक पुत्र पाबि धन्य भ' गेलीह । ओहि किलाक स्वामिनी होयबाक कारणेँ बिना विशाखासँ पुछने आब ओहि ठामक कोनो काज नहि होइत छलैक ।

एहि तरहेँ राजकुमार ओहि ठामसँ अपार सम्पत्ति ल' क' सुमेरु गढ़ चलि अयलाह आ ओहि ठाम किलाक रक्षाक लेल किछु सिपाहीकेँ छोड़ि देलन्हि । ओ बाट जे वर्षोंसँ कल्लूक डरे बन्न छल, चालू भ' गेल । ओहि ठामक जे स्त्री विवाहक लेल इच्छुक छलीह, हुनका उपयुक्त व्यक्तिसँ विवाह कराबैत किछु धन सेहो दऽ देल गेलनि जाहिसँ ओ लोकनि सुखपूर्वक जीवन व्यतीत क' सकथि । करीब पाँच सय कन्याक कन्यादान राणा साहेब अपना हाथसँ कयलन्हि । शेष जे विवाहक प्रति अनिच्छुक वा ओहि योग्य नहि रहथि, ओ सब सुमेरुगढ़मे एकटा धर्मशालामे रहि अपन जीवन बितायब स्वीकार कयलनि । हुनका सभक लेल खूब सुन्दर मंदिर, पोखरि आ धर्मशालाक निर्माण कराओल गेल । विशाखा राज परिवारमे रहि गेलीह,

ओहिना जेना कोनो गाय अपन बाछाक संग करैत अछि । ओही अवसर पर रानी नयनावती सेहो आबि गेलीह । ओ राणा साहेब आ रानी सुनंदाक पयर पर खसि पड़लीह आ अपन गलतीक लेल क्षमायाचना कयलन्हि । ओ राजकुमारक पयर पर सेहो खस' चाहैत छलीह मुदा राजकुमार हुनका दुनू हाथे उठाक' गला लगा लेलथिन्ह आ कहलथिन्ह, "माँ ! एतेक जुलुम जुनि करू । अहाँ हमर पूज्या थिकहुँ । अहींक आशीर्वादसँ हम एतेक पैघ सफर तय कयल अछि । जे दुष्ट छलैक, हमरा राजक दुश्मन छलैक, स्वतः ओकर नाश भ' गेलैक । अहाँ हमरा लेल महारानी कैकेयी सनक माय भेलहुँ जे अपने अपयश ल' क' पुत्रक भविष्यकेँ बनौलनि । अहाँ हमर अपराधी नहि, मार्गदर्शक छी । महारानी कैकयी रामकेँ वनवास पठाक' रावणक अन्त करबामे सहायक भेलीह । आइ अहींक कारणे नौ सय नारीक उद्धार भेलैक अछि आ हमर बाबूजी एक आसन पर बैसि लगभग पाँच सय कन्यादान कयलन्हि अछि । आइ हमर राज आर्थिक रूपेँ पहिनहुँसँ बेसी समृद्ध भ' गेल अछि । राजा श्रीधरक जमा कयल खजाना आ कल्लूक जमा कयल जेवर-जेवरात सब बिना कोनो प्रयासक हमरा सभकेँ भेटि गेल । सबसँ बेशी खुशीक गप्प जे हमरा देवी विशाखा सनक माय सेहो भेटलीह । तावत् कमला आ विमला सेहो आबि गेलीह । हुनका दुनूक स्थिति आ वेश-भूषा एक भिखमङनीसँ बदतर लागि रहल छलनि । ओ दुनू राणा साहेब, रानी सुनंदा आ राजकुमार सुजीतक चरणमे खसलीह । हुनका सभक मोनमे हिनका सभक प्रति अश्रद्धा जगाओल जाइत छलन्हि । ओ सब हिनका लोकनिसँ घृणा करैत छलीह । जकरा पर विश्वास कयलनि, ओकर प्रतिफल तँ भोगिये चुकल छलीह । आब सब किछु बुझबामे आबि गेलन्हि,

ओ महात्मा एहि अवसरपर गगनसँ पुष्पवृष्टि क' रहल छथि आ राजकुमार सुजीतकेँ सुराज स्थापित करबाक लेल शुभकामना द' रहल छथि ।

बाबी पुनः बजलीह, ''अच्छे, ई कहू जे ई खिस्सा अहाँ सभकेँ केहन लागल आ एहिसँ की सिखलहुँ ?"

सब बच्चा बाजल, "ई खिस्सा बड़ नीक लागल ।''

राहुल बजलाह, "लोककेँ संतोष करबाक चाही लोभ नहि । आइ लोभेक कारण रानी नयनावतीक दुर्दशा भेलन्हि । बहादुर आ साहसी लोकक कीर्ति राजकुमार सुजीत जकाँ चारू दिश पसरिए जाइत छैक ।''



श्री नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'



जन्म	:	2 जनवरी, 1950
जन्म स्थान	:	भैरव बलिया (मातृक)
पिता	:	स्व. बैद्यनाथ मिश्र सरल चित्त, साधु स्वभाव, उदारमना एवं धर्मपरायण
माता	:	स्व. गोसाउनि देवी करुणामयी, सहृदया एवं धर्मपरायणा
पत्राचारक पता	:	ग्राम एवं पत्रा. उफरदाहा, थाना- बहेड़ा, जिला- दरभंगा (बिहार) 847233
शिक्षा	:	स्नातक कला, संगीत प्रभाकर
वृत्ति	:	लेखापाल, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड (अवकाश प्राप्त)
रुचि	:	गीत-संगीत, मैथिली कथा आ कविताक माध्यमे सामाजिक कुरीति आ राजनीति पर व्यंग्य रचना
प्रकाशित पोथी	:	विधात्री - (गीत एवं कविता संग्रह) 2004 गामघर - (कथा संग्रह) 2005 सुजाता - (उपन्यास) 2006 महारानी कैकेयी - (प्रवचनात्मक निबंध) 2008 गुदड़ीक लाल - उपन्यास) 2008 अनठिया कुकुर - (उपन्यास) 2011 सुन्दरकाण्ड - (सम्पादन) 2015 आडम्बर - (कथा संग्रह) 2017 दिल्लीक पार्क - (शब्दचित्र) 2018 सुकन्या - (उपन्यास) 2019
उपाधि	:	'कवि शिरोमणि' (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ; भागलपुर, बिहार)
	:	'अंग प्रदेश-साहित्य-साधना सम्मान' (राजा राम मोहन राय स्मृति मंच, भागलपुर)
	:	'मैथिली पराग' (उधाडीह, अजगैवीनाथ धाम, सुल्तानगंज, भागलपुर)
	:	वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान-2010 (मिथिला परिषद्, भागलपुर)।
सम्पर्क	:	08986261756